गीता मैत्री

पंचवर्षपूर्ति विशेषांक



संत वाणी

॥ श्री गणेशाय नमः॥

वॉलंटियर प्रशिक्षण मॉडल

The Practice app:
practice.learngeeta.com

गीता ज्ञान से आत्मपरिवर्तन की ओर एक राष्ट्रव्यापी...

अंक 9

जनवरी से जून २०२५

गीता मैत्री

इस अंक में

अंक ९ · जनवरी से जून २०२५
४१ रचनाएँ · १५२ पृष्ठ

01 हमारे पथप्रदर्शक

संत वाणी ५
जीवन विजय के मंत्र ७
सम्पादकीय: सनातन धर्मघोष – लर्नगीता का पंचवर्षीय विश्व अभियान ९
सर्वभूतहितप्रदीपिका, अद्वैतामृतवर्षिणी गीता ११
आशीर्वचन १३
गीता परिवार (Learn Geeta) के पथ का लक्ष्य २१
मामनुस्मर युध्य च २३
वन्दे मातरम् ! २६

02 इतिहास और विकास (2020–2025)

॥ श्री गणेशाय नमः॥ ३०
Marking a Milestone ३३

03 संस्थागत संरचना

वॉलंटियर प्रशिक्षण मॉडल ३७
गीता निर्माण उपक्रम – आओ, गीता-सेवी बनें ४०
पाठ्यक्रम व परीक्षायें ४२
Literature- Launch and Publications of Learn Geeta books ४४
वैचारिक विवेचन सत्र ४६
साधक से गीताप्रेमी तक ४९
GEETĀ VICAKṢAṆA: A New Milestone in the LearnGeeta Journey ५५
महाकुम्भ में महाप्रचार ५७
गीता मैत्री मिलन ६१
बाल संस्कार से राष्ट्र निर्माण: गीता परिवार का अटूट संकल्प और सेवा का दिव्य प्रकाश ७२
Panchavarshapoorti Samaroha Story... ..... ७४
In Divine Code: The Story of the LearnGeeta App ७६
गीता परिवार के अंचल अनुसार कार्यकर्ता शिविर संपन्न ७८
गीता चिंतनिका सत्र : गीता पठन-चिंतन की अनवरत साधना ८०
संपूर्ण गीता पारायण – साधना का महायज्ञ ! ८२
नीति, प्रबंधन और स्वभाव : जीवन में गीता संस्कृति का विकास ८४

04 शैक्षणिक योगदान

The Practice app: practice.learngeeta.com ८८

05 सेवा और संगठन

गीता ज्ञान से आत्मपरिवर्तन की ओर एक राष्ट्रव्यापी प्रयास ९१

06 विशेष अनुभाग

Local to Global ९५

Zoom Help line and Helpdesk सेवा ९८

GeetaVrati & Geeta Vichakshan Recipients १०१

07 भाव एक भाषा अनेक

भाव एक भाषा अनेक १११

08 संतश्रेष्ठ ज्ञानेश्वर

संतश्रेष्ठ ज्ञानेश्वर महाराज १३९

09 रचनात्मक पेज

रामायण प्रश्नावली १४५

भगवद्गीता प्रश्नावली: १४६

Drag the words into boxes – 1 ..... १४७

Drag the words into boxes – 2 ..... १४८

Find in Image – 1 ..... १४९

Identify Exams conducted by LearnGeeta १५०

Search Words – 1 ..... १५१

Search Words – 2 ..... १५२

01

हमारे पथप्रदर्शक

संत वाणी पृष्ठ ५

जीवन विजय के मंत्र पृष्ठ ७

सम्पादकीय: सनातन धर्मघोष – लर्नगीता का पंचवर्षीय विश्व अभियान पृष्ठ ९

सर्वभूतहितप्रदीपिका, अद्वैतामृतवर्षिणी गीता पृष्ठ ११

आशीर्वचन पृष्ठ १३

गीता परिवार (Learn Geeta) के पथ का लक्ष्य पृष्ठ २१

मामनुस्मर युध्य च पृष्ठ २३

वन्दे मातरम् ! पृष्ठ २६

01

०१ हमारे पथप्रदर्शक

संत वाणी

आज अंतःकरण अत्यंत आनंद से भरा हुआ है। 22 जून के दिन लखनपुरी में गीता परिवार के LearnGeeta.com के माध्यम से एक अत्यंत भव्य महोत्सव मनाया जा रहा है। आश्चर्य होता है कि भगवान श्रीकृष्ण ने कितना अद्भुत कार्य हम सबके माध्यम से करवा लिया है।

परम पूज्य स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरिजी महाराज ५ मिनट पठन · १ चित्र

संस्थापक अध्यक्ष, गीता परिवार

जब कोविड एक आपदा के रूप में समूचे देश और विश्व पर छा गया था, तब गीता परिवार के कार्यकर्ताओं ने इस आपदा को अवसर में परिवर्तित किया। उन्होंने लगन, निष्ठा और एकाग्रता के साथ कार्य करते हुए वह कर दिखाया, जो सामान्यतः असंभव प्रतीत होता है—और इस सेवा पर भगवान की कृपा भी निरंतर बरसती रही।

ऐसा प्रतीत होता है कि गीता के 11वें अध्याय में भगवान जिस विश्वरूप का दर्शन कराते हैं, उसी का साक्षात अनुभव हमें Learn Geeta के माध्यम से विश्वभर में फैले इस कार्य की विराट रूपरेखा में हुआ है।

आज 180 देशों तक संपर्क स्थापित हो चुका है और 12.5 लाख से अधिक गीता प्रेमियों ने इस मंच से जुड़कर पंजीकरण कराया है। यह केवल गीता के प्रचार का कार्य नहीं है, बल्कि भगवान श्रीकृष्ण की सेवा का एक दिव्य, अद्भुत और विराट स्वरूप है।

आश्चर्य होता है कि 13 भाषाओं में चलने वाले ये वर्ग प्रातः 4 बजे से प्रारंभ होकर रात्रि 2 बजे तक संचालित होते हैं। इस सम्पूर्ण कार्य हेतु 12,000 से अधिक युवा भाई-बहन निःस्वार्थ भाव से सेवा में लगे हुए हैं।

पाँच देशों में Learn Geeta का विधिवत पंजीकरण हो चुका है। 355 ऑफ़लाइन बाल संस्कार केंद्र संचालित हो रहे हैं और 40 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन भी हो चुका है। यह सब कार्य निरंतर जारी है।

अब यह निःस्वार्थ सेवा अपने पाँच वर्ष पूर्ण कर रही है। जब हम इस पंचवर्षपूर्ति महोत्सव को मना रहे हैं, तब स्मरण होता है कि यह कार्य 23 जून 2020 को प्रारंभ हुआ था और आज, 22 जून 2025, को हम इसका उत्सव मना रहे हैं।

2020 से 2025 तक की यह पाँच वर्षीय यात्रा वास्तव में एक ऐसा कार्यकाल रहा है, जो आसमान को छू लेने जैसा है। इस अवसर पर अत्यंत हर्ष के साथ मैं सभी कार्यकर्ताओं और सेवा में लगे सभी सेवियों को हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद अर्पित करता हूँ। मैं उनका भी अभिनंदन करता हूँ जिन्होंने गीता को पूर्णतः या आंशिक रूप से कंठस्थ कर लिया है।

यह सम्पूर्ण कार्य डॉ. आशू गोयल के कुशल निर्देशन में संचालित हुआ है और कार्याध्यक्ष डॉ. संजय मालपाणी जी ने उन्हें पूर्ण संरक्षण और प्रोत्साहन प्रदान किया है। आप सभी ने जिस श्रद्धा, भक्ति और उत्कृष्ट गुणवत्ता के साथ इस कार्य को विस्तार दिया है, वह देखकर न केवल भारत, बल्कि सम्पूर्ण विश्व अचंभित है। यह स्पष्ट है कि यह सेवा कार्य परमात्मा को प्रिय है, और प्रभु स्वयं इस सेवा के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ निर्मित करते रहे हैं।

यह कार्य उसका सजीव प्रमाण है—समय-समय पर जब जो आवश्यकता रही, वह सहज उपलब्ध होती गई और कारवाँ बढ़ता गया।

सभी सेवियों का पुनः अभिनंदन करते हुए, और इन पाँच वर्षों में महीने में एक बार आकर अपने आशीर्वचन देने वाले संत-महात्माओं का नमन करते हुए, मैं पुनः उन सभी संतों से आशीर्वाद माँगता हूँ कि यह कार्य कभी रुके नहीं, बल्कि और भी गति से आगे बढ़े।



भगवा वस्त्रधारी संत हाथ उठाकर आशीर्वाद मुद्रा में, रुद्राक्ष माला धारण किए हुए।

हम चाहते हैं कि यह सेवा सम्पूर्ण विश्व तक पहुँचे, क्योंकि यही भगवान की सर्वोपरि सेवा है। श्रीकृष्ण ने स्वयं कहा है कि जो भगवद्गीता का अध्ययन करता है, प्रचार करता है और इसका प्रसार करता है—वह मुझे अत्यंत प्रिय है, और मैं उससे उतना प्रेम करता हूँ, जितना किसी और से नहीं कर सकता।

आज जब मानवता छटपटा रही है और दिशा की तलाश में है, तब गीता का यह दिव्य संदेश और Learn Geeta का यह अभियान अत्यंत सराहनीय, अभिनंदनीय और भारत माता तथा सनातन धर्म की सेवा का सर्वोच्च स्वरूप है।

ऐसे कार्यों के लिए हमें कभी रुकना नहीं है। हमें अपने कार्य का सतत निरीक्षण करते हुए, निरंतर आगे बढ़ते जाना है। आज हमारा मंत्र यही होना चाहिए—**“आगे बढ़ो, बढ़ते रहो।”**

प्रभु ने हमें अपने कार्य हेतु निमित्त रूप में चुना है—यह हमारा परम सौभाग्य है। यदि हम इसी भाव से सेवा करते रहें, तो यह देश अपने आप अंधकार से मुक्त होगा, संगठित होगा, और जिस रामराज्य की हम कल्पना करते हैं, वह भगवद्गीता के माध्यम से अवश्य साकार होगा।

यह उतल पुथल उत्ताल लहर पथ से डिगा नहीं पाएगी

पतवार चलाते जाएंगे —-मंजिल आयेगी, आयेगी.... मंजिल आयेगी, आयेगी।

भारत माता की जय

—परम पूज्य स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरिजी महाराज

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/hmaare-pthprdrshk/snt-vaannii/

01

०१ हमारे पथप्रदर्शक

जीवन विजय के मंत्र

गीता का मूल उद्देश्य अर्जुन को विजयी बनाना यह था। भगवान ने इस उपदेश में अर्जुन के विजय के अनेक सूत्र दिये। भगवद्गीता के दूसरे अध्याय में अर्जुन ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा कि स्थितप्रज्ञ पुरुष के लक्षण क्या हैं? भगवान के उत्तर केवल अर्जुन के लिए नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए विजय के मार्गदर्शक हैं।

गीता विशारद डॉ. संजय मालपाणी
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, गीता परिवार

२ मिनट पठन

जीवन विजय के मंत्र

यदि हम इन शिक्षाओं को अपने जीवन में उतार लें, तो कोई भी परिस्थिति हमें हरा नहीं सकती।

चित्त की प्रसन्नता

जो व्यक्ति भीतर से आनंदित है, उसकी प्रसन्नता परिस्थितियों पर निर्भर नहीं होती। यही स्थायी सफलता का रहस्य है।

क्रोध पर विजय

क्रोध विवेक का नाश करता है। क्रोध पर विजय पाना आत्मविजय का प्रथम सोपान है।

समभाव

सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय—सबमें समान रहने वाला ही सच्चा विजेता होता है।

इंद्रिय संयमन

इंद्रियों को वश में रखकर ही ऊर्जा और समय का सदुपयोग होता है। यही विजयी जीवन की कुंजी है।

रसना पर विजय

रसना (जिह्वा) सबसे चंचल इंद्रिय है। अति-भोजन और स्वाद की आसक्ति मनुष्य को दुर्बल बनाती है। रसना पर विजय पाना न केवल स्वास्थ्य का आधार है, बल्कि आत्मसंयम और आत्मबल की पहचान भी है।

सतर्कता व सजगता

स्थितप्रज्ञ सदैव जागरूक रहता है। उसकी सतर्कता उसे हर परिस्थिति में सही मार्ग चुनने में समर्थ बनाती है।

भगवान का सदैव स्मरण

ईश्वर का स्मरण जीवन को संबल देता है और हर संघर्ष में विजय की शक्ति देता है।

कामनाओं का त्याग

कामनाएँ जितनी बढ़ती हैं, उतना ही मन अशांत होता है। त्याग से ही मन हल्का और विजयी बनता है।

राग-द्वेष से मुक्ति

अत्यधिक आसक्ति और घृणा दोनों ही मन को बाँधते हैं। इनसे मुक्त होकर ही मनुष्य स्वतंत्रता और विजय प्राप्त करता है।

बुद्धि की स्थिरता

अस्थिर बुद्धि निर्णय को डगमगाती है। स्थिर बुद्धि वाला ही सच्चा विजेता कहलाता है।

इन सभी लक्षणों का सार यही है कि बाहरी सफलता से पहले भीतरी विजय आवश्यक है। जो अपने मन और इंद्रियों पर विजय पा लेता है, उसके लिए बाहरी विजय सहज हो जाती है।

– डॉ. संजय मालपाणी

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2025-06/hmaare-pthprdrshk/jiivn-vijy-ke-mntr/

01

०१ हमारे पथप्रदर्शक

सम्पादकीय: सनातन धर्मघोष – लर्नगीता का पंचवर्षीय विश्व अभियान

पाँच वर्षों में लर्नगीता ने यह सिद्ध कर दिया कि गीता केवल एक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन का प्रकाशस्तम्भ है।

गीता विशारद डॉ.आशू जी गोयल ४ मिनट पठन

प्रोग्राम डायरेक्टर, लर्नगीता, अन्तरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष,गीता परिवार

पञ्चवर्ष पूर्ति महोत्सव- लर्नगीता

"उद्धरेदात्मनाऽत्मानं नात्मानमवसादयेत्। आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥" (गीता 6.5)

श्लोक सुनें ६.५

जीवन की कठिनाइयाँ हमें गिरा भी सकती हैं और ऊँचा उठा भी सकती हैं। महामारी का समय ऐसा ही था, जब बहुत से प्रयास ठहर गये, वहीं गीता परिवार ने इसे अवसर बनाकर लर्नगीता के रूप में नई दिशा दी। यह संभव हुआ केवल परमपूज्य **स्वामीजी श्री गोविन्ददेव गिरिजी महाराज** के दिव्य आशीर्वाद और उनके प्रेरक मंत्र **"गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें"** से।

पाँच वर्षों की साधना यात्रा

- 2020 में **2500 साधकों और 100 सेवियों** से आरम्भ हुई यह साधना आज **13.5 लाख साधकों और 14,000 सेवियों** के विराट स्वरूप में विकसित हो चुकी है।
- 3 भाषा से प्रारंभ होकर आज **13 भाषाओं** में सुबह 4 बजे से रात 2 बजे तक अविराम गीता प्रवाह।
- केवल पठन वर्ग से आगे बढ़कर व्याकरण वर्ग, बाल वर्ग, कंठस्थ वर्ग, विशेष विवेचन सत्र और परीक्षा-उपाधि आदि अनेक आयाम।
- **जेलों में गीता, विद्यालयों में संस्कार शिक्षा**, और **बालकों हेतु विशेष वर्ग** जैसी प्रेरक पहलें।

यह सब केवल आँकड़े नहीं, बल्कि श्रद्धा, सेवा और सामूहिक साधना का परिणाम है।

सेवा का अनुपम स्वरूप

"नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।" (गीता 3.8)

लर्नगीता की विशेषता है — निस्वार्थ सेवा।

श्लोक सुने ३.८

- कोई प्रशिक्षक बनता है,
- कोई तकनीकी सहायक,
- कोई कॉलिंग या संचालन में योगदान देता है।

हर सेवा, गीता के महायज्ञ में आहुति बनती गई। यही समर्पण आज लर्नगीता को विश्व का सबसे बड़ा गीता अध्ययन मंच बना चुका है।

भविष्य की दिशा – "गीतामय विश्व"

पाँच वर्ष पूर्ण होने पर अब हमारी दृष्टि और भी व्यापक है। आने वाले दशक में लर्नगीता का संकल्प है:

- **वैश्विक विस्तार (Global Outreach):** भारत के घर घर तक पहुँचने के बाद अब लक्ष्य है हर देश, हर नगर, हर घर तक पहुँचना।
- **24×7 गीता अध्ययन:** विश्वभर के समयानुसार चौबीसों घंटे गीता वर्ग उपलब्ध कराना।
- **गुणवत्ता और विस्तार साथ-साथ:** साधकों और सेवियों की संख्या तेज़ी से बढ़ रही है, ऐसे में गुणवत्ता बनाए रखना प्राथमिकता होगी।
- **साहित्य और विवेचन:** विभिन्न भाषाओं में पुस्तकें और मार्गदर्शिकाएँ प्रकाशित करना; बालकों हेतु विशेष साहित्य की रचना।
- **Team 11 मूल्य शिक्षा:** विद्यालयों और क्षेत्र-क्षेत्र में ऑफ़लाइन संस्कार-कक्षायें स्थापित करना, ताकि बाल्यकाल से संस्कार के बीज विकसित हों।
- **समग्र विकास:** केवल साधकों तक सीमित नहीं, विद्यालयी विद्यार्थी, गृहस्थ, अधिकारी, महिलाएँ, कैदी, सभी को गीता से जोड़ना।
- **नया संगठनात्मक ढाँचा:** बढ़ते कार्यों को सुव्यवस्थित करने हेतु एक पारदर्शी और उत्तरदायी संरचना।
- **डिजिटल सशक्तिकरण:** लर्नगीता ऐप और प्लेटफ़ॉर्म को और सरल व सुलभ बनाना, कम-नेटवर्क क्षेत्रों, दिव्यांग साधकों और वैश्विक स्तर पर सभी के लिए सुविधाजनक।
- **सेवी प्रशिक्षण व अकादमी:** प्रशिक्षकों, तकनीकी सहायकों और समन्वयकों के लिए प्रशिक्षण, प्रमाणन और सतत् मार्गदर्शन।
- **शोध व साझेदारी:** विश्वविद्यालयों और संस्थाओं से सहयोग कर शोध व मान्यता (accreditation) के नए मार्ग खोलना।
- **वार्षिक प्रभाव रिपोर्टिंग:** आँकड़ों से आगे जाकर परिवर्तन की कहानियों को प्रस्तुत करना, ताकि पारदर्शिता और प्रेरणा दोनों बढ़ें।

“गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।”

यह पाँच वर्षों की यात्रा हमें गर्व से भर देती है। परंतु यह एक आरम्भघोष है, आने वाला दशक गीता जागरण का होगा। हमारा उद्देश्य स्पष्ट है: **“हर घर गीता, हर कर गीता”** एवं जितना अधिक यह संकल्प साकार होता जायेगा, एक शांतिमय, तेजोमय समृद्ध गीतामय विश्व का निर्माण होता जायेगा।

श्रीकृष्णार्पणमस्तु!

– डॉ. आशू गोयल

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2025-06/hmaare-pthprdrshk/smpaadkiiy-snaatn-dhrmghoss-lrngiitaa-kaa-pncvrssiiy-vishv-a/

01

०१ हमारे पथप्रदर्शक

सर्वभूतहितप्रदीपिका, अद्वैतामृतवर्षिणी गीता

३ मिनट पठन

ज्योति शुक्ला, रूपल शुक्ला, कविता वर्मा
कार्यक्रमसमन्वयिकाः, लर्नगीता

"सर्वभूतहितेरताः" – अयं श्लोकः अस्माकं सेवायाः सूत्ररूपेण प्रतिष्ठितः। यः साधकः केवलं स्वहितं पश्यति, सः सीमितं लाभमेव प्राप्नोति; यः पुनः सर्वेषां हितं पश्यति, तस्य साधना विश्वव्यापिनी भवति। उपनिषत् अपि स्पष्टं ब्रूते –

"यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः" (कठोपनिषद् १.२.२३ / मुण्डकोपनिषद् ३.२.३) अर्थात् — सः यं चिनोति स एव इदं कार्यं कर्तुं शक्नोति। गीताज्ञानं न केवलं पुस्तकपठनस्य परिणामः, न च बौद्धिकचर्चायाः विषयः; अपि तु तस्यैव सौभाग्यम्, यं ईश्वरः स्वयमेव निमित्तीकुरुते। अस्माकं भाग्यम् एतदेव, यत् प्रभुः अस्मान् अस्य कार्यस्य निमित्तीकृतवान्। गीता न केवलं युद्धभूमेः उपदेशरूपा, अपि तु सम्पूर्णजीवनस्य दार्शनिकनकाशरूपिणी।
धर्मे स्थैर्यम्, कर्तव्ये निष्ठा, चित्ते प्रसन्नता, दुःखसुखयोः समत्वम्, ईश्वरस्मरणे अनवरतता – एतानि सूत्राणि गीता प्रददाति। महापुरुषमुखैः अपि गीता महिम्ना वर्णिता। भक्तिरसपारगः सन्तश्रेष्ठः ज्ञानेश्वरमहाराजः गीतायाः भावार्थदीपिकां **"भावार्थदीपिका" (ज्ञानेश्वरी)** इति नाम्ना रचयामास। ते अवदन् –
"गीता तु भगवतः प्रत्यक्षः श्वासः इति जीवने सर्वदुःखहरिणी।"

स्वामी विवेकानन्दः अपि अवदत् –
"Geeta is the universal mother. Her doors are open to everyone."
तेन गीता न केवलं हिन्दूनां, अपि तु सम्पूर्णमानवानां सार्वभौमः उपदेशः इति प्रतिपादितम्।

महात्मागान्धीमहाभागः अपि स्वीयम् आत्मबलं गीतायाः श्लोकैः लब्धवान्।
तेन उक्तम् –
"When doubts haunt me and disappointment stares me in the face,
I turn to the Bhagavad Geeta and find a verse that comforts me."

लोकमान्यतिलकः अपि अवदत् –
"Geeta is my mother. When I am in distress, I take refuge in her bosom."
तस्य **"गीतारहस्ये"** कर्मयोगस्य महिमा विशदीकृता।
आधुनिकवैज्ञानिकानाम् अभिप्रायाः अनेकाः आधुनिकाः वैज्ञानिकाः अपि गीताशिक्षायाः गाम्भीर्यं प्रशंसितवन्तः।
"अल्बर्ट आइंस्टीन" नामकः दार्शनिकः गीतायाः विचारैः प्रेरणां लब्धवान्।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुलकलाम अवदत् –
"Geeta gives the best management principles, stress control and peace of mind."

"ओपेनहाइमर" नामकः वैज्ञानिकः प्रथम-अणुबॉम्ब-परीक्षणे गीता-श्लोकं स्मरन् उक्तवान् –
"कालोऽस्मि लोकक्षयकृत् प्रवृद्धः" (गीता ११.३२)।

एवं गीता न केवलं धार्मिकग्रन्थः, अपि तु विज्ञान, जीवन, नेतृत्वे च समानरूपेण आदरणीया अस्ति।

श्लोक सुनें ११.३२

भारतीयसंस्कृतेः वैशिष्ट्यम्
भारतीयसंस्कृतेः सारभूतं सिद्धान्तम् – "वसुधैव कुटुम्बकम्" (सम्पूर्णं विश्वं एकं कुटुम्बम्)।
लर्नगीता-अभियानं एतस्मिन् एव सिद्धान्ते नूतनमायामं दत्तवन्। कोविडकालीनआपत्तिं अवसरं कृत्वा वयं जगति प्रदर्शितवन्तः यत् भौगोलिकदूरीः किमपि न भवन्ति।

लर्नगीता-अभियानम् एतस्य प्रत्यक्षं प्रमाणं जातम् – यत्र १८० राष्ट्रेषु १४ लक्षाधिकाः जनाः भेदं विना ज्ञानं लभन्ते। प्रातःचतुर्वादनात् आरभ्य रात्रिद्विवादनपर्यन्तं त्रयोदश (13) भाषासु प्रवर्तमानाः ३००० कक्ष्याः

“वसुधैव कुटुम्बकम्” इत्यस्य भावनायाः साक्षात्काररूपेण दृश्यन्ते। विविधराष्ट्रेषु, विविधसंस्कृतिषु च स्थिताः जनाः, एकस्मिन् एव मञ्चे आगत्य गीता-अध्ययनं कुर्वन्ति। एवं गीतायाः कृपया एकः वैश्विकः परिवारः निर्मितः, यत्र सर्वे सदस्याः परस्परं स्नेहं सम्मानं च वहन्ति। अयं न केवलं ज्ञानप्रसारः, अपि तु सम्पूर्णमानवजातिं एकत्र कुर्वन् विराटः प्रयासः अस्ति। लर्नगीता इत्यस्य आदर्शः अस्य प्रत्यक्षसिद्धिः।

अद्य अस्माकं संकल्पः —

“प्रतिगृहं गीता, प्रतिकरं गीता।”

यावत् गीतारसः प्रतिगृहं, प्रतिहृदयं, प्रतिजीवनं च न प्रवहति, तावत् अस्माकं प्रयत्नाः निरन्तरं प्रवर्तिष्यन्ते। गीतासंदेशः न केवलं धर्मोपदेशः, अपि तु विश्वस्य मङ्गलाय, सर्वभूतहिताय च आह्वानरूपः। यदि वयं सर्वे मिलित्वा एतद् दिव्यज्ञानं जीवनप्रवाहे आचरिष्यामः, तर्हि गीतामृतं सम्पूर्णमानवजातीम् आलोकयिष्यति। अतः अस्माकं प्रार्थना स्वाभाविका –

“आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः” (ऋग्वेद १.८९.१)

यतः सर्वतः आगताः उत्तमानि चिन्तनानि अस्माकम् अन्तःकरणानि आलोकयन्तु। सर्वे वयं तानि आत्मसात्कृत्वा गीतामयविश्वस्य निर्माणाय संकल्पबद्धाः भवाम।

“इति सम्”

जय श्रीकृष्ण!

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2025-06/hmaare-pthprdrshk/srvbhuuthitprdiipikaa-advaitaamrtvrssinnii-giitaa/

01

०१ हमारे पथप्रदर्शक

आशीर्वचन

१९ मिनट पठन · १ चित्र

परमपूज्य योग महर्षि स्वामी श्री रामदेव जी महाराज

"इस युग में भी श्रीमद्भगवद्गीता के सिद्धांत, आदर्श और मूल्य सार्वभौमिक, वैज्ञानिक तथा पंथनिरपेक्ष हैं। गीता का प्रत्येक श्लोक संपूर्ण सृष्टि और जीवन के कल्याण का मार्गदर्शक है। इसके अध्ययन से साधक को शाश्वत दैवी संपदा और आध्यात्मिक ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

डॉ. श्री संजय जी और डॉ. श्री आशू जी ने जिस प्रामाणिकता और समर्पण से यह महायज्ञ प्रारंभ किया है, वे अभिनंदन के पात्र हैं। साथ ही मातृशक्ति की प्रधान भूमिका में हमारी बेटियों ने जिस कृतज्ञतापूर्ण कार्य को संपन्न किया है, उसकी प्रशंसा के लिए शब्द छोटे पड़ जाते हैं—हृदय नि:शब्द होकर श्रद्धा से नत हो जाता है।"

सर्वश्रद्धेय कार्ष्णि पीठाधीश्वर परमपूज्य श्री गुरुशरणानंद जी महाराज

"हमें अत्यंत प्रसन्नता है कि गीता परिवार के ऑनलाइन गीता साधना वर्ग परमपूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी महाराज के संरक्षण एवं निर्देशन में संचालित हो रहे हैं। यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं पवित्र कार्य है।

स्वामीजी का जन्म पवित्र दाधीच ब्राह्मण कुल में हुआ। उन्होंने वेद और शास्त्रों का गंभीर अध्ययन अपने गुरुओं के सान्निध्य में किया और जगद्गुरु जैसे महापुरुषों से प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त किया। उनकी वेद, महाभारत, गीता और भागवत में अटूट निष्ठा तथा प्रचार-प्रसार का अद्वितीय प्रयास उन्हें साक्षात व्यासस्वरूप प्रतीत कराता है। गुरु के जो लक्षण शास्त्रों में बताए गए हैं, वे सभी स्वामीजी में विद्यमान हैं।

उनके निर्देशन में डॉ. संजय जी और डॉ. आशू गोयल जी जैसे समर्पित सेवक और आचार्य विभिन्न भाषाओं में ऑनलाइन गीता वर्गों का संचालन कर रहे हैं, जिससे अनेकों विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं। वास्तव में, ज्ञान का एक बीज भी यदि जीवन में बोया जाए तो उससे महान परिवर्तन संभव है।

गीता परिवार का यह प्रयास अत्यंत पुण्यकारी और यशस्वी है। हम सभी विद्यार्थियों के उत्साह का अभिनंदन करते हैं और समस्त आचार्यों को वंदनपूर्वक प्रणाम करते हैं। सत्य है कि विद्या दान करने से ही बढ़ती है।"

पूज्य भाईश्री रमेशभाई ओझा का संदेश

"गीता परिवार की यात्रा जिस सकारात्मकता और दिव्य ऊर्जा के साथ आगे बढ़ रही है, वह अद्वितीय है। जब साधक भगवान पर दृढ़ विश्वास के साथ भक्ति को ही अपने जीवन का केंद्र बना लेते हैं, तब वही भक्ति उन्हें प्रेरणा देती है, शक्ति प्रदान करती है और निरंतर नवीन दृष्टिकोण से सोचने की क्षमता विकसित करती है।

इसी भक्ति-शक्ति के कारण गीता परिवार की प्रवृत्ति दिन-प्रतिदिन विस्तृत हो रही है। तकनीकी साधनों ने इस कार्य को न केवल सरल बना दिया है, बल्कि व्यापक भी कर दिया है। यह वास्तव में समय की मांग और युग की पुकार है।"

परमपूज्य श्री जगद्गुरु राजेंद्र देवाचार्य जी महाराज मुलुख पीठाधीश्वर, वृंदावन

महापुरुषों का अन्तःकरण भगवान के अन्तःकरण से एकरूप हो जाता है।

इसलिए महापुरुषों के अन्तःकरण से किया गया संकल्प निश्चित ही भगवतकर्म होता है। भगवान का कोई संकल्प मिथ्या हो ही नहीं सकता — वह सत्य संकल्प ही होता है।

परम पूज्य स्वामी गोविंद देव गिरि जी का "हर घर गीता, हर कर गीता" यह Learn Geeta के माध्यम से किया गया संकल्प भी अद्भुत और भगवदीय कार्य ही है।

कोरोना महामारी के भीषण काल में विज्ञान युग और आधुनिक उपकरणों का उपयोग करते हुए, गीता परिवार ने 180 से अधिक देशों में इतनी बड़ी संख्या में लोगों तक पहुँचना और श्रीमद्भगवद्गीता का प्रचार करना — यह

अभूतपूर्व कार्य किया है। आपने समग्र विश्व के सामने भारतवर्ष की महिमा, गरिमा, क्रियाशीलता, और भारतीयों के व्यक्तित्व तथा पुरुषार्थ का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। इसलिए आप वंदनीय हैं।

इस ब्रह्माण्ड का श्वास और प्रश्वास ही वेद हैं, और इन वेदों का तात्पर्य महर्षि व्यासकृत वेदभाष्य महाभारत में निहित है। और महाभारत का सार है — श्रीमद्भगवद्गीता। मनुष्य के कल्याण के लिए गीता अत्यंत महत्वपूर्ण है।

हिंदू वैदिक सनातन संस्कृति और धर्मपद्धति किसी सीमित क्षेत्र या समाज के लिए नहीं, बल्कि एक उदार, उदात्त और विराट विचारधारा है, जो समस्त विश्व की मानव जाति को अपने में समाहित करती है। मानव जाति को परम निःश्रेयस की प्राप्ति कराने वाला यदि कोई एकमात्र ग्रंथ है, तो वह है — श्रीमद्भगवद्गीता।

धन्य है गीता परिवार और उनके सेवक, जो भारतवर्ष का यह अनुपम उपहार संपूर्ण विश्व की मानव जाति तक पहुँचाने के लिए कटिबद्ध हैं।

भगवद्गीता का संदेश मानव जाति तक पहुँचाने के लिए भगवान ने स्वयं व्यास रूप में गीता का प्राकट्य किया, फिर भी संतोष नहीं हुआ। तब भगवान आदि शंकराचार्य, श्री रामानुजाचार्य, श्री रामानंदाचार्य आदि आचार्यों के रूप में प्रकट हुए और गीता शास्त्र का विभिन्न दृष्टिकोणों से विवेचन करके, उसे सबके लिए उपयोगी बनाया।

फिर भी संतोष न होने पर, महाराष्ट्र की पवित्र भूमि आळंदी पर भगवान स्वयं संत ज्ञानेश्वर महाराज के रूप में प्रकट हुए और ज्ञानेश्वरी के रूप में गीता का भाष्य किया। उसी ज्ञानेश्वरी को ज्ञानेश नंदनी के रूप में श्री संत गुलाबराव महाराज ने सरलता से समझाया।

हम मानते हैं कि महर्षि वेदव्यास, संत ज्ञानेश्वर महाराज, श्री पंढरीनाथ, और संत गुलाबराव महाराज का कृपाप्रसाद परम श्रद्धेय स्वामी गोविंद देव गिरि जी महाराज को प्राप्त हुआ। स्वामीजी से यह कृपाप्रसाद गीता परिवार को प्राप्त हुआ, और गीता परिवार के माध्यम से यह कृपाप्रसाद आज समस्त विश्व की मानव जाति को मिल रहा है।

हमारी कामना है —

गीता परिवार निरंतर विस्तृत हो, विराट हो, और विश्व की सम्पूर्ण मानव जाति एक होकर "गीता परिवार" बन जाए।

पूज्य साधु ब्रह्मविहारी दास जी

"जब भूकंप आता है तो सहारा देने वाले स्तंभ की आवश्यकता होती है, जिसके बल पर हम खड़े रह सकें। ठीक उसी प्रकार, जब मन विचलित होता है, तब गीता का ज्ञान ही हमें संभालता है और स्थिरता प्रदान करता है।

इसलिए गीता को गर्व से पढ़ें, पढ़ाएँ और जीवन में उतारें—जैसा कि हमारे परमपूज्य गुरुदेव श्री गोविन्ददेव गिरि जी सदैव कहते हैं। गीता का संबंध केवल अर्जुन से नहीं है, बल्कि हर उस व्यक्ति से है जो इसे अपने जीवन में आत्मसात करता है।"

पूज्य सद्गुरु जी

"Chanting of the Gita is of utmost importance. The wisdom of the Gita must reach people first and foremost.

Live life joyfully—be lively and vibrant. Never be overly serious and never withdraw from life. Embrace it fully and celebrate every moment."

पूज्य श्री श्री रविशंकर जी

"भगवान श्रीकृष्ण ने गीता का ज्ञान उस समय दिया था जब अर्जुन संघर्ष से टूट चुका था। आज भी परिस्थिति वैसी ही है। मानव कोरोना जैसी भीषण बीमारी से जूझ रहा था, परंतु परमपूज्य गुरु गोविन्ददेव गिरि जी की कृपादृष्टि पाकर साधक आनंदोत्सव मना रहे हैं।

यह कार्य केवल कोई 'ज्ञान-पुंज पुरुष' ही कर सकता है। अतः हमारे परमपूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी वास्तव में कृष्ण-स्वरूप हैं, और गीता परिवार उनकी कृपा पाकर धन्य एवं आनंदित है।"

पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज

"हमारा देश असंख्य मोतियों से भरा हुआ है। आवश्यकता केवल एक धागे की थी, जो इन सबको जोड़ सके।

गीता परिवार ने उस धागे का कार्य किया है—13 भाषाओं में गीता का लिपीबद्ध करके इन मोतियों को एक माला में पिरो दिया है। यह माला अभी पूर्ण नहीं हुई; नए-नए मोती लगातार जुड़ते जा रहे हैं और जुड़ते रहेंगे।

जिस दिन यह माला पूर्ण होगी और परमपूज्य स्वामीजी स्वयं योगेश्वर श्रीकृष्ण को यह माला कंठ में पहनाएँगे—वह दिन सबसे बड़ा त्यौहार, सबसे बड़ा आनंदोत्सव और विजय दिवस होगा। उस महादिवस के लिए हम हार्दिक शुभकामनाएँ और मंगलाशंसाएँ अर्पित करते हैं।"

डॉ. एच. आर. नागेन्द्र जी

भगवद्गीता को विद्यालयों में सिखाना अत्यंत आवश्यक है।
गीता के सभी योगशास्त्र—ज्ञान योग, कर्म योग, राज योग, भक्ति योग और विषाद योग—का समेकित अध्ययन छात्रों के लिए अत्यंत फलदायी सिद्ध होता है।
अनुलोम–विलोम पद्धति से गीता का अध्ययन करने पर बच्चों को अधिक सफलता प्राप्त होती है। उनका स्वभाव स्थिर और शांत बनता है, श्रद्धा और विनम्रता का विकास होता है, तथा व्यक्तित्व में सर्वांगीण प्रगति होना स्वाभाविक है।
गीता परिवार के कार्यों की निस्संदेह अत्यधिक प्रशंसा की जानी चाहिए। हम सभी का कर्तव्य है कि गीता के अधिक से अधिक प्रसार में स्वयं को समर्पित करें, क्योंकि इसी में हमारे उज्ज्वल भविष्य का रहस्य छिपा हुआ है।

श्रीश्रीसुगुणेन्द्रतीर्थस्वामीजी महाराज

बहुकालात् अस्माभिरपि भगवद्गीताया: प्रचारः क्रियमाणः वर्तते। गोविन्ददेवगिरिमहाराजमहोदयेन अपि भगवद्गीतायाः प्रचारः सर्वात्मना क्रियते। अतः अस्माकं गीतासम्बन्धः शाश्वतः वर्तते इति वयं सन्तोषेण वदामः।

गीतापरिवारस्य आदर्शभूतस्य गोविन्ददेवगिरिमहाराजस्य, तस्य च सत्कार्यस्य महाकार्यस्य वयं हार्दिकम् अभिनन्दनं कुर्मः। भगवद्गीताप्रसारः श्रीकृष्णस्य अत्यन्तं प्रियः। अतः भगवद्गीताप्रचाररूपे श्रेष्ठमार्गे गीतापरिवारः सततं प्रवर्तमानं वर्तते। प्रथमतः तस्य एव अभिनन्दनं कुर्मः।

परम पूज्य स्वामी श्री माधव प्रिय दास जी महाराज

इतने कठिन समय में भी, जब हमने गीता रूपी कृष्ण को अपना सारथी बनाया, तब हमें विजय प्राप्त हुई।
हमारे ऋषि–मुनि आकाशवाणी से शिक्षा प्राप्त करते थे, और आज कोरोना काल की करुणा तथा स्वामीजी की प्रेरणा से इंटरनेट की "आकाशवाणी" के माध्यम से संपूर्ण विश्व श्रीमद्भगवद्गीता का ज्ञान प्राप्त कर रहा है।

जैसे एक संकल्प बीज मिट्टी में मिलकर हरे-भरे वृक्ष में परिवर्तित होता है, वैसे ही गीता परिवार से आज संपूर्ण विश्व में गीता रूपी अनुपम आम्रवृक्ष विकसित हो रहे हैं—यह दृश्य अत्यंत आनंददायी है।

पूज्य साधवी भगवती सरस्वती जी

Online Geeta emerged as a sacred prasad during the time of the pandemic. Geeta Pariwar did not view the crisis as a problem, but as a divine opportunity—to serve, to connect and to spread the timeless wisdom of the Gita across the globe.

When I first arrived in India, Swamiji placed the Bhagavad Gita in my hands on the sacred banks of Maa Ganga. That moment—this Sangam of Guru, Ganga, and Geeta—became the turning point of my life.

Through the Gita, I found answers to every challenge, every sorrow, every question. It offered me not just teachings, but the very essence of life.

Today, I don't live in Bharat but Bharat lives in me .

You are truly blessed—to not only learn the Gita, but to live it."

परम पूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज

भारतीय संस्कृति विरासत से समृद्ध है। जब हम मानवता की बात करते हैं, तो उसका मूल हमारे शास्त्रों में ही निहित है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता को समझने के लिए हमें अपने शास्त्रों का अध्ययन करना आवश्यक है, और यही कार्य गीता परिवार निष्ठा से कर रहा है।

गीता मनीषी स्वामी श्री ज्ञानानंद जी महाराज

गीता परिवार की भूमिका एक बीज (गुठली) के समान है। संत का संकल्प कितना व्यापक हो सकता है, यह देखकर आश्चर्य होता है।

बीज यदि पड़ा-पड़ा रहे तो समाप्त हो सकता है, किंतु यदि किसी कुशल माली के हाथों में आकर मिट्टी में दबाया जाए तो वह अंकुरित होता है, पल्लवित होकर विशाल आम्रवृक्ष बनता है। वह वृक्ष छाया देता है, मधुर फल देता है और अपने समान अनेकों बीज उत्पन्न करता है।

गीता परिवार की यही दिव्यता है—संत का एक संकल्प, शुद्ध लक्ष्य, सच्चा भाव और अटूट विश्वास मिलकर असंभव को संभव बना देता है।

परमपूज्य स्वामी श्री बालकानंद गिरीजी महाराज



गीता परिवार का आधिकारिक प्रतीक चिह्न।

आज मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है कि गीता परिवार पूर्ण रूप से व्रतमय जीवन जी रहा है।

एक दिन अवश्य आएगा जब संपूर्ण विश्व गीतामय हो जाएगा।

परम पूज्य स्वामी बहोंद्र तीर्थ जी महाराज

यह विशाल कार्य, जो संत की प्रेरणा से आरंभ हुआ था, कभी असंभव प्रतीत होता था। किन्तु आज उसे सार्थकता मिली है।
धर्म के उद्धार के लिए स्वयं भगवान अवतरित होते हैं और आज 5000 सेवकों का एक साथ कार्य करना इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

परमपूज्य विमर्श नंदगिरी जी महाराज

आज इस अमृत महोत्सव में, अमृत प्रत्येक पल प्रवाहित हो रहा है, उसके लिए युगों-युगों से बहती आ रही सनातन संस्कृति को शत-शत नमन।

गीता वास्तव में एक "सार्वभौमिक संविधान" है, और गीता परिवार समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का अद्भुत कार्य कर रहा है। कर्मयोग के पाँच चरणों को सही रूप से समझा और आत्मसात किया जाए, तो वे केवल सुनने या बोलने के मंत्र नहीं रहते—बल्कि जीवन में उतरते हैं, आचरण में झलकते हैं।

1. मैं ईश्वर का दास हूँ, सेवक हूँ।
2. मैं ईश्वर द्वारा नियुक्त हूँ।
3. मैं यह कार्य केवल ईश्वर की प्रीति प्राप्त करने हेतु कर रहा हूँ।
4. इस कार्य में मैं अपनी पूरी प्रतिभा का उपयोग करूँगा।
5. अंततः मैं इस कार्य के प्रत्येक फल को ईश्वर को ही अर्पित करूँगा।

परम पूज्य प्रणवानंद सरस्वती जी महाराज

भगवद्गीता केवल एक ग्रंथ नहीं, अपितु मानवता के आत्मोदय का दिव्य घोष है। इसके चार श्रोता— श्री हनुमान जी, धनुर्धर अर्जुन, संजय और धृतराष्ट्र—मानव के चार आंतरिक स्तरों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे न केवल पात्र हैं, अपितु प्रतीक हैं—हमारी जिज्ञासा, श्रद्धा, वासना और अन्धता के।

श्री हनुमान जी वे रथ के ध्वजस्तंभ पर विराजमान होकर गीता श्रवण कर रहे थे। यद्यपि वे तत्वबोध से परिपूर्ण हैं, फिर भी गीता सुनना उनके लिए आत्मनिष्ठा का पुनः स्मरण है। यह दर्शाता है कि ज्ञानी भी श्रवण करते हैं, क्योंकि गीता का श्रवण स्वयं में साधना है।

धनुर्धर अर्जुन एक महान जिज्ञासु, साधक और आत्मान्वेषी थे। उनका प्रश्न था कि —"मैं क्या करूँ?" और उत्तर में उन्हें मिला कर्तव्यबोध, आत्मतत्व का साक्षात्कार और जीवन का धर्ममार्ग। अर्जुन गीता के आदर्श श्रोता हैं — जो सुनते हैं, समझते हैं और जीते भी हैं।

संजय उनमें जिज्ञासा नहीं थी, परंतु वासना और विषयासक्ति थी। फिर भी गुरुकृपा से वह गीता सुन सके। यह दर्शाता है कि कृपा से श्रवण संभव है, भले ही अंतःकरण शुद्ध न हो।

धृतराष्ट्र वह बाह्य और आंतरिक अन्धता के प्रतीक हैं। उन्होंने गीता सुनी, पर कोई परिवर्तन नहीं हुआ। संत ज्ञानेश्वरजी ने उन्हें पामर श्रोता कहा है— जो सुनते हैं, पर हृदय तक कुछ नहीं पहुँचता।

एक उद्घोषणा गीता सभी के लिए है—श्रेष्ठ और सामान्य, ज्ञानी और जिज्ञासु, आस्थावान और संशयी। समझें या न समझें, गीता पढ़ते रहना चाहिए, क्योंकि यह आत्मोद्धार और राष्ट्रोद्धार दोनों का मार्ग है।
श्रीमद्भगवद्गीता के तत्वज्ञान को जानना आज के युग में अनिवार्य है।

महामहोपाध्याय स्वामी भद्रेशदास जी

आज *LearnGeeta* और गीता परिवार के दर्शन कर मैं अत्यंत भावविभोर हूँ। यह मेरे जीवन का धन्य क्षण है—जहाँ मुझे यह आश्वासन मिला है कि सनातन धर्म का भविष्य उज्ज्वल है। मैं निश्चिंत और सुखी हूँ, क्योंकि यह संगठन न केवल गीता का प्रचार कर रहा है, अपितु जीवन में उसका अवतरण कर रहा है। आप मुझे भी विद्यार्थी के रूप में स्वीकार कीजिये।

स्वामी विग्यानंद जी महाराज

आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि हम आने वाली पीढ़ी को संस्कार प्रदान करें। भगवद्गीता का अध्ययन और उसका प्रचार-प्रसार इस दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस महत्कार्य में गीता प्रेस, इस्कॉन, स्वामी चिन्मयानंद जी महाराज के साथ-साथ गीता परिवार भी उल्लेखनीय योगदान दे रहा है।

परम पूज्य स्वामी निरंजनानंद सरस्वती जी महाराज

स्वामीजी की प्रेरणा से जो कार्य हो रहा है, वह निश्चित रूप से भारतीय संस्कृति के उत्थान का एक महत्वपूर्ण कारण है और यह वास्तव में अद्भुत है। आपकी प्रगति देखकर मुझे आंतरिक प्रसन्नता हो रही है और विश्वास है कि आप प्रभु द्वारा निर्देशित मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ने का प्रयत्न करते रहेंगे।

पुस्तकें पढ़ने से मनुष्य केवल तोता बनता है, परंतु सेवा करने से वह हनुमान बन जाता है। इसलिए प्रभु की सेवा ही जीवन का अंतिम ध्येय होना चाहिए।

प.पूज्य आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी पुण्यानंद गिरीजी महाराज

आपके पवित्र उद्देश्य को आशातीत सफलता प्राप्त हो और उसमें निरंतर वृद्धि होती रहे— यही मेरी हार्दिक शुभकामना है।

परमपूज्य स्वामी श्री सवितानंद जी महाराज

राष्ट्र की सुरक्षा और संतुलन के लिए गीता अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। चाहे वह राष्ट्रपति हों या प्रधानमंत्री—जो भी राष्ट्र का सर्वेसर्वा हो—उन्हें भगवद्गीता का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। जीवन में संतुलन बनाए रखने की शिक्षा हमें केवल गीता ही दे सकती है।

पूज्य युवाचार्य स्वामी श्री अभय दास जी महाराज

महामृत्युंजय मंत्र कहता है:

"ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥"

इस मंत्र के तीसरे चरण में जैसे खरबूजा पकने पर डंठल से स्वतः ही अलग हो जाता है, उसी प्रकार मुझे लगता है कि गीता संथा वर्ग में बार-बार अध्ययन करने से जो जीवन-शुद्धिकरण हो रहा है, उसके परिणामस्वरूप आप भी एक दिन इस तप के प्रभाव से सभी बंधनों से स्वतः ही मुक्त हो जाएंगे।

Param Pujya Shri Adwayanand ji Maharaj

I am truly amazed to see so many sadhaks, from numerous countries and diverse age groups, learning the Geeta across multiple time slots and reciting it so beautifully—whether charan-wise,

shloka-wise, or even in mixed sequences! Such an extraordinary feat cannot be the result of a single individual's wishes alone. I feel that Bhagavan Shrikrishna is once again manifesting in a unique way through Geeta Pariwar and all the dedicated sevaks, under the able guidance of Swami Govind Deo Giri Ji. This is indeed His divine will and action.

पूज्य गोरांगदास जी महाराज

गीता के पाठ, श्रवण, चिंतन, कीर्तन और चर्चा के संदर्भ में विश्वभर के विद्यार्थियों के बारे में सुनकर मैं अचंभित रह गया। इस घनघोर कलियुग में भी गीता के ज्ञान को प्रज्वलित रखने के लिए कोटि-कोटि प्रणाम और साधुवाद।

सुधांशु जी महाराज

परम पूज्य गोविंद देव गिरी जी महाराज तो एक चलती-फिरती संस्था हैं। गीता परिवार में उन्होंने केवल गीता का दीपक ही नहीं जलाया, बल्कि सबको कृष्णमय बना दिया है। इतना सुंदर कार्य देखकर मन आनंद से भर गया। जो भी स्वामीजी के अनुशासन, अनुकरण और अनुचरण में हैं, उन्हें मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

स्वामी श्री जितेंद्र नाथजी महाराज

लर्न गीता मात्र गीता रटाने का प्रयास नहीं है, बल्कि जीवन-परिवर्तन का एक महान यज्ञ है। गीता के अनमोल वचनों, उसके सार और उसके भावों को धारण करते-करते जीवन में कितने ही क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। राज्यरक्षा और राष्ट्ररक्षा की सेनाएँ तो देखी थीं, परंतु अध्यात्म और संस्कृति के क्षेत्र में नीति, मूल्य और सिद्धांतों की रक्षा के लिए इतनी विराट सेना कभी देखी नहीं थी।

डॉ. साध्वी देव प्रिया

आज हम 21वीं सदी में जीवित हैं, जहाँ विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने अद्वितीय उन्नति की है। भौतिक उपलब्धियाँ पहले श्रम और समय से प्राप्त होती थीं, लेकिन विज्ञान ने इस दूरी और विलंब को समाप्त कर दिया है। परंतु, इस तेजी में हमने अध्यात्म और भावनात्मकता में कुछ खो दिया है। आज व्यक्ति ऐसे बगीचे की कामना करता है, जहाँ पेड़ पर फल और फूल खिल रहे हों, लेकिन बिना जड़ों को सींचे यह पल्लवित पौधा संभव नहीं है।

गीता परिवार के माध्यम से भगवद्गीता हमें इन जड़ों को सींचने की प्रेरणा देती है, ताकि हमारा जीवन रूपी वृक्ष अत्यंत पल्लवीत और पुष्पित हो सके। साधुवाद और अभिनंदन।

परम पूज्य स्वामी बजरंग देव जी महाराज

जैसे कुंभ मेला देखकर मन अल्हादित होता है, वैसे ही गीता पाठ के लिए मीटिंग मे प्रवेश न मिले, इतनी बड़ी भीड़ देखकर अत्यंत हर्ष हुआ। सभी कर्मयोगियों को विशेष अभिनंदन।

पूर्वकाल में किसी शुभ कार्य के लिए दक्षिण से श्रीफल उत्तर भेजा जाता था और गंगाजल उत्तर से दक्षिण ले जाया जाता था। उसी प्रकार, कुरुक्षेत्र में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिया, वह आज गीता के माध्यम से पूरे भारत और भारतीय संस्कृति को जोड़ रहा है। Learn Geeta तो इसे विश्व स्तर पर भी जोड़ रहा है।

श्री गोविंदा नंद सरस्वती महाराज जी

गीतायाः पुस्तकं यत्र यत्र पाठः प्रवर्तते। तत्र सर्वाणि तीर्थानि प्रयागादीनि तत्र वै॥

अर्थात, जहाँ भी श्री गीता की पुस्तक होती है और जहाँ गीता का पाठ होता है, वहाँ प्रयाग आदि सभी तीर्थ निवास करते हैं।

स्वामी दाता श्री रमेश्वरानंदजी

स्वामी गोविंद देव गिरी जी महाराज केवल राष्ट्रसंत ही नहीं, बल्कि विश्वसंत के रूप में भी उभरे हैं। गीता परिवार और पूरी टीम के इस कार्य के लिए कोटि-कोटि साधुवाद।

मानस भूषण डॉ. सुमनानंद गिरीजी महाराज, महामंडलेश्वर

संदीपनी ऋषि की भूमिका की तरह, इस युग में भी स्वामी गोविंददेव गिरी जी महाराज अनेक कृष्णों को तैयार कर रहे हैं। यही कारण है कि गीता परिवार के उपक्रम से शौर्यबोध और धर्मबोध अबाधित रहेगा।

श्री संविदानंद सरस्वती जी

विश्व के समस्त लोगों को भगवद्गीता पढ़ाने का यह अद्भुत और अलौकिक कार्य लर्न गीता के माध्यम से किया जा रहा है। निःसंदेह इसे विश्व का आठवाँ आश्चर्य कहा जा सकता है।

प्रवीण चतुर्वेदी जी

भगवद्गीता मानवता की परंपरा और विश्व के लिए सर्वोत्तम योगदान है। लर्नगीता का ऑनलाइन गीता संथा वर्ग अभियान अद्वितीय और अत्यंत आनंददायक है। आज ही मैंने भी लर्नगीता में पंजीकरण कराया है। वर्तमान के *narrative wars* घर-घर तक पहुँच चुके हैं। ऐसे समय में हमें सजग, सतेज और संगठित रहने की आवश्यकता है, और लर्नगीता इस दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

स्वामी स्वात्मानंदजी महाराज

The **Bhagavad Gita** is the essence of wisdom. It explains the mysteries of life and the universe, while also showing us how to face and solve our problems. By learning the Gita, today's younger generations can reconnect with their roots, and even people from other cultures—including agnostics—can experience transformation and inner light.

स्वामी चित्प्रकाशनंद जी

गीता रुपी देवी को पढने से षड् रिपू काम क्रोध मोह, मत्सर, लोभ, मद, नामक राक्षस का नाश हो जाएगा और वह साधक को स्वानंद का चक्रवर्ती सम्राट बना देगी।

स्वामी अनंत दास जी

मुझे अत्यंत आनंद हो रहा है कि आप सभी भगवद्गीता का अभ्यास कर रहे हैं। अभ्यास करने के उपरांत यह अनुभव होता है कि जिन तत्वों की खोज पाश्चात्य विद्वान कर रहे हैं, उनका वास्तविक स्रोत हमारे वैदिक शास्त्रों और विशेषकर गीता में ही निहित है। आप सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2025-06/hmaare-pthprdrshk/aashiirvcn/

01

०१ हमारे पथप्रदर्शक

गीता परिवार (Learn Geeta) के पथ का लक्ष्य

गीता की यह एक अद्वितीय यात्रा है। इसके अनेक आयाम है किंतु, महत्वपूर्ण आयाम क्या हो सकता है इसका मंथन करने का यह एक प्रयास है।

गीता विदुषी सौ. वंदना जी वर्णेकर ५ मिनट पठन

महाराष्ट्र के महानतम संत प्रज्ञा चक्षु संत गुलाबराव महाराज (जिन्हे परमपूज्य सद्गुरु स्वामी गोविंद देवगिरी जी महाराज सर्वश्रेष्ठ जगद्गुरु के रूप मे देखते है) ने 150 वर्ष पूर्व की हुई अभूतपूर्व भविष्यवाणी आज सत्य प्रतीत हो रही है। उन्होने कहा था, “एक दिन संपूर्ण विश्व का धर्मग्रंथ श्रीमद्भगवत गीता बनेगी”।

प.पू. गुरुदेव की प्रेरणा से Learn Geeta के माध्यम से गत पंच वर्षों में विश्व के 180 देशों के 12 लाख गीता साधकों के कंठों से आज गीता के श्लोकों के शुद्ध उच्चारण के साथ होने वाला गुंजन इसका प्रमाण है। हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी उनके कार्यकाल के प्रथम वर्ष मे जिस भी देश मे गये वहां के राष्ट्रप्रमुख को श्रीमद्भगवद्गीता की अर्थ सहित प्रतियां उपहार रूप देकर यह कहा कि, “मैने गीता का उपहार दिया है, क्योंकि मेरे पास इससे बढ़कर देने के लिए कुछ नही हैं और दुनिया के पास भी इससे बढ़कर पाने को कुछ नही है।”

सद्गुरु देव के अपूर्व संदेश “हर घर गीता, हर कर गीता” का मूल उद्देश्य है दैवी संपदा युक्त, ईश्वर के प्रति निष्ठा से परिपूर्ण, जीवन को सार्थक करने की चाह रखने वाले विश्व के हर कोने में बसे सज्जन शक्ति को एक सूत्र में पिरोना।

मत्तः परतरं नान्यत्, किञ्चिदस्ति धनञ्जय।

मयि सर्वमिदं प्रोतं, सूत्रे मणिगणा इव॥|

श्लोक सुनें ७.७

(गीता अध्याय 7,श्लोक7)

वस्तुतः भगवान कहते है कि सारे विश्व को मैंने एक सूत्र मे पिरोया है, आज केवल सज्जनशक्ति के अंतर्योग की जागृति का समय आया है।

योग शब्द का व्यावहारिक सरल अर्थ है एकाकारिता, एकाग्रता, लयबद्धता, तन्मयता। वस्तुतः यह योग बाल्यकाल से हर व्यक्ति में होता है। एक बालक एकाग्रता से खेल खेलता है; नृत्यांगना अपनी भूमिका से एकरूप होकर नृत्य करती है; गायक तन्मयता से संगीत की आराधना करता है; एक शास्त्रज्ञ एकाकार होकर तत्त्वों को खोजता है; देशप्रेमी मातृभूमी के साथ लयबद्ध होकर राष्ट्रसेवा करता है। जीवन के किसी भी लक्ष्य को पाना है तो उसके साथ योग युक्त होना पड़ता है। इस तन्मयता के बिना जीवन के अनुपम तत्वों की, कलाओं की, प्रेम की, शास्त्र संशोधन की अनुभूति पाना और माध्यम बन उन्हे प्रकट कर पाना असंभव है। मनुष्य के द्वारा सृष्टी के अद्भुत कार्य संपन्न होने का कारण यह योग कला ही है। एक अर्थ से योगयुक्तता कर्म से तादात्म्य या अनुसंधान की प्रक्रिया है। किन्तु गीता का योग कर्म के अनुसंधान तक सीमित नहीं है, गीता को उससे भी दिव्य योग की अपेक्षा है।

यतःप्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्व मिदं ततम् |

स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः ||

(गीता अध्याय 18 श्लोक 46)

जिस परमात्म-तत्त्व से भूत मात्रों की निर्मिती हुई, जिसने सृष्टी के कण-कण को व्याप्त किया है उसकी कर्म से अर्चना करने से कोई भी मनुष्य परम सिद्धी को प्राप्त कर सकता है। यह गीता का परम दिव्य योग है। यहाँ जाति, संप्रदायों के सारे भेद समाप्त हो जाते हैं।

गीता में भगवान इस योग के अनेक रंग प्रकट करते हुए भक्तियोग, ज्ञानयोग, ध्यानयोग, कर्मयोग आदि का प्रतिपादन करते हैं। प्रत्येक योग एक दुसरे से जुड़ी पंखुड़ियों के समान है। एक पंखुड़ी को पुष्प से विलग किया तो पुष्प का सौंदर्य ही समाप्त हो जाएगा। जिस प्रकार एक कलाकार या वैज्ञानिक का अपने ध्येय से भावना के साथ जुड़ना अर्थात भक्तियोग हुआ। इसीप्रकार उसका ज्ञान पाना; ज्ञानयोग, संसार के अन्य विषयों को छोड उसी का चिंतन करना; ध्यान योग, इसके लिये सांसारिक मोह त्यागना; आत्मसंयमयोग, और निरंतर उस ध्येय के लिए कार्य करना; कर्मयोग ही है। किन्तु यह सारी प्रक्रियायें सृष्टि के नियंता के अनुसंधान में, उसके साथ योगमय होकर करना यही गीता के कृष्ण वचनों का परमयोग है। इसमें अभ्युदय याने भौतिक उन्नति और नि:श्रेयस् याने आत्मिक शांति अंतनिर्हित है।

सर्व कर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः|

मद्प्रसादादवाप्नोति शाश्वती पदमव्ययम् ||

(गीता अध्याय 18 श्लोक 56)

मेरे आश्रय से कर्म करने वाला कर्मयोगी मेरे प्रसाद रुपी शाश्वत परम पद की प्राप्ति करता है।

सद्गुरु देव कहते हैं, “महाभारत के अलोक में गीता का चिंतन करते हुए भगवान श्रीकृष्ण के मन में जो गीता का अर्थ है, वह जानने का प्रयास ही गीता जानना है।”

इसलिए गीता का अध्यापन करवाते समय वे बालकों में अर्जुनत्व को जागृत करने के लिए, अर्जुन में निहित दैवी संपत्तियों के गुणों का बोध कराने के पक्षधर हैं। उनके द्वारा प्रदत्त इस अमृत-पाथेय को लेकर गीता परिवार Learn Geeta के माध्यम से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर है।

गीता के इस परम दिव्य योग से संकुचितता की दीवारें ढह जाएँगी और *“वसुधैव कुटुंबकम्”* की अनुपम कल्पना प्रत्यक्ष रूप में साकार होगी — यही गीता परिवार का अंतिम गंतव्य है।

अगणित गीता दीपों से आलोकित हो आकाश,

गीता ज्ञानदीप से अंतरंग भरे प्रकाश |

दीपवत् स्वयं जलें, भरें प्रकाश से दिगंत,

हम कदम-कदम चलें, गीता के महान पंथ ||

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/hmaare-pthprdrshk/giitaa-privaar-learn-geeta-ke-pth-kaa-lkssy/

01

०१ हमारे पथप्रदर्शक

मामनुस्मर युध्य च

5 min read

Senior Trainer Vikas Vaidya ji, Pune

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च। मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् ॥ ८-७॥

श्लोक सुनें ८७

The literal meaning of this Shlok is: "Therefore, always remember Me and also do your duty of fighting the war. With mind and intellect surrendered to Me, you will definitely attain Me and, there is no doubt about it".

As we reflect deeply on the Bhagavad Gita's teachings, we discover profound life-changing insights that can transform our existence. One such pivotal Shloka is तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च (BG 8.7). This verse encapsulates the essence of the Gita's teachings, emphasizing the importance of balancing Bhakti Yoga (devotion to God) with Karma Yoga (performing prescribed duties).

Mam Nusmar (Remembering God) is Bhakti Yog and Yudhyach (performing prescribed duty) is Karma Yoga. So, by remembering God and fulfilling our duties, we can cultivate a harmonious balance between spiritual growth and worldly responsibilities. This verse highlights that the Gita doesn't advocate worshiping God only(bhakti) by abandoning our duties(Karma), but rather advises performing them with dedication, detachment, and a sense of purpose while remembering God. And this has to be a continuous process.By remembering God in every mundane chores, while walking, eating, working, sleeping, travelling, in happiness,and also in distress, HE gets established in our karma

We need to surrender our mind and intellect to God and perform our duties keeping God as a witness who will then gradually(शनैः शनै) pave a path for us in every step ahead.

As we embark on this spiritual journey, it's essential to start by performing our prescribed duties by cultivating the habit of remembering God.As we work, we can gradually increase the oscillations (andolans) of God's name in our mind till we reach a state where we can keep remembering God (chintan) at all times, with His name resonating gently in our mind.

This remembrance shouldn't be a mechanical process, but rather a deep-seated feeling (Bhav) that God is always with us, guiding our every action. We should strive to develop a sense of reverence, acknowledging that every breath we take and every action we perform is done by His grace. Every action will become infused with a sense of divine purpose.This will take us to the

level of ultimate, supreme, paramount love for God in our mind and then God's imprint/his presence, we can start experiencing in our Karm.

As we navigate the journey of life, often shrouded in uncertainty, we can rely on the guiding light of God's presence. Just as a torch in the darkness illuminates the path ahead, God's guidance will reveal the next steps as we take them. By moving in the direction of God, taking His name, and performing actions for Him, we'll find our way unfolding.

Like a child learning to walk, we may stumble but like a supporting mother we'll discover that God's helping hand is always there, supporting us through life's challenges. When we surrender our mind and intellect with this confidence and have deep faith in God, we will attain him without doubt. And that is ShriKrishna's promissory note to us.

ShriKrishna's message is clear: "Keep your mind attached to Me and do your worldly duties with your body." This universal principle, of engaging both our mind and body, applies to people from all walks of life – doctors, engineers, lawyers, housewives, students, and more. In Arjuna's case he was a warrior and his duty was to fight. So he had been instructed to fulfil his duty while keeping his mind fixed on God.

Some people neglect their worldly duties under the excuse that they are now on the path of spirituality. Others excuse themselves from spiritual practices on the pretext of focusing on their worldly engagements. Geeta says both think improperly. When we practice such Karma Yoga as instructed by ShriKrishna (Mamanusmar Yudhyach), worldly works will not suffer because the body is actively engaged in them. But since the mind is attached to God, these actions will not bind one as per the law of Karma. Only those activities result in Karmic reactions which are performed with attachment. When that attachment does not exist, even worldly law does not hold one a culprit/ an offender. For example, let us say that one person killed another man and was brought to court.

The judge asks the man: Did you kill that man?

The man replies: Yes, your honour, I confess that I killed him,so witness not needed

The judge exclaimed: Then you should be punished!

The man replies : No, your honour, you cannot punish me.

Judge : Why??

Man replies: I had no intention to kill. I have been an experienced driver. While I was driving carefully on the proper side of the road, within speed limits, with my eyes focused ahead, my brakes, steering, everything was perfect, that man suddenly ran in front of my car. What could I do?

If the lawyer of that man can establish that the intention to kill did not exist, the judge will let him off even without the slightest punishment.

From this example, we see that even in this world we are not held accountable for actions performed without attachment. The same principle applies for the Law of Kama as well.

Arjuna's experience on the battlefield illustrates this principle. Despite being engaged in a fierce battle, his mind was attached to ShriKrishna, and he didn't accrue any bad Karma.Had he been fighting the battle with attachment to worldly gain or fame, bad karmas would have been accrued to him. He was performing his duty with zero attachment so he wasn't bound by his karma.

Just as *x multiplied by 0 is always = 0*,

His actions multiplied by no attachment i.e. zero = No Karma

This shloka, if followed in our daily life will lead us to Moksha.

By dedicating our mind to God and performing our duties without attachment, we can live a life of purpose and spirituality, free from the burdens of Karma.

Remember Saint Kabir's beautiful Doha to remember the message of this Shloka:

Sumiran ki Sudhi yon karo, jyaun gagar panihara
Bolat dolat surati me, kahe Kabira vichar.

Remember God just as the village woman remembers the water pot on her head. She speaks with others and walks on the path, but her mind keeps holding onto the pot on her head.

Shri Krishnarpanamastu

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/hmaare-pthprdrshk/maamnusmr-yudhy-c/

01

०१ हमारे पथप्रदर्शक

वन्दे मातरम् !

८ मिनट पठन

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" यह हमारी भारतीय धारणा है। हमारे लिये हमारी भूमि जड पदार्थ नहीं है। वह साक्षात चैतन्यमयी जननी है। हमारा इस भूमाता से सदियों पुराना बडा गहरा संबंध है। जब जब इस राष्ट्र के ऊपर संकट के बादल मंडराये तब तब इस भूमि के लाडले सपूतों ने अपनी माता की लाज रखने के लिये अपने शीश रणयग्य में अर्पण कर दिये। भारतीयों की भारतीयता उनके इसी मातृवत्सलता में संनिहित है। हमने अपनी भूमि को न केवल माता कहा अपितु उस माता को साक्षात् जगज्जननी जगदंबा का स्वरूप माना। भारत की रग रग में बहनेवाले इस मातृभक्ति को शब्दों के माध्यम से मुखर करनेवाला महामंत्र है "वन्दे मातरम्" !

"वन्दे मातरम्" गीत वंगभूमि के सुपुत्र स्व. बंकिमचंद्र चटोपाध्याय की आनंदमठ नामक वीररस से ओतप्रोत उपन्यास का एक हिस्सा है। वैसे देखा जाए तो यह गीत बंकिमबाबू पहले ही लिख चुके थे, उपन्यास लिखने के बाद वह उसका हिस्सा बना। इस गीत का महत्त्व भारतीय स्वाधीनता-संग्राम में अभूतपूर्व है। जो प्रेरणा यह गीत आज भी जगाता है वह तो हम जब जब गाते हैं तब तब अनुभव करते ही है। इस गीत का हर शब्द भारतमाता के भक्तिरस से भरा हुआ है।

एक संस्कृत कवि कहते हैं,

लौकिकानां हि साधूनाम् अर्थं वागनुवर्तते।
ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति॥

अर्थात् सामान्य कवियों की वाणी अर्थ के पीछे भागती है, लेकिन ऋषियों की वाणी के पीछे अर्थ स्वयं दौडता हुआ चला आता है ! सच कहूं तो यह गीत मानवीय प्रतिभा की उपज तो लगता ही नहीं। यूं लगता है कि जैसे यह वेदों में आनेवाला कोई सूक्त हो ! इसी लिये स्वयं महायोगी श्री अरविंद बंकीमबाबू को "ऋषि बंकिम" कहा करते। वास्तव में भारतमाता के साथ आंतरिक एकात्मता हुए बिना "वन्दे मातरम्" जैसी रचना लिखी जाना भी संभव नहीं और समझ में आना भी संभव नहीं। बंकिमबाबू स्वयं जगदंबा के उपासक रहे। सन १८७५ की वह नवरात्रि कुछ विशेष थी। पराधीनता से व्यथित बंकिमबाबू अपनी गहरी भावसमाधि में थे। तभी ७ अक्तूबर १८७५, अश्विन शुद्ध अष्टमी के दिन उन्हों ने अपने मनश्चक्षु के समक्ष भारतमाता का वह दिव्य रूप देखा जिसका उन्होंने अपने गीत में वर्णन किया है। उस दिन से एक अलग सी धुन उन्हें लग गई। और इसी चिंतनप्रवाह के फलस्वरूप एक मास के अंतराल में ७ नवंबर १८७५, कार्तिक शुद्ध नवमी (अक्षय नवमी) के शुभदिन उन्हों ने इस गीत की रचना को साकार किया। लेकिन यह गीत जनमानस तक पहुंचने में कुछ वर्ष और बीत गये। बंगाल में प्रकाशित होनेवाली "बंगदर्शन" नामक पत्रिका में बंकिमबाबू द्वारा लिखित उपन्यास "आनंदमठ" सन १८८० से १८८२ तक क्रमशः प्रकाशित होता रहा। इसी उपन्यास के माध्यम से यह गीत लोगों तक पहुंचा। फिर भी जिस उद्देश से यह गीत लिखा गया था वह साध्य होता हुआ नहीं दीख रहा था। बंकिमबाबू चाहते थे कि यह गीत लोगों में नई ऊर्जा को जगाएं। एक पत्र में वे अपने एक मित्र से कहते हैं, "मैंने तो लिखा है वन्दे मातरम्, लेकिन लोगों की वृत्ति तो "वन्दे उदरम्" बन गई है !" अर्थात् सब के सब केवल पेट पालने में लगे हुए है। किंतु उन्हें विश्वास था यह क्रांति का बीज अवश्य अंकुरित होगा। आगे चलकर जब वंगभंग आंदोलन हुआ तब यह गीत वास्तव में जन जन के कंठ में सांसों की तरह घुल मिल गया।

अंग्रेजों के दीर्घकाल तक चलें स्वाधीनता-संग्राम में हमारे वीर पूर्वजों ने प्राण दांव पर लगा दिये। एक ओर तो दुष्ट शासकों के द्वारा निर्ममता से दमन चल रहा था तो दूसरी ओर देशभक्तों की भुजाएं क्षात्रतेज से आस्फुरित हो रही थी। वह एक ऐसा प्रतिकूल समय था जब हम अपनी ही मां की गोदी में सुखपूर्वक नहीं बैठ सकते थे। चारों ओर मानों घना अंधेरा छाया हुआ था। लेकिन उस अंधेरे को चीरती हुई एक ऋषितुल्य महाकवी की वाणी गूंज उठी, "वन्दे मातरम्" !

“वन्दे मातरम्” मात्र दो शब्द नहीं थे, यह था वेदों में संनिहित राष्ट्रीयता का तेजोमय आविष्करण ! जिस जिस ने पुत्र के रूप में अपने कर्तव्य को जाना, अंधकारमय वर्तमान में भी उज्ज्वल भवितव्य के अंकुर को पहचाना उस हर योद्धा के हाथ में पांचजन्य बना “वन्दे मातरम्” ! जिस जिस ने अपने राष्ट्रजीवन को नीजी जीवन से ऊपर रखा, देश के लिये मर कर अमर होना सीखा उस हर वीर के रोम रोम से जो गूंज उठा “वन्दे मातरम्” !

“आनंदमठ” उपन्यास, जिस में यह गीत आता है, इस में संन्यासियों के द्वारा स्वाधीनता के लिये की गई सशस्त्र क्रांति की कथा वर्णित है। ये सब के सब संन्यासी अपने आपको संतान कहलाते हैं। मां भारती के संतान। इन सभी का एकमात्र लक्ष्य है, मातृभूमि को आक्रांताओं के चंगुल से मुक्त कर हिंदुराष्ट्र की स्थापना करना। इसमें एक पात्र है महेंद्र, जो अपने परिवार से बिछड गया है। उन राष्ट्रभक्त संन्यासियों में से एक है भवानंद, जो महेंद्र से मिलता हैं और आगे चलकर वही उसको अपने परिवार से भी मिलाता है। एक प्रसंग में भवानंद महेंद्र को एक गुप्त स्थान में ले जाता है जहां वह उसे अपनी आराध्या भारतमाता का वह दिव्य स्वरूप श्रीविग्रह के रूप में दिखाता है जिसकी मुक्ति के लिये उसके सभी संतान लड रहे हैं। कैसी है वह माता ? उसीका वर्णन इस गीत में किया गया है।

इस गीत की रचना का यह १५० वा वर्ष अर्थात् शतकोत्तर सुवर्ण महोत्सव चल रहा है। हमें चाहिये की अधिक से अधिक कंठ इसे गायें तथा अधिक से अधिक हृदयों में इसका भाव झंकृत हो जाये इसके लिये हर संभव प्रयास करें !

भारत को वास्तव में जानने के लिये वास्तव में हमे अपने भीतर भारत का दर्शन करना होगा। हमारे पूर्वप्रधानमंत्री स्व. अटलजी ने जिस प्रकार कहा था, “भारत कोई जमीन का टुकडा नहीं, यह जीता जागता राष्ट्रपुरुष है !” वास्तव में भारत कैसा है ? उसे कैसे जानें ?

रेखाओं छायाचित्रों में खोज नहीं पाओगे भारत..

अंतरंग अरविंद बनाओ, बिन खोजे पाओगे भारत !

हम भी वन्दे मातरम् के अंत:स्थ भाव को भीतर उतारे और भारतमाता को विश्वगुरुपद के उच्चासन पर विराजित करने के लिये वचनबद्ध हो जाएं।

वन्दे मातरम्.. वन्दे मातरम्...

सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्..

सस्यश्यामलां मातरम्.. वन्दे मातरम्

मैं उस भारतमात को प्रणाम करता हूं..

जो जलसंपदा से संपन्न है, फल-फूलों से सुशोभित है, मलयपर्वत से होकर बहनेवाली वायु के सुखस्पर्श से जो शीतल है..

जो नई नई फसल से श्यामल प्रतीत होती है.. उस मात अको प्रणाम !

शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनीम्

फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीम्

सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम्

सुखदां वरदां मातरम्.. वन्दे मातरम् ..१

जिसकी रात्रियां चंद्रमा के शुभ्र तेज से रोमांचित है,

खिले हुए फूलों से सजी वृक्षों की डालियों से जो सुशोभित है,

जो मंद मधुर स्मितहास्य कर रही है, जो मधुर वचनों से युक्त है,

उस सुखदात्री, वरदात्री माता को प्रणाम !

कोटिकोटिकण्ठ-कलकलनिनादकराले

कोटिकोटिभुजैर्धृत-खरकरवाले

अबला केन मा एत बले

बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्

रिपुदलवारिणीं मातरम्.. वन्दे मातरम्.. ..२

जो कोटि कोटि कंठों से उद्घोषित नाद के कारण भीषण प्रतीत हो रही है,

जिसने अपनी संतानों की कोटि कोटि भुजाओं के माध्यम से तीखे खड्गों को धारण किया है,

वह मां अबला कैसे हो सकती है ?

वह तो अपार बल रखनेवाली है ! उस तारिणी को प्रणाम !

शत्रुओं का संहार करनेवाली मां को प्रणाम !

तुमि विद्या तुमि धर्म तुमि हृदि तुमि मर्म

त्वं हि प्राणा: शरीरे बाहुते तुमि मा शक्ति

हृदये तुमि मा भक्ति

तोमारई प्रतिमा गडि मन्दिरे-मन्दिरे मातरम्.. वन्दे मातरम् ..३

तुम विद्या हो, तुम धर्म हो तुम हृदय में विराजित हो, तुम सभी शास्त्रों का मर्म हो !

तुम ही हमारे देह में बसनेवाले प्राण हो, तुम ही भुजाओं में बसनेवाला बल हो !

हृदय में खिलनेवाली भक्ति भी तुम ही हो !

हर मंदिर में तुम्हारी ही मूर्ति विराजित है !.. मां तुम्हें प्रणाम !

त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी

कमला कमलदलविहारिणी

वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्

नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्

सुजलां सुफलां मातरम्.. वन्दे मातरम् ..४

तुम ही दसों भुजाओं में शस्त्र धारण करनेवाली मां दुर्गा हो !

तुम ही कमलपुष्प में विराजमान मां लक्ष्मी हो !

तुम ही विद्या देनेवाली मां सरस्वती हो ! तुम्हें प्रणाम !

उस कमला को प्रणाम, जो निर्मल एवं अतुलनीय है,

जल से समृद्ध, फल-फूलों से संपन्न उस माता को प्रणाम..

श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषितां

धरणीं भरणीं मातरम्.. वन्दे मातरम्... ..५

जो सांवले रंग की है, सरल है, मंद मंद मुस्कुरानेवाली है, सजी-धजी हुई है,

जो धरतीमाता अपनी संतानों का भरण-पोषण करनेवाली है, उस माता को प्रणाम !

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/hmaare-pthprdrshk/vnde-maatrm/

02

इतिहास और विकास (2020–2025)

॥ श्री गणेशाय नमः॥ पृष्ठ ३०

Marking a Milestone पृष्ठ ३३

॥ श्री गणेशाय नमः॥

९ मिनट पठन • १ चित्र



२०२० से २०२५ तक गीता परिवार की वृद्धि दर्शाता आँकड़ा-चित्र — ३ से १३ भाषाएँ, २५०० से १२.५ लाख साधक, १ से १८० देश।

सन 2020..

हर तरफ मायूसी, निराशा का माहौल .. कोरोना वायरस अज्ञात शत्रु की तरह इंसानों के जीवन पर काल बनकर व्याप्त हो रहा था।

हर तरफ से प्राप्त नकारात्मक सूचनाये मानव मन को व्यथित कर रही थी। ऐसे असमंजस के माहौल में एक आवाज ने सबके मन में ऊर्जा भर दी ..

यह आवाज आ रही थी गीता परिवार से ..**"आओ गीता सीखें "**

और फिर जैसे हर व्यक्ति को संजीवनी मिल गई।

जिस किसी के पास यह ऑनलाइन जुड़ने के लिए लिंक पहुंची वह अपने आप को भाग्यवान मानने लगा।
मात्र दो दिन में 2000 से ज्यादा लोगों ने रजिस्ट्रेशन करवा लिया। लगभग हर उम्र के लोगों ने रजिस्ट्रेशन करवाया जिसमें महिलाओं की संख्या ज्यादा थी।

सघन वन में हवाओं की सायं सायं के बीच जैसे किसी ने बांसुरी की धुन छेड़ दी हो ऐसा सभी को प्रतीत हो रहा था। हर तरफ चर्चा का विषय था कि गीता परिवार द्वारा ऑनलाइन गीता जी के श्लोक सिखाए जा रहे है। लोगों को संशय था कि हमें पढ़ना आयेगा या नहीं क्योंकि हमें तो संस्कृत ही नहीं आती ..लेकिन जब पढ़ना / पढ़ाना आरंभ हुआ तो देखते ही देखते दो हजार की संख्या बीस हजार में बदल गई। और आज 2025 में हम बारह लाख के पार है।

आइए, जानते है इन पांच वर्षों की यात्रा के हर छोटे – बड़े पड़ाव के बारे में जिसमें आप जैसे साधकों का भी योगदान है।

एक घोष वाक्य से नवचेतना

परम पूज्य गुरुदेव के प्रेरणादायी घोषवाक्य – **"गीता पढ़ें, पढ़ाएँ, जीवन में लाएँ"** – ने असंख्य हृदयों में नवचेतना का संचार किया। इसी प्रेरणा से, स्वामीजी के कृपापात्र शिष्य एवं लखनऊ निवासी, गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष (वर्तमान में अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष) **डॉ. आशू गोयल**

ने एक अद्भुत संकल्प लिया — "जन-जन तक गीता का संदेश पहुँचाना और गीता को सरलता से सिखाना।"
यह संकल्प सुनते ही गीता परिवार के हर कोने में उत्साह की लहर दौड़ गई।

यद्यपि गीता परिवार पिछले 35 वर्षों से देशभर में सेवा कर रहा था — बच्चों में संस्कारों के बीज बोना, बड़ों को जीवन में गीता का मर्म अपनाने की शिक्षा देना — फिर भी समय की पुकार अलग थी। विभिन्न स्थानों पर विशेषज्ञों द्वारा गीता का ज्ञान दिया जाता रहा, लेकिन अब आवश्यकता थी कि यह अमृत ऑनलाइन माध्यम से हर घर तक पहुँचे।

आशू भैया ने हार न मानते हुए टीम बनाई, व्हाट्सएप और झूम से जुड़ने की सरल वीडियो गाइड तैयार की, और साधकों को भेजी। साथ ही, प्रशिक्षकों की खोज भी पूरी तत्परता से शुरू हुई। राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष **डॉ. संजय मालपाणी,** गीता परिवार की हमारी **स्वर कोकिला आ.सुवर्णा मालपाणी जी,** नागपुर निवासी **श्री श्रीनिवास वर्णेकर व श्रीमती वंदना वर्णेकर** जैसे समर्पित सहयोगियों के साथ मिलकर 45 प्रशिक्षकों की सशक्त टीम खड़ी हुई। उतने ही जोशीले 45 तकनीकी सहायकों का दल भी साथ आया।

फिर आया प्रचार का दौर — व्हाट्सएप लिंक, झूम लिंक, और सोशल मीडिया के जरिए हर कोने में यह संदेश फैलाया गया। परिणाम अद्भुत रहा — शुरुआती दौर में ही हिंदी भाषा के 45 वर्गों में 45 प्रशिक्षक, 45 तकनीकी सहायक और 2500 साधक जुड़ गए।

इस अप्रत्याशित और अपार प्रतिसाद ने सभी का उत्साह दोगुना कर दिया। इसके बाद तो हर दो महीने में नवाचार और सुधार होते गए — साधकों का परिचय सत्र, आनंद उत्सव और अन्य रचनात्मक आयोजन इस परिवार को और मजबूत करते रहे। धीरे-धीरे यह सिर्फ़ "ऑनलाइन क्लास" नहीं रहा, बल्कि एक जीवंत, स्नेहमय और आध्यात्मिक परिवार का रूप ले लिया, जहाँ हर कोई गीता साधना की धारा में बहता चला गया।

एक से अनेक भाषाओं की ओर : गीता परिवार का महाविस्तार

साधकों की प्रबल इच्छाशक्ति और सेवा-भाव ने गीता परिवार की सीमाएँ लगातार बढ़ाईं। जो यात्रा एक भाषा से आरम्भ हुई, वह देखते-देखते अनेक भाषाओं में बहने लगी। मात्र एक वर्ष में 6 भाषाओं में संपूर्ण पाठ्यक्रम तैयार हो गया, और हर तीन महीने में एक नई भाषा का पुष्प इस बगिया में खिलने लगा। आज, 13 भाषाओं में गीता की कक्षाएँ निर्बाध रूप से प्रवाहित हो रही हैं — मानो गीता का संदेश हर दिशा में अपनी गूंज फैला रहा हो।

2500 साधकों और 1000 कार्यकर्ताओं से प्रारंभ हुई यह साधना-यात्रा, आज 12 लाख साधकों और 12 हजार समर्पित कार्यकर्ताओं के विराट स्वरूप में विकसित हो चुकी है। और अद्भुत यह कि – अधिकांश एक-दूसरे को जानते तक नहीं, फिर भी इस मंच पर सभी परिवार की तरह घुल-मिल गए हैं। भारत ही नहीं, विश्व के कोने-कोने से साधक और सेवी इस गंगा में आचमन करने चले आ रहे हैं — और यह प्रवाह अविराम है।

प्रथम स्तर : 2 अध्याय
द्वितीय स्तर : 4 अध्याय
तृतीय स्तर : 6 अध्याय
चतुर्थ स्तर : 6 अध्याय

गीता का मर्म – विवेचन सत्र
श्लोकों के साथ उनके गूढ़ मर्म को समझने के लिए शनिवार और रविवार को विशेष विवेचन सत्र आरंभ हुए।
इनका संचालन **संजय जी मालपाणी, डॉ. आशू जी गोयल, श्रीनिवास जी वर्णेकर, वंदना जी वर्णेकर, श्रद्धा जी रावदेव, विकास जी वैद्य, रूपल जी शुक्ला और कविता जी वर्मा** जैसे अनुभवी मार्गदर्शकों द्वारा किया जाता है।
बालकों हेतु विशेष विवेचन का संचालन **ज्योति जी शुक्ला, जाह्नवी जी देखणे और श्रुति जी नायक** करती हैं।

सेवा और समर्पण का अद्वितीय भाव

जो भी गीता परिवार से जुड़ता है, वह मानो जीवन का एक नया उद्देश्य पा लेता है — गीता सेवा। निःशुल्क चलने वाली इन कक्षाओं में सभी, अपनी क्षमता और समय के अनुसार सेवा में जुट जाते हैं — कोई प्रशिक्षक बनता है, कोई तकनीकी सहायक; कोई कॉलिंग टीम में जुड़ता है, तो कोई संगठन की बागडोर संभालता है।
अनुशासन और सुचारू संचालन हेतु समूह संचालक (GC), बैच संचालक (BC) और सूत्र संचालक जैसी जिम्मेदारियाँ अनेक सेवकों ने अपनाई हैं।

इसी भावना से प्रेरित होकर परीक्षाओं और उपाधियों की योजना बनाई गई —ताकि साधक उत्साहपूर्वक आगे बढ़ें और हर स्तर पर अपनी प्रगति का अनुभव करें।

साधना के सोपान: उपाधियों की गरिमामयी यात्रा
प्रथम स्तर: गीता गुंजन
द्वितीय स्तर: गीता जिज्ञासु
तृतीय स्तर: गीता पाठक
चतुर्थ स्तर: गीता पथिक एवं गीता व्रती

इन उपाधियों ने साधकों के मन में आत्म-सम्मान और आनंद की एक नई लहर उत्पन्न की। और फिर आया सर्वोच्च चरण — जिन साधकों ने पूरी गीता कंठस्थ कर ली, वे गीता व्रती बने। और जो इससे भी आगे बढ़े, उन्हें मिली विचक्षण की गौरवपूर्ण उपाधि। जो कभी गीता से अनभिज्ञ थे, वे आज गीता के चलते-फिरते भंडार बन गए हैं।

*** जेलों में गीता की गूँज:** अंधकार में आशा का आलोक*

परम पूज्य स्वामीजी के हृदय में यह विचार प्रस्फुटित हुआ— "गीता का प्रकाश जेल में बंद कैदियों तक फैलाना चाहिए।"

क्योंकि कोई भी व्यक्ति जन्म से अपराधी नहीं होता, बल्कि उसके कर्म उसे उस मार्ग पर ले जाते हैं। और भगवद् गीता तो कर्मयोग का ग्रंथ है। सेवादल ने इस संकल्प को सहर्ष स्वीकार किया। कुछ ही समय में, ज़ूम पैनल के माध्यम से कई राज्यों की जेलों में गीता की कक्षाएँ आरंभ हो गईं। यह एक ऐतिहासिक प्रयोग था।

कैदियों को ऐसा लगा जैसे किसी ने उनके टूटे हुए दिलों पर मरहम लगा दिया हो। अंधेरी कोठरियों में ज्ञान का दीप प्रज्वलित हुआ और उसका प्रकाश उनकी अंतरात्मा तक पहुँचा।

*** संख्या नहीं, संकल्प की शक्ति:** कैदियों की साधना के आँकड़े*

50 जेलों में
2000+ कैदी गीता पाठ में संलग्न
500+ कैदी गीता गुंजन परीक्षा में सफल
50+ कैदी गीता जिज्ञासु परीक्षा में सफल
15+ कैदी गीता पाठक परीक्षा में सफल
9 कैदी गीता पथिक परीक्षा में सफल

राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों में ये कक्षाएँ आज भी निर्बाध रूप से चल रही हैं। साथ ही, चर्चा सत्र और संवाद सेतु के माध्यम से उनके विचारों, स्वभाव और आत्मविश्वास में आश्चर्यजनक परिवर्तन आया है।

प्रेरणादायक उपलब्धियाँ:
100 से अधिक विद्यालयों में गीता कक्षाएँ संचालित
4000 से अधिक बालकों ने गीता गुंजन प्रमाणपत्र प्राप्त किया
हर प्रमाणपत्र के साथ उनके मन में संस्कारों का बीज बोया गया है जो आगे चलकर समाज में फलित होकर एक गीता युग की नींव रखेगा

यह गीता युग है: कलियुग में ज्ञान का नवप्रभात
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे // *4.8*
कुछ लोग कहते हैं कि यह कलियुग है—अंधकार, भ्रम और अधर्म का युग। पर हम कहते हैं, यह गीता युग है—ज्ञान, भक्ति और कर्म की पुनर्स्थापना का युग। यह वह समय है जब श्रीमद्भगवद्गीता केवल ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन का मार्गदर्शक बन रही है। यह युग है जब हर घर में गीता की गूंज हो, हर हाथ में गीता का कर्मयोग हो, और हर हृदय में गीता का समर्पण हो।

गीता परिवार में जो एक बार जुड़ता है, वह केवल एक साधक नहीं रहता —वह इस आध्यात्मिक परिवार का अभिन्न अंग बन जाता है। यहाँ सेवा न स्वार्थ से होती है, न दिखावे से—यह सेवा होती है समर्पण से, श्रद्धा से, और जनकल्याण की भावना से। हमारे कार्यकर्ता न केवल प्रचारक हैं, वे गीता के जीवंत उदाहरण हैं—जो अपने जीवन से गीता के सिद्धांतों को साकार कर रहे हैं।

"हर घर गीता, हर कर गीता" का यह संकल्प कोई अभियान मात्र नहीं है, यह एक चेतना है, एक क्रांति है, एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण है। और इस पुनर्जागरण में आप सभी का योगदान अमूल्य है। आप सभी को सादर वंदन, जिन्होंने इस युग को गीता युग बनाने में अपना तन, मन और समय समर्पित किया।

ईश्वर भक्ति की निर्मल धारा, संस्कारों की गहराई, और सेवा की भावना से सिंचित यह गीता परिवार आज एक आंदोलन बन चुका है—एक ऐसा आंदोलन जो न केवल जीवन बदलता है, बल्कि समाज को दिशा देता है।

यह गीता युग है। यह हमारा युग है। यह गीता परिवार का युग है।

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/itihaas-aur-vikaas-2020-2025/shrii-gnneshaay-nmh/

02

०२ इतिहास और विकास (2020–2025)

Marking a Milestone

5 min read

Born in a Pandemic,

Blossomed in Purpose

From Virtual Beginnings

to a Vibrant Community

Celebrating 5 Glorious Years of Online Geeta Classes of Geeta Pariwar

Geeta Pariwar,founded in the year 1986,,by Param Pujya Swami Govind dev Giri ji Maharaj, is an organisation committed to imparting value education to children, with a goal of creating a prosperous nation through holistic development, based on the 5 core principles (पञ्च सूत्री):

1 Bhagawad Bhakti (Devotion to divine)

2 Bhagavad Geeta (Spiritual wisdom)

3 Teachings of Swami Vivekanand ji (Philosophy of Self realization)

4 Bharat Mata (Patriotism and love for motherhood)

and

5 Science (Rational thinking and understanding)

The Geeta Pariwar emblem, विद्या धर्मेण शोभते emphasizes that knowledge is adorned if combined with virtues i.e. our duties towards Self, Family, Society and Rashtra.

In June 2020, due to sudden outbreak of the COVID-19 pandemic, when the world was forced to pause, Geeta Pariwar launched the Learn Geeta Programme based on the त्रिसूत्री "Learn Geeta,Teach Geeta and Live Geeta". This initiative aimed to spread positivity and to propagate the timeless wisdom of the Bhagavad Gita to masses, after teaching the correct grammatical pronunciation of the shlokas.

As suggested in its emblem, तस्माद्योगीभवार्जुन Krishna advises Arjuna to become a yogi who strives for self-realization and detachment from worldly desires and attachments

- What was born in June 2020 as an online initiative with 2500 sadhaks, has now blossomed into a global community of more than 12 lakh Sadhaks in the last 5 years, after being nurtured by dedicated countless efforts of Dr Sanjay Malpani and Dr Ashu Goyal ji on the path paved by Param pujya Swamiji. The aim was to connect and get spiritually nourished during the isolation situation prevailing all around!

With the overwhelming response and the verbal publicity the count of keen Sadhaks grew exponentially and registrations kept growing multifold from 4k to 10k to 14 k to 25k to 50 k and today this cumulative figure has gone up to more than 12 lakhs.

- Also, its presence is not confined only to Bharat but has expanded its wings globally i.e. in 184+ countries, reaching out to every nook and corner of this vishwa into people's homes and hearts... aiming "har ghar gita har kar gita."

- Over these five years, due to a significant surge in the number of registrations, the need for more classes and in turn more sevaks like trainers, techs and coordinators was obvious. Initially where it began with only few trainers to teach and techs to host the classes. Online Geeta Classes now boasts of having major departments for creating Technical assistants, Trainers and Group and Batch coordinators.

- Trainers are selected through a stringent screening process of hearing audios, conducting grammar tests, running Drona Training Programmes, one to one interviews and making them interns, before they become a Core Trainer as against the earlier instant selection system.

- Tech training Groups (TTG) are formed with mentors assigned to teach the technical aspects in hosting a class. LMS, practical training, demo and super demo sessions help create techno stars for hosting regular classes, opening ceremonies, conducting exams, etc.

- To Coordinate with the faculties and ensure smooth running of classes the Group coordinators were appointed and few Batch coordinators a level above them managed the total efficient functioning

- Monitoring and mentoring departments were vigilant enough to maintain the set standards qualitatively, which is today's need of the hour

- Conducting recitation classes (संथा वर्ग) from Monday to Friday which began in 10 timeslots from 6 am to 10 pm are now in **18 timeslots from 4 am to 2 am**

- Classes began in only three languages- Hindi Marathi and English and are now functional in 13 Indian regional languages – Hindi, Marathi, English, Gujarati, Telugu, Tamil, Kannada, Malayalam, Bangla, Odia, Nepali, Assamese & Sindhi

- To upgrade and have a strong hold on the academic front, Special Grammar sessions(व्याकरण वर्ग) of all 4 levels, Special Training sessions for Trainers, and Special Extra Classes for all those sadhaks willing to appear for exams are organised.

- Facilitating all sadhaks in making the learning process simpler, the PDFs were upgraded and improvised from version 4 to 5 then to 6 and currently to version 7. Also Literature department has taken special efforts in making available various Publications of Geeta sahitya in all 13 languages

- All this could be possible only due to the ever growing selfless services rendered by the evergreen everready Sevaks, the number of which has gone from 75 sevaks in 1st year to more than 10000 sevaks by the end of 5th year.

- The scope and contributions of work also has changed from a small multifunctional team to a well expanded organisation chart comprising 40 + departments and many more sub sections. Aao Geeta Sewi Bane is the brainchild derived with the aim to motivate more and more sadhaks to become sevaks.

As we look ahead, we remain committed to expanding this sacred mission, deepening engagement, and inspiring lives through the eternal light of the Gita.

- Vivechans/ Interpretations (अर्थ विवेचन) on weekends i.e. saturday and sunday by only 4 vivechaks earlier, has now a tight schedule of 18 vivechanas,(including kids special newly introduced), by an expanded team of 11 vivechaks giving rise to separate departments for vivechan Techs, Vivechan anchors,

Vivechan deep prajwalan and prarthana, Vivechan Summary writers, Banner and many more related things

- All these efforts were obviously reflected in the stupendous results in growing numbers of successful examinees. The Practice App is an outstanding Self Practice facilitator
- The IT department also has evolved extensively. The long zoom links are replaced by the short links which enable better control on the attendance and count. The user-friendly Learn Geeta App is another feather in a cap!

As we celebrate the 5th anniversary of ONGC of Learngeeta, Geeta Pariwar, we reflect with gratitude and pride on this remarkable journey of transformation from adversity to opportunity globally !!

This milestone is a tribute to the selfless 14000+ Geeta sewis, and sincere 12 lakh +sadhaks who have turned a time of crisis into a foundation of transformation.

From crisis to community, and from community to global impact—this is the story of OLGC, Learngeeta, Geeta Pariwar.

Looking forward to many more years of shared wisdom, growth, and service.

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/itihaas-aur-vikaas-2020-2025/marking-a-milestone/

03

संस्थागत संरचना

वॉलंटियर प्रशिक्षण मॉडल पृष्ठ ३७

गीता निर्माण उपक्रम – आओ, गीता-सेवी बनें पृष्ठ ४०

पाठ्यक्रम व परीक्षायें पृष्ठ ४२

Literature- Launch and Publications of Learn Geeta books पृष्ठ ४४

वैचारिक विवेचन सत्र पृष्ठ ४६

साधक से गीताप्रेमी तक पृष्ठ ४९

GEETĀ VICAKṢAṆA: A New Milestone in the LearnGeeta Journey पृष्ठ ५५

महाकुम्भ में महाप्रचार पृष्ठ ५७

गीता मैत्री मिलन पृष्ठ ६१

बाल संस्कार से राष्ट्र निर्माण: गीता परिवार का अटूट संकल्प और सेवा का दिव्य प्रकाश पृष्ठ ७२

Panchavarshapoorti Samaroha Story... पृष्ठ ७४

In Divine Code: The Story of the LearnGeeta App पृष्ठ ७६

गीता परिवार के अंचल अनुसार कार्यकर्ता शिविर संपन्न पृष्ठ ७८

गीता चिंतनिका सत्र : गीता पठन-चिंतन की अनवरत साधना पृष्ठ ८०

संपूर्ण गीता पारायण – साधना का महायज्ञ ! पृष्ठ ८२

नीति, प्रबंधन और स्वभाव : जीवन में गीता संस्कृति का विकास पृष्ठ ८४

03

०३ संस्थागत संरचना

वॉलंटियर प्रशिक्षण मॉडल

This is the story not of software or schedules, but of saadhana, systems, and seva refined over five sacred years.

4 min read

Living, Evolving Training Model : The Spiritual Engine of LearnGeeta

In the stillness of the 2020 lockdown, while the world paused, a divine current began to flow through digital screens LearnGeeta, a spiritual movement born of timeless wisdom, modern tools, and sacred intent. What began as an online experiment soon became a multidimensional, multilingual phenomenon.Every success has a foundation and every tall tree stands because of the deep roots underground below it. Likewise behind the scenes of smooth Zoom classes and deeply engaged learners stood a living framework, a Volunteer Training Model that has quietly grown into one of LearnGeeta's most profound achievements.

Training: The Backbone of the Movement

From its very first class, it was evident: LearnGeeta could not run on content alone. The Pran Vayu of the program would be its volunteers, and they would need to be trained not just in tasks, but in temperament, clarity, communication, and commitment. Thus began a deeply considered, ever-evolving Training Model, which today stands as one of LearnGeeta's finest contributions to spiritual pedagogy.

What began with informal, one-on-one handholding soon matured into a layered, scalable, and spiritually-aligned model.

Phase 1 (2020): Handholding in the Dark

- Trainers were mentored personally, often by learned Sanskrit professors and senior sevaks.
- Tech sevaks were taught one task at a time like screen sharing or muting participants on calls and chat messages.
- Batch Coordinators and Group Coordinators were self-learned sevaks stepping up for whatever help in coordination required, with minimal formal training.

There were no manuals, no SOPs, only bhav, and the resolve to serve.

Phase 2 (2021–2022):Every success has a foundation and it was laid

- Structured Paths were born:
- Jigyasu → Core Trainer with audio assessments, Grammar quiz, interviews, and supervised teaching.
- Tech Selection Process Started with Tech Training Groups (TTGs) by language for hands-on demos and evaluations.

- Group Coordinators received their first psychometric screening and LMS-based training modules.
- DTP – Drona Training Program was launched, bringing discipline, depth, and dignity to the trainer journey.
- Portal-based training began for admissions and calling teams.

This was the turning point—when volunteering became a vidhi.

Phase 3 (2023–2024): Refinement & Expansion

- Batch Coordinators were formally trained with induction programs, grievance-handling tools, and dashboard analytics.
- Admission teams began using portal-led training, monitored by "Adding Mentors."
- Calling & Migration volunteers were trained in 13 languages, using call scripts and digital reporting dashboards.
- Orientation programs like NPS (Niti, Prabandhan, Swabhav) were launched to align attitude with the Gita's essence.
- E-learning modules, LMS quizzes, and visual guides standardized the process across departments.
- A structured feedback-based training system for Trainers was introduced, complemented by online grammar and pronunciation sessions to further refine their skills. The introduction of Trainer Internships allowed aspiring trainers to blossom under the gentle guidance and nurturing mentorship of experienced Core Trainers
- Tech training was further strengthened with the introduction of live class hosting through Tech Internships, providing a real-time environment to polish skills and address any remaining gaps ensuring complete readiness before the final allotment.

Training was no longer optional it became the sanctified first step of Seva

Phase 4 (2025 Onward): A Living, Learning Model

Today, our training model is dynamic. It adapts to changes in technology, learner behavior, and digital tools. Our Social Media and Design Teams offer volunteers AI training, helping them create visually engaging Gita content. Periodic feedback loops ensure continuous improvement. A formal Organization Structure is created for its efficient and proper execution after the Learn Geeta initiative grew multifold. New roles are introduced with role-specific mentoring too. SOPs for every sub department are created for ease of systematic and standardized functioning.

Each seva from tech hosting to group coordination is supported by custom-built training pipelines, practical internships, checklists, buddy systems, and reflection sessions.

More Than Training – It's Inner Transformation

The real success of this model is not just in skills transferred, but in bhava nurtured. A volunteer doesn't just learn how to serve, they learn why. This training model has grown not just in width and scale, but in depth and soul. It shapes not only what sevaks do, but who they become.

Five years on, it is not just the classes that shine, it is the quiet radiance of trained volunteers, equipped not just to teach or host, but to embody the very spirit of the Gita.

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2025-06/snsthaagt-snrcnaa/vonlnttiyr-prshikssnn-monddl/

03

०३ संस्थागत संरचना

गीता निर्माण उपक्रम – आओ, गीता-सेवी बनें

३ मिनट पठन · १ चित्र

“साधना का अंतिम परिणाम सेवा है”

“गीता पढ़ें, पढ़ाएँ, जीवन में लाए।” परम पूज्य स्वामीजी के इस दिव्य ध्येय-वाक्य को साकार करने हेतु हम श्रीमद्भगवद्गीता का अध्ययन तो आरम्भ कर चुके हैं, परन्तु साधना तब पूर्ण होती है जब उसमें सेवा का समावेश हो। सेवा ही वह सेतु है, जो आत्मकल्याण और लोकमंगल को जोड़ती है।साधना का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करना नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक सेवा यज्ञ है, जिसमें समय, कौशल और निष्ठा के साथ विभिन्न प्रकार से योगदान संभव है।

इसिलिये स्वामीजी कहते है साधना का अंतिम परिणाम सेवा है .

इसी उद्देश्य से Learn Geeta द्वारा **“आओ, गीता-सेवी बनें”** नामक विशेष कार्यक्रम का आयोजन प्रति माह किया जाता है।इस सेवा-प्रेरणा कार्यक्रम का उद्देश्य है – साधकों को विभिन्न सेवा-विभागों से परिचित कराना, जिससे वे अपनी रुचि एवं योग्यता के अनुसार सेवा का संकल्प लें।यह विभाग साधक से सेवक की पावन यात्रा का पथ प्रशस्त करता है।

फरवरी 2021 में, आदरणीय अशुभैया गोयल जी और आदरणीय संजय भैया मालपानी जी के मार्गदर्शन तथा स्वामीजी के आशीर्वाद से, 8 विभागों और हिंदी भाषा में कार्यक्रम आरम्भ हुआ। धीरे-धीरे यह 11 विभागों तक विस्तृत हुआ। अगस्त 2024 में अंग्रेजी भाषा जुड़ी और मई 2025 से कन्नड़, तेलुगु और बांग्ला भाषाओं को सम्मिलित किया गया। आज यह कार्यक्रम 11 विभागों और 5 भाषाओं में सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है।

- प्रमुख गतिविधियाँ

1. प्रतिनिधियों का चयन – प्रत्येक विभाग के लिए समन्वयक नियुक्त होते हैं, जो हिंदी और अंग्रेजी (तथा अन्य भाषाओं) के प्रतिनिधियों का चयन करते हैं।
2. स्क्रिप्ट निर्माण – संपादकीय टीम सेवा से जुड़ने की प्रक्रिया, आवश्यक योग्यता, उत्तरदायित्व आदि को सम्मिलित कर स्क्रिप्ट तैयार करती है।
3. वीडियो रिकॉर्डिंग – प्रतिनिधि अपनी स्क्रिप्ट का वीडियो रिकॉर्ड करवाते हैं, जिसे रिकॉर्डिंग टीम सेवा-भाव से तैयार करती है।
4. सूत्रसंचालन और प्रश्न-उत्तर – कार्यक्रम के अंतिम पड़ाव में सूत्रसंचालक सभी पक्षों को जोड़ते हैं और वरिष्ठ कार्यकर्ता साधकों के प्रश्नों का समाधान करते हैं।

- प्रभाव

गीता निर्माण उपक्रम में गीता-सेवी बनने के लिए स्कैन किया जाने वाला क्यूआर कोड।

इस कार्यक्रम का परिणाम अद्भुत है। जो यात्रा मात्र 100 सेवकों से शुरू हुई थी, वह आज 14,000+ सेवकों के विराट सेवा- सेना में बदल चुकी है। विशेष बात यह है कि लर्न गीता संथा वर्ग इन्ही सेवकों से चलती हैं।

इसमें कोई भी वेतनभोगी कर्मचारी नहीं है। यह सेवा यज्ञ साधकों को आत्मिक शुद्धि और ईश्वर-समर्पण की अनुभूति कराता है।

"य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति। भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः॥"

श्लोक सुनें
१८.६८

श्रीमद्भगवद्गीता *(18.68)*

यदि आप भी इस सेवा-यज्ञ में सहभागी बनकर, गीता का दिव्य संदेश जन-जन तक पहुँचाना चाहते हैं,तो आज ही

सेवा हेतु पावन संकल्प लें और फॉर्म भरें

sewa.learngeeta.com

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/snsthaagt-snrcnaa/giitaa-nirmaann-upkrm-aao-giitaa-sevii-bnen/

03

०३ संस्थागत संरचना

पाठ्यक्रम व परीक्षायें

४ मिनट पठन • १ चित्र

(गीता परिवार की चार स्तरीय नि:शुल्क यात्रा)

हम सब जीवन में कभी न कभी यह प्रश्न करते हैं—मैं कौन हूँ? मेरे जीवन की दिशा क्या है?

ऐसे प्रश्नों का उत्तर हमें भीतर से पुकारता है और हमारी यह खोज हमें लेकर जाती है, श्रीमद्भगवद्गीता के दिव्य श्लोकों की ओर, जहाँ हर शब्द आत्मा की गहराई तक उतरकर अज्ञान का अंधकार मिटा देते हैं और चेतना को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर देते हैं।

इसी ज्ञान के दिव्य प्रकाश को जन-जन तक पहुँचाने हेतु गीता परिवार ने एक सरल, प्रेरणादायी और पूर्णतः निःशुल्क प्रशिक्षण यात्रा तैयार की है। यह यात्रा आपको शुद्ध उच्चारण का अभ्यास, आत्मविश्वास की शक्ति और जीवन को सार्थक बनाने की प्रेरणा से परिपूर्ण कर देती है।

गीता पठन को सरल बनाने हेतु गीता परिवार द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता के 18 अध्यायों का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चार स्तरों में विभाजित किया गया है। सोमवार से शुक्रवार तक सप्ताह के 5 दिन सभी कक्षाएं, 40 मिनट की ऑनलाइन माध्यम से आयोजित की जाती है। इस Learn Geeta उपक्रम के माध्यम से हम घर बैठे, अपने अनुकूल समय और अपनी भाषा अनुसार श्लोकों का अध्ययन कर सकते हैं। तथा ऑनलाइन गीता कक्षा के नियमित अभ्यास द्वारा सुनकर एवं पढ़कर गीता जी के श्लोकों के शुद्ध उच्चारण सीख सकते हैं। **सबसे उत्तम एवं आकर्षक बात यह है की वर्तमान समय में विश्व की यह सबसे बड़ी ऑनलाइन कक्षा है जिसमें प्रतिदिन 3000+ कक्षाएं संचालित की जाती है और वह भी पूर्णतः निशुल्क।**

गीता सिर्फ एक ग्रंथ नहीं, जीवन-शिल्प की अमूल्य शिक्षा है। गीता परिवार परीक्षा विभाग का लक्ष्य इस शाश्वत ज्ञान को कंठस्थीकरण के माध्यम से प्रत्येक हृदय में अवतरित करना है। कंठस्थीकरण कक्षाएं श्लोकों के मात्र अनुशीलन से अधिक हैं; ये उच्चारण, भाव और अर्थ को मन-मस्तिष्क में स्थायी रूप से उतारने का सशक्त आधार हैं। परीक्षाएँ न केवल स्मरण-शक्ति की कसौटी हैं, बल्कि अनुशासन, एकाग्रता और आत्मविश्वास का भी पाठ पढ़ाती हैं।

Learn Geeta के परीक्षा विभाग के मंच से हम प्रतिभागियों को गीता के शब्दों को आत्मसात कर जीवन में उतारने के लिए आमंत्रित करते हैं। जब ये श्लोक हमारे भीतर जगह बना लेते हैं, तो वे कठिन समय में स्थिर प्रकाश-स्तंभ बन कर राह दिखाते हैं।

Learn Geeta कक्षाओं की संरचना

प्रथम स्तर (30 दिन)

- अध्याय 12 & 15
- परीक्षा : दोनों अध्यायों के पठन के बाद वैकल्पिक परीक्षा खुली किताब से सस्वर पाठ करते हुए वीडियो रिकॉर्डिंग द्वारा दी जा सकती है।
- “गीता गुंजन” प्रशस्तिपत्र

द्वितीय स्तर (40 दिन)

• अध्याय 9, 14, 16, 17

• परीक्षा : “गीता जिज्ञासु” प्रशस्तिपत्र (कुल 3 अध्याय) एवं • “गीता पाठक” प्रशस्तिपत्र (कुल 6 अध्याय)

तृतीय स्तर (90 दिन)



गीता परिवार का 'गीता पाठक' प्रमाणपत्र — छह अध्यायों के कंठस्थीकरण की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर, स्वामी गोविन्ददेव गिरि के हस्ताक्षर सहित।

- अध्याय 1, 3, 4, 5, 6, 7
- परीक्षा : “गीता पथिक” प्रशस्तिपत्र (कुल 12 अध्याय)

चतुर्थ स्तर (120 दिन)

- अध्याय 2, 8, 10, 11, 13, 18
- सभी 18 अध्यायों को कंठस्थ कर ऑनलाइन परीक्षा दी जाती है। परीक्षा उत्तीर्ण होने पर पदक और “गीता व्रती” प्रशस्तिपत्र से सम्मानित किया जाता है।

गीता व्रती परीक्षा के पश्चात गीता विचक्षण के चार स्तर

- गीता विचक्षण श्लोकांक (verse numbering)
- गीता विचक्षण श्लोकांक (Reverse Order)
- गीता विचक्षण श्लोकार्थ (verse numbering)
- गीता विचक्षण Charan-wise Recitation

गीता गुंजन को छोड़कर अन्य सभी प्रशस्तिपत्र डाक द्वारा मँगवाए जा सकते हैं। यह “गीता की चारधाम यात्रा” सभी के लिए मंगलमय हो!

बडे गर्व की बात है की जून 2020 से जून 2025 तक 35,528 जिज्ञासू, 11,407पाठक,3,340 पथिक व 2,235 व्रती गौरांवित किये गये है।

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/snsthaagt-snrcnaa/paatthykrm-v-priikssaayen/

03

०३ संस्थागत संरचना

Literature- Launch and Publications of Learn Geeta books

2 min read · १ चित्र

Learngeeta has launched and published 40 different types of books by now. These are available either online at store.learngeeta.com or they are also available at various offline Book stores, total 375 in nos, of which 368 stores are all over India, and 7 stores out of India.

Saral Pathaniya (20 books in 12 languages)

Bhagavaan Shri Krishna, himself imparted the Geeta to motivate and energize a despondent Arjuna. The words spoken by Bhagavaan himself attained the status of a Divine Scripture. However, as Bhagavadgeeta is in Sanskrit, its recitation is extremely difficult for those who do not have prior knowledge of Sanskrit. Therefore, Geeta Pariwar has started the **"Online Geeta Santhaa Classes".**

The USP of these Santha Classes is the unique, easy-to-read version of the Śhrimadbhagavadgeeta. It's a simplified method of explaining the Anusvāra and Visarga pronunciations; displayed Aaghata signs to denote places to stress while pronouncing joint consonants, without changing the meaning or the Chaṇḍ (meter), and skillfully split the combined consonants to make the recitation easier. The possible mistakes in the long and short vowel pronunciations are highlighted in order to avoid them.

With the Divine blessings of Param pujya Swami Śhri Govinda Deva Giriji Maharaj and with the relentless efforts of International Program Director of Learngeeta our dear Dr. Ashu Goyal bhaiya and his dedicated team, this unique Saral Pathaniya, easy-to-read version of the Śhrimadbhagavadgeeta is a Divine offering at the Bhagavān's feet.

It is Learn Geeta's humble effort and firm belief that this "Easy to Read" version of the Geeta will enable countless Geeta-loving Sadhakas to learn the perfect pronunciation of the Divine Shlokas and memorize and internalise them with ease.

QR code linking to the store where Learn Geeta books and publications are available.

Tri Ratna Geeta (Pocket)(11 books in 11 languages)

Tri Ratna Geeta(Pocket) book publications are available in 11 languages.

These books not only include Bhagavad Geeta, Vishnu Sahasranaam and Ram raksha, but also some Prarthanas.. These are small pocket size books, easy to carry anywhere.

Tri Ratna Geeta(Premium)(9 books in 9 languages)

Tri Ratna Geeta Premium Books comprise three gems Bhagavad Geeta, Vishnu Sahasranaam,and Ram Raksha.These are bigger in size and bigger in font. It also includes the Grammar rules used for pronunciation

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/snsthaagt-snrcnaa/literature-launch-and-publications-of-learn-geeta-books/

०३ संस्थागत संरचना

वैचारिक विवेचन सत्र

श्रीमद्भगवद्गीता के दिव्य संदेश को जन-जन तक पहुँचाने के संकल्प से प्रेरित गीता परिवार वर्षों से ज्ञान और सेवा के संगम को साकार करता आ रहा है। इस अभियान का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है—विवेचन विभाग, जो आध्यात्मिकता और आधुनिकता का एक अद्वितीय समन्वय प्रस्तुत करता है।

३ मिनट पठन • १२ चित्र



डॉ. संजय मालपानी ऑनलाइन सत्र के आरम्भ में हाथ जोड़कर अभिवादन करते हुए।



एक क्यूआर कोड, जिसे स्कैन करने पर संबंधित लिंक खुलता है।

गीता परिवार की ऑनलाइन गीता कक्षाएँ: एक सेवा, एक साधना

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते |

तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति || 4. 38 ||

प्रत्येक सप्ताह, सोमवार से शुक्रवार तक आयोजित होने वाली दैनिक गीता संथा कक्षाएँ साधकों को शुद्ध उच्चारण के साथ श्लोकों का अभ्यास कराती हैं। इन कक्षाओं में न केवल पाठ होता है, अपितु साधना का भाव भी जागृत होता है। इसी श्रृंखला में, शनिवार और रविवार को आयोजित होने वाले विवेचन सत्र एक सशक्त आध्यात्मिक मंच के रूप में उभरे हैं—जहाँ श्लोकों के गूढ़ अर्थों का विवेचन तज्ञों द्वारा होता है, और जीवनदर्शन की गहराइयों में प्रवेश मिलता है।

इन सत्रों का संचालन ज़ूम मीटिंग्स के माध्यम से होता है। प्रार्थना तथा दीप प्रज्वलन, जो ज्ञान और पवित्रता के प्रतीक है, प्रत्येक सत्र की शुरुआत में एक आध्यात्मिक वातावरण निर्मिती करते है।

एकाग्रता और भावपूर्णता के साथ इन सत्रों में विश्वभर के साधक एकत्रित होकर श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोकों और उनके जीवनदायी अर्थों को सुनकर उनका चिंतन करते हैं।

विवेचन उपरांत, इन सत्रों को विविध ११ भाषाओं में लिपिबद्ध करने का कार्य गीता परिवार की विवेचन राइटिंग टीम द्वारा किया जाता है। भाषा के विषय-विशेषज्ञ इन विवेचनों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करते हैं, जिससे यह ज्ञान अधिक लोगों तक पहुँचें और अथिक व्यापक और सुलभ बन सके।

यह स्पष्ट है कि ये सत्र केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं हैं—बल्कि आधुनिक जीवन की उलझनों में एक प्रकाश-पुंज, एक मार्गदर्शक चेतना हैं। गीता परिवार का यह प्रयास सिद्ध करता है कि यदि भाव शुद्ध हो, तो तकनीक भी अध्यात्म का वाहक बन सकती है।

इस सेवा का प्रारंभ परम पूज्य गुरुदेव गोविंददेव गिरी जी महाराज के आशीर्वाद से हुआ, और इसे गीता विशारद, डॉ. संजय मालपाणी भैया, गीता विशारद डॉ. आशू गोयल भैया, गीता विशारद श्रीनिवास वर्णेकरजी, गीता विदुषी वंदना काकीजी, तथा गीता प्रवीण रूपल शुक्ला दीदी और गीता प्रवीण कविता वर्मा दीदी के सहयोग से प्रारंभिक स्वरूप प्रदान किया गया।आज आदरणीय श्रद्धा रावदेव जी, आदरणीय विकास वैद्य जी भी उन्हें सहयोग दे रहे हैं तथा गीता प्रवीण ज्योती शुक्लाजी, आदरणीय श्रुती नायक जी व गीताव्रती जानवी देखणे जी बालक विशेष विवेचन प्रदान करने हेतू जुड चुके है।

वर्तमान में ये विवेचन सत्र हिंदी और अंग्रेज़ी में आयोजित किए जा रहे हैं। निकट भविष्य में इन्हें विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में भी विस्तार करने का विचार है।

जो साधक आत्मिक उत्थान, शांति, और जीवनदर्शन की खोज में हैं, उनके लिए ये साप्ताहिक गीता विवेचन सत्र एक अमूल्य अवसर हैं। इनमें भाग लेकर न केवल स्वयं को लाभान्वित किया जा सकता है, अपितु परिवार और समाज को भी उस दिव्य प्रकाश की ओर अग्रसर किया जा सकता है—जिसे श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र में अर्जुन को प्रदान किया था।

कृपया अपना मनपसंद विवेचन सत्र खोजने के लिए आप निम्न चयन विकल्पों का उपयोग करें।

vivechan.learngeeta.com

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/snsthaagt-snrcnaa/vaicaarik-vivecn-str/



घर पर एकत्र साधक-परिवार हथेलियों से आँखें ढककर ऑनलाइन सत्र में अभ्यास करते हुए।

०३ संस्थागत संरचना

साधक से गीताप्रेमी तक

लर्नगीता ऑनलाइन संथा वर्गों का बीजारोपण जून (२०२०) दो हज़ार बीस में हुआ। यह बीज गर्भावस्था से निकलकर पूर्ण प्रस्फुटित होकर एक हरा भरा नन्हा सा पौधा बन गया, उसमें कोंपलें फूटीं और देखते ही देखते वह पॉंच वर्ष का शिशु बन गया।

११ मिनट पठन · २ चित्र

इन पॉंच वर्षों में इस नन्हें का विकास हुआ व शनैः शनैः उसमें अनेक शाखायें विकसित हुईं। अनेक सेवी व अनेक विभागों के फल इन शाखाओं पर फलीभूत हुए। सर्वाधिक शैक्षणिक योगदान जिन गतिविधियों द्वारा प्राप्त हुआ उनमें निम्नलिखित प्रमुख हैं

१) कण्ठस्थीकरण वर्ग

२) व्याकरण कक्षायें

३) अतिरिक्त कक्षायें

कण्ठस्थीकरण कक्षायें

श्रीमद्भगवद्गीता एक मंत्रमयी भगवद् वाणी है और भगवद् वाणी का प्रसार दैवी शक्तियॉं करती हैं।ये शक्तियॉं हमारा मानसिक संतुलन बनाये रखती हैं। गीताजी के मनन, पठन व चिंतन से जीवन में समत्व आता है, जिसे योग कहते हैं।मनन, चिन्तन तभी सम्भव होगा जब गीताजी मुखोद्गत होंगी, कण्ठ मे, वाणी मे विराजमान होगी। वाणी मे विराजित करने के लिये गीताजी को कण्ठस्थ करना अनिवार्य है, और इस अनिवार्यता की पूर्ती करने के लिये गीता परिवार का उत्तम उपक्रम है कण्ठस्थीकरण कक्षायें।

कण्ठस्थीकरण कक्षाओं का प्रारम्भ मार्च 2024 को हुआ। कण्ठस्थीकरण कक्षाओं की रूपरेखा गीता परिवार द्वारा ली जाने वाली चारस्तरीय परीक्षाओं के पाठयक्रमानुसार तैयार की गयी हैं जो मनोविज्ञान

के शिक्षण सूत्र (Maxims of learning) (सरलता से जटिलता की ओर, From Simple to Complex) इस सूत्र पर आधारित है। पहले सरल, सुलभ कम श्लोकों वाले फिर गहन अधिक श्लोकों वाले अध्यायों को बढते स्तरों मे समावेशित किया है। जटिलता यदि आरम्भ में ही आ जाये तो तो साधक अपना आत्मविश्वास खो देंगे, इसिलिए सम्पूर्ण अठारह अध्यायों का वितरण चार स्तरों मे किया है

यह एक सामूहिक प्रकल्प है। जिसमें अन्य नियमित कक्षाओं की तरह ही तकनिकी सहायक, समूह समन्वयक, गट सहायक सेवायें देते हैं। अन्य ऑनलाइन कक्षाओं कीतरह जिज्ञासू व पाठक कक्षायें भी झूम प्रांगण में सप्ताह में पॉच दिन चालीस मिनिट के निर्धारित समय में होती हैं।पथिक व व्रती की क क्षायें सप्ताह मे तीन दिन सोमवार, बुधवार व शुक्रवार को सम्पन्न होती हैं

हमारे सक्षम गुरुजन अतिरिक्त कक्षायें लेकर सारा पाठ्यक्रम कंठस्थ करवाते हैं। पहले चरणानुसार, फिर दो चरण जोड़कर व अंत मे सारे मिलकर स्वयम् श्लोक गाते हैं। पहले दस मिनट आवृत्ति फिर बाद में उपर्युक्त विधीनुसार व अंत में परीक्षा पद्धति पर आधारित एकल गान किया जाता है।

परीक्षाओं के पहले संक्षिप्त में परीक्षा विधी के लिये मार्गदर्शन दिया जाता है।

स्वयम् ही अध्ययन कर सकें इसिलिये मार्गदर्शिका भी प्रदान की जाती है।

कण्ठस्थीकरण के पश्चात् गीताजी आजीवन हमारे साथ रहती हैं, व जीवन मे सकारात्मकता लाकर जीवन को मधुबन बनाती हैं क्योंकि ——-

गीता सुगीता कर्तव्या, किमन्यैः(ख्) शास्त्र विस्तरैः।

या स्वयं(म्) पद्मनाभस्य, मुखपद्माद्विनिःसृता॥

श्रद्धेय स्वामीजी कहते हैं

१)Chanting of pure and correct pronunciation changes the vibrations of brain cell's programming."

२) प्राचीन काल मे वैदिक साधक प्रातःकाल में वेद पठन कर कण्ठस्थिकरण करते थे, जिससे उनकी स्मृती तीव्र व जाज्वल्यमान रहती थी।

३)इंग्लंड के एक अनुसंधान कारी के मतानुसार संस्कृत भाषा के श्लोकों के पठन के समय जिह्वा की हलचल होती है, जिह्वा कई तरह से घूमती है, जिससे मस्तिष्क की पेशियों की क्षमता बढती है।

कारण .....

जिस प्रकार ऑक्युप्रेशरिस्ट विभिन्न दाबविन्दुओं (pressure points)पर दाब देकर व्याधि का पता लगाकर चिकित्सा करते हैं, ठीक वैसे ही संस्कृत के उच्चारण के समय जिह्वा पर स्थित दाबबिन्दुओं पर दबाव आने से मस्तिष्क की पेशियों का उद्दीपन होता है, जो स्मरणशक्ति तीव्र करने में सहायक होता है।

४) हम जब वाचन करते हैं, कभी कभी दृष्टी तो पन्नों पर होती है लेकिन, मन कहीं और होता है, मन को भटकने के लिये वीसा या पासपोर्ट की आवश्यकता नहीं होती, लेकिन कण्ठस्थिकरण से एकाग्रता मे वृद्धि होती है

५)गीताजी में कृष्णार्जुन संवाद है, कृष्ण भगवान् अर्जुन से बहुत प्रेम करते हैं, वे कहते हैं——-

सर्वगुह्यतमं(म्) भूयः(स्), श्रृणु मे परमं(वँ) वचः।

इष्टोऽसि में दृढमिति, ततो वक्ष्यामि ते हितम्॥

श्लोक सुनें
१८.६४

गीताजी के श्लोकों के कण्ठस्थिकरण के समय आप अपने आप को अर्जुन के स्थान पर रखें, आप भी भगवान श्रीकृष्ण के प्रेम को अनुभव करेंगे।

आदरणीय आशू भैया द्वारा शुभारम्भ प्रसंग पर किये वक्तव्यानुसार-

गीताजी जब ग्रंथ से कण्ठ में आ जायें तो वह अपनी हो जाती है। निद्रावस्था मे भी वह मस्तिष्क मे रहती है, वह जन्मजन्मांतर तक साथ रहती है।

पॉंच वर्ष का बालक माता की गोद मे बैठकर श्लोकों का प्रात्यक्षिक देता है, तब वह इस जन्म के ही नहीं पूर्व जन्म के भी पुण्यकर्म वहन करता है। आज का कण्ठस्थीकरण हमें अगले जन्म मे अवश्य ही किसी उच्च श्रेणी की आत्मा मे जन्म लेने मे सहायक होगा।

व्याकरण कक्षायें

परमात्मा एक शक्ति है, इस अगाध शक्ति तक शक्ति के ही माध्यम से पहुँचने की आवश्यकता होती है और वह शक्ति है ध्वनी ऊर्जा। ज्ञान का आदान प्रदान संवाद के माध्यम से मानव मात्र को छोड़कर अन्य किसी भी प्राणी में नहीं पाया जाता। संवाद व उच्चारण के लिये भाषा की आवश्यकता होती है।

भाषा क्या है ?

भाषा अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम माध्यम है।

अभिव्यक्ति भाषा व प्रतिकों से की जाती। भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है। ध्वनियों की वैविध्यता व परिवर्तन विभिन्न वर्णों को जन्म देती है।

वर्ण क्या है ?

जो ध्वनी हमारे मुख से प्रक्षेपित होती है उस ध्वनी का लिपिबद्ध किया हुआ रुप वर्ण है।

मन्त्रोच्चारण करते समय हम ध्वनी के सम्पर्क में आते हैं। प्रकाश जो ऊर्जा का ही एक प्रकार है उसे हम बिना किसी उपकरण के उत्पन्न नही कर सकते लेकिन ध्वनियों को उत्पन्न करने केलिये किसी भी उपकरण की आवश्यकता नही होती। हमारी मुखगुहा में ईश्वर प्रदत्त उपकरण विद्यमान हैं, जिनकी सहायता से हम विविध ध्वनियॉं उत्पन्न कर सकते हैं। हमारी जिह्वा मुखगुहा के जिस भाग को स्पर्श कर उच्चारण करती है वहीं से ध्वनी का उद्गम् होकर वर्णों की उत्पत्ति होती है। उदगम् के स्थानानुसार स्पर्शीय वर्णों का वर्गीकरण कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य व ओष्ठ्य इन पॉंच वर्गों में किया गया है। देवनागरी वर्णमाला में वर्णों के उच्चारण के लिये जिन अंगों का उपयोग होता है वह निम्नलिखित श्लोक से स्पष्ट होता है।

अष्टौ स्थानानि वर्णमुरःकण्ठःशिरस्तथा। जिह्वामूलम् च दन्ताश्च नासिकौष्ठौ च तालु च॥

इन सारे अंगों से उच्चारित होने वाले वर्णों का उपयोग हमारे भावों के आदान प्रदान के लिये संवादों के माध्यम से होता है जिसे हम भाषा कहते हैं।

व्याकरण क्या है ?

भाषा का व्यवहार सुचारु रूप से चले इसिलिये कुछ नियम बनाये गये, इन्हीं नियमों का नामकरण व्याकरण है।

क्+ऋ= कृ (व्यंजन् + स्वर = अक्षर)



गीता मैत्री ई-पत्रिका के पंचम वर्षपूर्ति विशेषांक का श्रेय-पृष्ठ, जिसमें संस्थापक अध्यक्ष से लेकर लेखक एवं संयोजक तक की सूची दी गई है।

यह जो अक्षर बना, इसका शास्त्र जानना इसे व्याकरण कहते हैं।

पतंजली मुनी ने इसे शब्दानुशासन नाम दिया।

" भाषा के आदान प्रदान के लिये जिन नियमों का पालन करते हैं उसे शब्दानुशासन कहा जाता है "।

गीता परिवार द्वारा गीता के श्लोकों का सही उपचारण करने हेतू अनुस्वार, आघात व विसर्गों के सही उच्चार समझने हेतू,,सरल पठनीय श्रीमद्भगवद्गीता का प्रकाशन हुआ।

प्रारम्भ में नदी का मुहाना एक पतली रेखा की तरह होता है लेकिन आगे पथ पर चलते चलते जैसे नदी विस्तार प्राप्त करती है और अंतिम लक्ष्य सागर होता है, ठीक वैसे ही यह गीता कक्षायें अब शैशवावस्था से किशोरावस्था की ओर बढ रही हैं और इस अवस्था को और बलवान, सुदृढ करने हेतू गीता परिवार मे व्याकरण को भी जानना आवश्यक समझा।

हमारे व्याकरण विदों ने इस ज्ञान गंगा को हम तक पहुँचा दिया है, इसके भँवर में हम समा गये हैं, अब तो पूर्ण रूप से ज्ञान से सराबोर होकर हम सभी अनुस्वार, विसर्ग, आघात, दीर्घ, ह्रस्व व हलंत वर्ण, संयुक्त, पूर्ण व अर्ध वर्णों की नवसूत्री द्वारा भगवद्गीताजी को जन जन तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। यह हम सभी साधकों के जीवन का ऐसा मील का पत्थर है जो हमारी इहलोक की यात्रा का दिशादर्शक है।

मूल संहिता पाठ पर आधारित भगवद्गीता को चरणानुसार पाणिनीय व्याकरण के आवश्यक नियमों का समावेश कर श्रीमद्भगवद्गीता को आबाल वृद्धों तक पहुँचाने में सरल पठनीय गीता व व्याकरण कक्षायें एक महत्वपूर्ण योगदान दे रहीं हैं।

समय समय पर सारे व्याकरण नियमों का समावेश कर कक्षाओं का संचालन साधकों के शुद्ध उच्चारण में सहायक है। साधकों के उच्चारण दिन प्रतिदिन शुद्ध होते जा रहे हैं। जिन संस्कृत के श्लोकों को कठिन समझकर मानव, मात्र गीताजी को स्पर्श कर छोड़ देते थे,आज वही इन व्याकरण नियमों का अध्ययन कर सरलता से गीताजी का अध्ययन कर रहे हैं। संधी व संधी विच्छेद के नियम, मूल अर्थ को स्थिर रखकर उच्चारण शुद्ध करने में अती सहायक सिद्ध हुये हैं।

चारों स्तरों के साधकों के लिये ग्यारह भाषाओं मे अलग अलग व्याकरण कक्षाओं का संचालन किया जाता है।

व्याकरण कक्षायें व प्रशिक्षक

सर्वपल्ली डॉ राधाकृष्णन् के मतानुसार

No teacher can teach until he or she is learning by himself, no lamp can light another lamp until it continues to burn its

own flame " .

"Teaching is self learning "

आजीवन साधना करना ज्ञान प्राप्ती के लिये अती आवश्यक है, अतएव सर्व प्रशिक्षकों को आवश्यक नियमों जैसे चरणों का पृथक्करण, आघात, अनुस्वार, विसर्ग,संधी व संधी विच्छेद के नियमों से अवगत कराने के लिये, विशेष व्याकरण कक्षाओं का आयोजन किया गया, जिससे सारे शिक्षक प्रशिक्षित होकर पूर्ण आत्मविश्वास के साथ कक्षाये संचालित कर रहे हैं। प्रशिक्षकों के ज्ञानार्जन से सारे साधक भी लाभान्वित हुये। गीताध्ययन रोचक, सुलभ व भावपूर्ण हो गया।

धन्यवाद सारे संचालक, व्याकरण विद् व प्रशिक्षक व अंत में साधक, जिनकी बढ़ती उपस्थिति हमारा उत्साह वर्धन कर, हमारा आध्यात्मिक मार्ग प्रशस्त कर रही है।

अतिरिक्त कक्षाएँ

अतिरिक्त कक्षाएँ क्या हैं ?

१) वह उपक्रम या संथा वर्ग,जो निर्धारित समय के बाद अतिरिक्त अधिक समय देकर किया जाता है, जिससे उत्तम विद्यार्थी और परीक्षार्थी तयार हो, उसे अतिरिक्त कक्षा कहते हैं।

२) शुद्ध उच्चारण के साथ साधकों द्वारा श्लोकों से संबंधित विषय या पाठ्यक्रम को पूर्णरूप से समझने के लिये आयोजित की जाने वाली कक्षायें अतिरिक्त कक्षाएँ कहलाती हैं।

अतिरिक्त कक्षाओं के क्या उद्देश्य हैं ?

अतिरिक्त कक्षाओं के तीन मुख्य उद्देश्य हैं।

१) किसी अपरिहार्य कारण से छुटे हुये पाठ्यक्रम की पूर्ती करने के लिये, उस भाग को जानना, समझना।

२) परीक्षा की उत्तम पूर्व तयारी करवाना

३) साधकों के कंठस्थीकरण प्रदर्शन को सुधारकर परीक्षा पद्धति से अवगत कराना

अतिरिक्त कक्षाओं का संचालन कैसे होता है?

परीक्षा की पूर्ण तयारी के लिये, विभिन्न स्तरों पर आवश्यक अध्यायों का अध्ययन इन कक्षाओं में किया जाता है।

चारों स्तरों की परीक्षाओं के लिये कण्ठस्थिकरण करवाकर परीक्षा पद्धति की जानकारी दी जाती है।

प्रत्येक स्तर की परीक्षा मे समावेशित अध्यायों की (Mock test) अभ्यासिक परिक्षण करवाया जाता है।

परीक्षा के नाम व सम्मिलित अध्याय

परीक्षा समावेशित अध्याय

१) जिज्ञासु १२,१५,१६.

२) पाठक. ९,१२,१४,१५,१६,१७

३) पथिक. उपर्युक्त + १,३,४,५,६,७

४) गीताव्रती सम्पूर्ण अठारह अध्याय

मॉक टेस्ट साधकों की पूर्व तैयारी का मूल्यांकन कराने में सहायक होता है। साधकों की समस्याओं का समाधान उनके आत्मविश्वास में वृद्धि करता है .

सारी समस्याओं का समाधान हो जाने पर साधक खुशी खुशी बढ़े हुये मनोबल के साथ परीक्षा युद्ध के लिये झूम प्रांगण में उतरते हैं, और विजयश्री प्राप्त करते हैं।

शैक्षणिक व सांस्कृतिक उत्कृष्टता का इससे अच्छा प्रावधान और कोई हो ही नहीं सकता।

जयश्री कृष्ण

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2025-06/snsthaagt-snrcnaa/saadhk-se-giitaapremii-tk/

GEETĀ VICAKṢAṆA: A New Milestone in the LearnGeeta Journey

३ मिनट पठन · १ चित्र



Title card for the Geeta Gayan online session held on 21 June 2025, hosted by Geeta Pariwar and LearnGeeta.

With the divine grace of **Bhagwan Shri Krishna** and under the visionary guidance of **Param Pujya Swamiji**, the *LearnGita* journey has taken a remarkable leap into deeper waters of Geeta sādhanā with the launch of the **GĪTĀ VICAKṢAṆA** series – an advanced initiative for dedicated sādhakas.

This journey comprises **four structured levels** of internalization and mastery:

1. **GĪTĀ VICAKṢAṆA – Ślokank (Verse Numbering)**
2. **GĪTĀ VICAKṢAṆA – Reverse Order**
3. **GĪTĀ VICAKṢAṆA – Ślokārtha (Verse Meaning)**
4. **GĪTĀ VICAKṢAṆA – Charan-wise Recitation**

The VICAKṢAṆA Journey began with the very first *Ślokank batch* on **20th March 2023**, comprising ~**100 Geetavrati Sādhakas**. Since then, over **1100+ Geetavrati and Pathaka Sādhakas** have been benefitted across multiple batches.

Key Features of the Classes

Class Structure:

• *Monday to Friday sessions*
• For Levels 1 & 2: Alternate day classes
• For Levels 3 & 4: Regular daily classes
• Integrated *reverse-order exam practice*

Schedule:

• Designed to suit various learning capacities
• Weekly assignments to memorize śloka numbers
• Approx. *100-day* course duration

जय श्री कृष्ण!

गीता परिवार के माध्यम से भगवद्गीता का अध्ययन सरलतम रीति से जन-जन के लिए सुलभ हो पाया।केवल अध्ययन तक सीमित न रहते हुए साधकों ने भगवद्गीता कंठस्थठ कर जिज्ञासु,पाठक,पथिक एवं गीतव्रती परीक्षाएं दी | साधकों की उत्कंठा देख प. पू. स्वामीजी ने इस गीतायात्रा को नई दिशा प्रदान करी *गीता विचक्षण* के रूप में !

यह परीक्षा ४ स्तरों पर विभाजित है:

- गीता विचक्षण(श्लोकांक) – अंक से श्लोक कंठस्थिकरण
- गीता विचक्षण(अवरोही क्रम) – अवरोही क्रम में श्लोक वाचन
- गीता विचक्षण(श्लोकार्थ) अर्थ से श्लोक कंठस्थिकरण
- गीता विचक्षण(चरणानुसार)

श्लोकचरण से श्लोक वाचन

गीता विचक्षण(श्लोकांक) की कक्षाओं का आरंभ 20मार्च 2023 को लगभग 100साधकों के साथ हुआ था!अब तक 1500+ साधक 6 बैचों के अंतर्गत कक्षाओं का लाभ ले चुके है।

गीता विचक्षण(श्लोकांक) की कक्षाएं लगभग 100 दिन सोमवार से शुक्रवार तक रहती है। इसमें श्लोकांक के साथ अवरोही क्रम का भी अभ्यास होता है।

ये कक्षाएं 6समय सत्रों व 8भाषाओं में होती है।

इसके पश्चात श्लोकार्थ कक्षाओं का आरंभ 1 जनवरी 2024 में हुआ। द्वितीय श्लोकार्थ बैच 5 समय सत्रों व 6भाषाओं में 400 साधकों के साथ अभ्यासरत हैं।

https://practice.learngeeta.com इस लिंक के माध्यम से साधक श्लोकांक व अवरोही क्रम का अभ्यास करते है।

स्वामी जी के कथनानुसार “गीता को कंठ, कंठ से मस्तिष्क और मस्तिष्क से हृदय में स्थित” करने के लिए गीता विचक्षण अभ्यास प्रयासरत है।

अब तक _463 साधकों ने गीता विचक्षण(श्लोकांक) और 354साधकों ने गीता विचक्षण(अवरोही क्रम)_ की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है।

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/snsthaagt-snrcnaa/geeta-vicaksana-a-new-milestone-in-the-learngeeta-journey/

03

03 संस्थागत संरचना

महाकुम्भ में महाप्रचार

पूज्य स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरि जी महाराज के प्रेरणास्पद ध्येय वाक्य—"गीता पढ़ें, पढ़ाएँ, जीवन में लाएँ"—को साकार करते हुए गीता परिवार ने 20 जनवरी से 12 फरवरी 2025 तक गीता प्रचार का अभूतपूर्व अभियान चलाया।

१० मिनट पठन

महाकुंभ प्रयागराज 2025 में गीता महायज्ञ, गीता मैत्री मिलन एवं गीता भक्ति दिवस

"जहाँ गीता है, वहाँ जीवन है। जहाँ वेद हैं, वहाँ भारत की आत्मा है।"

महाकुंभ: भारत की आध्यात्मिक चेतना का महासंगम

'कुंभ' केवल एक पर्व नहीं, बल्कि भारत की सनातन संस्कृति का अमृत स्रोत है। समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत कलश की स्मृति में आयोजित यह महोत्सव, हर बारह वर्षों में चार तीर्थों—प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक—में होता है। परंतु महाकुंभ का आयोजन 144 वर्षों में एक बार होता है और यह युग का दुर्लभतम सौभाग्य है कि हम इस दिव्य अवसर के साक्षी बने।

प्रयागराज की त्रिवेणी संगम भूमि पर, जहाँ गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती मिलती हैं, वहाँ इस बार केवल जल का संगम नहीं हुआ—बल्कि ज्ञान, भक्ति और कर्म की त्रिवेणी भी प्रवाहित हुई।

गीता परिवार का विराट महायज्ञ

2.5 लाख पत्रक, 1000 बैनर, 400 होर्डिंग्स के माध्यम से गीता का संदेश जन-जन तक पहुँचा। त्रिवेणी संगम पर गूंजते गीता श्लोक और हर-हर महादेव के उद्घोष ने वातावरण को दैवी ऊर्जा से भर दिया। नागा साधुओं, संत मंडलियों, गृहस्थ श्रद्धालुओं—सभी ने गीता के अमृत को श्रद्धापूर्वक ग्रहण किया।

यह केवल प्रचार नहीं था, बल्कि आत्ममंथन, धर्मस्थापना और जीवन के पुनर्जागरण का महायज्ञ था।

19वाँ गीता मैत्री मिलन – कार्ष्णि पीठ, प्रयागराज

महाकुंभ के पुण्यकाल में **कार्ष्णि पीठाधीश्वर पूज्य स्वामी श्री गुरुशरणानंद जी महाराज एवं पूज्य स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरि जी महाराज** के सान्निध्य में 19वाँ गीता मैत्री मिलन अत्यंत भव्य, भावपूर्ण एवं दिव्य रूप में संपन्न हुआ।

संगीतमय गीता पारायण में आ. पूजा गोयल भाभी जी एवं आ. ज्योति शुक्ला दीदी ने भक्ति स्वर लहरियाँ बिखेरीं। गीता पोथी यात्रा में स्वयं पूज्य स्वामी जी की सहभागिता रही। दीप प्रज्वलन और गीता आरती ने सम्पूर्ण वातावरण को दिव्यता से आलोकित किया।

गुजरात से आए 14 वर्षीय ध्रुव जोशी और 8 वर्षीय मैत्रयी जोशी को पूज्य स्वामी जी ने "गीता का कंप्यूटर" और "भविष्य की आशा की किरणें" कहकर सम्मानित किया।

नागपुर के निष्ठावान साधक श्री पुंडलिक जी रामदासानी द्वारा संकलित नित्यपाठ पुस्तिका का विमोचन हुआ, जो साधकों के लिए एक अमूल्य आध्यात्मिक निधि सिद्ध हुई।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का युगल संचालन अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. आशू गोयल भैया एवं राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. संजय मालपाणी भैया ने अपनी गरिमामय वाणी और प्रेरक शैली से किया। उनके संचालन ने सभा को ऊर्जा, अनुशासन और भक्ति का अद्वितीय संगम प्रदान किया। आयोजन का समापन संतों, साधकों एवं समर्पित कार्यकर्ताओं के भावपूर्ण सम्मान के साथ हुआ। आ. रूपल शुक्ला दीदी एवं आ. कविता वर्मा दीदी की कोमल वाणी में गुंजित समापन प्रार्थना ने वातावरण को भक्ति, कृतज्ञता और आनन्द से भर दिया।

इस महोत्सव में प्रयागराज ही नहीं, अपितु देश-विदेश से गीता व्रती, प्रचारक एवं साधक पधारे। विशेष सहयोगी रहे मुंबई से पधारे श्री सुधांशु अग्रवाल जी, श्री अभय भुतड़ा जी, श्री संजय भुतड़ा जी एवं उनका समर्पित परिवार, जिनकी आस्था और सेवा ने इस पर्व को और गरिमा

प्रदान की। **यह आयोजन केवल स्मरणीय नहीं, वरन् आत्मा के जागरण, संगठन के समर्पण और संतों के सान्निध्य में जीवन के पुनर्जन्म का साक्षात् पर्व बन गया।**

गीता भक्ति दिवस – पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी महाराज का 76वाँ जन्मोत्सव

गीता भक्ति दिवस पर परम पूज्य स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरि जी महाराज का 76वाँ जन्मोत्सव अपने आप में साक्षात् त्रिवेणी संगम बन गया—जहाँ भारतीय तिथि और ग्रेगोरियन दिनांक का अद्वितीय संगम, महाकुंभ का पावन अवसर और प्रयागराज की पुण्यधारा एक साथ जुड़ गए।

पिछला 75वाँ जन्मोत्सव पुणे के आलंदी तीर्थ क्षेत्र में भव्य अमृत महोत्सव के रूप में मनाया गया था। परंतु उसके दिव्य समापन को और अधिक आलोकित करने के लिए, इस बार प्रयागराज की पावन कुंभ स्थली को चुना गया—ताकि गीता भक्ति दिवस की दिव्यता निरंतर प्रवाहित और विस्तारित होती रहे।

पूज्य स्वामी जी का व्यक्तित्व भारतीय वेद-परंपरा के उत्थान का अमिट दीपस्तंभ है। जिन **1100 वेद शाखाओं** का कभी भारत भूमि पर प्रकाश था, उनमें से आज केवल *11* शाखाएँ बची हैं। इन्हें जीवित रखने हेतु स्वामी जी ने प्रण लिया है और देशभर में **40 वेद विद्यालयों** के माध्यम से *1880* बालकों को निःशुल्क वेदाध्ययन की सुविधा प्रदान कर रहे हैं। स्वामी जी को यथार्थ में चलते-फिरते विश्वविद्यालय कहा जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी।

इस पावन अवसर पर अनेक संत-महात्माओं की उपस्थिति रही। कार्ष्णि पीठाधीश्वर स्वामी श्री गुरुशरणानंद जी महाराज ने अपने करकमलों से पावन अभिमंत्रित जल द्वारा पूज्य स्वामी जी का अभिषेक किया। सभी संतों ने मंगलगीत और मंगलाचरण के साथ पूज्य स्वामी जी का अभिनंदन किया।

गीता भक्ति दिवस के इस पुण्य दिन, स्वामी जी के जीवन-परिचय पर आधारित एक विशेष ग्रंथ का विमोचन संतों की साक्षी में सम्पन्न हुआ। यह ग्रंथ उनके जीवन के विविध आयामों और समाजसेवा की अनुपम गाथा का साक्षी बनेगा।

संत-साधु एवं समाजसेवियों की दिव्य उपस्थिति

इस महोत्सव की गरिमा को दिव्यता और प्रताप प्रदान करने वाले अनेक संत, आचार्य एवं राष्ट्रसेवक उपस्थित रहे, जिनमें प्रमुख रूप से निम्न विभूतियाँ सम्मिलित थीं—

परम श्रद्धेय पूज्य स्वामी श्री गुरुशरणानंद जी महाराज कार्ष्णि पीठाधीश्वर, वृन्दावन

पूज्य गीता महर्षि स्वामी श्री ज्ञानानंद जी महाराज प्रख्यात गीता वक्ता एवं आध्यात्मिक विचारक

पूज्य स्वामी श्री विश्वेश्वरानंद जी महाराज वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड एवं सन्यास आश्रम, मुंबई

पूज्य मुनि श्री भद्रेश स्वामी जी एवं पूज्य मुनि श्री वात्सल स्वामी जी स्वामीनारायण संप्रदाय, अहमदाबाद

पूज्य मुनि श्री लोकेश कुमार जी जैन परंपरा के प्रतिष्ठित संत

श्रद्धेय स्वामी श्री हृदयानंद जी महाराज जम्मू से पधारे दिव्य संत

श्रद्धेय स्वामी श्री राजेंद्रदास जी महाराज जाकेलाधाम, हरियाणा

परम् आदरणीय श्री सुरेश 'भैय्याजी' जोशी जी पूर्व सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

आदरणीय श्री कृष्णगोपाल जी सह सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

आदरणीय डॉ. दिनेश जी सह सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

आदरणीय श्री रामलाल जी अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

आदरणीय श्री रमेश जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रयागराज के वरिष्ठ कार्यकर्ता

इन सभी विभूतियों की साक्षी और सहभागिता ने इस जन्मोत्सव को केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि धर्म, संस्कृति और राष्ट्र चेतना का दिव्य संगम बना दिया।

विशिष्ट भेंट एवं संतों की श्रद्धा-संवेदना

कार्यक्रम की पूर्णता के पश्चात **योगाचार्य पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज, भारत सरकार के माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी,** तथा **उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी** ने स्वामी जी से विशेष भेंट कर उनके चरणों में श्रद्धा निवेदित की। यह भेंट न केवल आध्यात्मिक संवाद का अवसर बनी, अपितु राष्ट्र और धर्म के समन्वय का एक प्रेरक क्षण भी सिद्ध हुई।

इस दिव्य आयोजन की शोभा बढ़ाने हेतु **उत्तर प्रदेश की माननीय राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी** भी विशेष रूप से पधारीं। उन्होंने न केवल स्वामी जी से आत्मीय भेंट की, अपितु महाकुंभ के आध्यात्मिक वातावरण में सहभागी बनकर **त्रिवेणी संगम में पुण्यस्नान** भी किया, जिसे उन्होंने एक अविस्मरणीय और दिव्य अनुभव बताया।

भीड़ की विशालता और आवागमन की कठिनाइयों के बावजूद, **अनेक संतों एवं महात्माओं ने घंटों की यात्रा कर स्वामी जी के दर्शन हेतु पधारने का संकल्प लिया**। उनके आगमन में न कोई थकान थी, न कोई संकोच—केवल **श्रद्धा की गंगा और प्रेम की वर्षा** थी, जो स्वामी जी के प्रति उनके भावों की गहराई को दर्शाती रही।

यह दृश्य मानो भक्ति, समर्पण और संत-संवाद का एक जीवंत चित्र था, जहाँ हर चरण, हर दृष्टि, और हर वाणी में केवल एक ही भाव था —**"स्वामी जी के प्रति अटूट श्रद्धा और प्रेम"**।

"चलते–फिरते साक्षात गीता के प्रमाण" – एक जीवन का आलोक

स्वामीनारायण संप्रदाय के पूज्य मुनि श्री भद्रेश स्वामी जी ने कहा—

"स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी महाराज केवल गीता के प्रचारक नहीं हैं—वे चलते–फिरते साक्षात गीता हैं। उनके जन्मोत्सव का उत्सव मनाना इस सत्य का उद्घोष है कि भारत भूमि ही संतों की जन्मभूमि है। वे जहाँ जाते हैं, वहाँ धर्म की सुगंध, वेदों की ध्वनि और संस्कृति की ज्योति स्वतः फैल जाती है।"

यह वाक्य केवल प्रशंसा नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक सत्य का उद्घाटन है। स्वामी जी का जीवन शांत, स्थिर, और समर्पित है—जो गीता के स्थितप्रज्ञ पुरुष की परिभाषा को सजीव करता है।

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः। वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते॥

श्लोक सुनें
२.५६

स्वामी जी का जीवन इस श्लोक का साक्षात स्वरूप हैं ऐसा बताते हुए मुनि भद्रेश जी ने कहा कि; जब राष्ट्र में धार्मिक विघटन या संस्कृति पर आघात होता है, तब भी स्वामी जी शांत, संयमित और समाधानकारी रहते हैं। जब सम्मान, पद, प्रतिष्ठा की वर्षा होती है, तब भी वे विनम्रता और निर्लिप्तता के साथ आगे बढ़ते हैं। उनके भीतर राग नहीं, समत्व है; भय नहीं, धर्म का साहस है; क्रोध नहीं, करुणा है। **वे संत हैं, परंतु केवल सन्यासधारी नहीं—वे संस्कृति के सेनापति हैं, जो स्थिरता और विवेक के साथ धर्म की रक्षा करते हैं।**

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत्।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी॥

श्लोक सुनें
२.७०

इस श्लोक का सन्दर्भ लेकर मुनि जी ने आगे कहा की स्वामी जी इस श्लोक को अपने जीवन से चरितार्थ करते हैं; उनके पास संपत्ति नहीं, परंतु संपन्नता है—वेदों की, संस्कारों की, संतों की कृपा की। उनके पास कामनाओं की सूची नहीं, परंतु कर्तव्य की ज्योति है। वे सभी प्रकार की प्रशंसा, निमंत्रण, सम्मान को समुद्र की तरह स्वीकार करते हैं—परंतु अचल रहते हैं, तृप्त रहते हैं। उनका जीवन बताता है कि **सच्चा संत वह है, जो संसार के मध्य रहकर भी संसार से परे होता है।**

सनातन की रक्षा, संस्कृति का आलोक, राष्ट्र का पुनर्जागरण

महाकुंभ के इस दिव्य संगम में गीता परिवार ने जो अमृत-ज्योति प्रज्वलित की है, वह केवल एक आयोजन की स्मृति नहीं— बल्कि **सनातन धर्म की पुनः प्रतिष्ठा, संस्कृति की पुनः चेतना, और राष्ट्र की पुनः जागृति का अमर संकल्प है।**

यह यज्ञ... यह मिलन... यह गीता भक्ति दिवस—
तीनों मिलकर उस आध्यात्मिक घोष का रूप बन गए हैं, जो भारत के कण–कण में युगों तक गूंजता रहेगा: **"संस्कृति हमारी आत्मा है, गीता हमारा पथ है, और संत हमारे दीप हैं।"**

परम पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी महाराज का जीवन स्वयं एक धर्मध्वज है — जो वेदों की रक्षा, गीता के प्रचार और संत परंपरा की अविचल धारा को निरंतर आगे बढ़ा रहा है। **यह महायज्ञ कोई समापन नहीं... बल्कि उस युग का आरंभ है—**

जहाँ हर बालक वेदों की ध्वनि में पलेगा,
जहाँ हर गृहस्थ गीता के श्लोकों में जीवन पाएगा,
और जहाँ हर संत की वाणी में राष्ट्र का कल्याण गूंजेगा।

आज हम सबका एक ही संकल्प है—
धर्म की रक्षा ही नहीं, धर्म का जीवन में आचरण करें।
संस्कृति को केवल सहेजें नहीं, बल्कि पीढ़ियों तक प्रवाहित करें।
राष्ट्र की सेवा केवल करें ही नहीं, बल्कि उसे आध्यात्मिक आलोक से आलोकित करें।

जय गीता! जय वेद! जय भारत!
सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/snsthaagt-snrcnaa/mhaakumbh-men-mhaaprcaar/

03

०३ संस्थागत संरचना

गीता मैत्री मिलन

गीता परिवार के जन समुदाय को एक साथ लाकर कार्यों को परिभाषित कर आपस मे मैत्र व स्नेह संबंध प्रस्थापित करने के लिए गीता मैत्री मिलन का आयोजन किया जाता है। श्रीमद्भगवद्गीता ज्ञान का प्रसार सारे विश्व में कर, भगवान श्रीकृष्ण का जीवन यापन के लिए दिया गया संदेश जन जन तक पहुंचाना ही इसका मुख्य उद्देश्य है।

२३ मिनट पठन

क्या है ? गीता मैत्री मिलन !

त्रिभुवन को पवित्र करने वाले सारे जलप्रवाहों में जाह्नवी का जो स्थान है, सातों समुद्रों को पार कर बहने वाली पवन का जो स्थान है, वही स्थान गीता भागिरथी की स्वरगंगा मे विश्व के जन समुदाय को भिगोने के लिए किया गया प्रयास है, गीता मैत्री मिलन। ज्ञान की बहती पवन है गीता मैत्री मिलन।

कर्म ही जीवन रूपी युद्धों के अस्त्र शस्त्र हैं इस भावना का प्रसार है गीता मैत्री मिलन। संक्षेप मे ज्ञान, कर्म, व सद्भावना का आदान प्रदान है, गीता मैत्री मिलन। अहंकार रहित भावना से मन्दिर में प्रज्वलित मन्द दिये की ज्योत है, गीता मैत्री मिलन। गीता मैत्री मिलन दश दिशाओं में गीता ज्ञान का प्रकाश फैलाने का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ने वाला ऐसा उपक्रम है जो वसुधैव कुटुम्बकम् इस उक्ति को सार्थक करता है।

गीता मैत्रीमिलन का उद्देश्य क्या है ?

सारे विश्व के गीता परिवार की सारी शक्तियों को एकत्रित कर, लक्ष्य प्राप्ति कर समाज को सुसंस्कृत व सशक्त बनाने का लक्ष्य लेकर मित्रता, परोपकार, निरपेक्ष सेवा व सद्भावना का आदान प्रदान गीता मैत्री मिलन का मुख्य उद्देश्य है।

ऐसा कहते हैं, प्रत्येक बुराई में कुछ अच्छाई छिपी होती है।

“Every cloud has silver lining “

सन् 2020 मे कोरोना की महामारी के पश्चात् Online गीता संथा वर्ग का रथ परम श्रद्धेय स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरिजी के सारथ्य से चल पडा, और रथी हैं श्रीमान् आशुजी गोयल व श्रीमान् संजयजी मालपाणी। इन online संथा वर्गों मे वैसे तो बहुत ममत्व के साथ वर्ग चलते हैं, किन्तु प्रत्यक्ष मिलन नहीं होता, आमने सामने वार्तालाप नहीं होता। प्रत्यक्ष चर्चा करने के लिए, जनसमुदाय में आध्यात्मिक प्रगती, एकता व अखण्डता को स्थापित करने के लिए गीता मैत्री मिलन का श्रीगणेश, गुरुदेव जी के आशीर्वादोंसह राष्ट्रीय स्तर पर सर्वप्रथम 20मार्च 2022 को यशवंतराव चव्हाण नाट्यगृह कोथरूड पुणे मे प्रातः 9.15 से 11.30 तक श्रीमान् आशूजी गोयल की अध्यक्षता में आयोजित किया गया, उसके बाद तो राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय मैत्री मिलन की शृंखला सारे विश्व के गीता परिवार को एकसूत्र मे बांधते चली।

20मार्च 2022 से 16 August 2025 तक पांच आंतरराष्ट्रीय व 19 राष्ट्रीय, कुल चौबीस मैत्री मिलन गीता परिवार द्वारा आयोजित किये गये, सूची निम्नलिखित है।

पॉंच वर्षों में गीता मैत्री मिलन कब और कहाँ ?

अध्यक्षीय संदेश के मुख्य अंश

“Cuckoo doesn’t sing, because she can sing, but she sings, because she has a song to sing“

उसीप्रकार गीता परिवार के मैत्री मिलन, मात्र मिलन ही नहीं वरन् श्रद्धेय स्वामीजी गोविन्ददेव गुरुजी जैसे संतो की वाणी से भगवान के मुखारविन्द से मुखरित, भगवद्गीता के संदेश व समर्पित जीवन गीत हम तक पहुंचाने का प्रयास होता है। पूर्ण समर्पण से किये गये अभ्यास के पश्चात् परम उत्कर्ष की ओर ले जाने वाली गीता को जन जन तक पंहुचाने के लिये सारा गीता परिवार कटिबद्ध है।

- परम श्रद्धेय स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरिजी (.सिंगापुर मैत्री मिलन 23 नवम्बर 2023)

सिंगापुर के 23 नवम्बर 2023 मे आयोजित आंतरराष्ट्रीय मैत्री मिलन पर उद्धृत स्वामीजी के कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत हैं। स्वामीजी ने कहा“ भगवद्गीता का मुख्य स्वर मैत्री का है “। शांत, लालन, माधुर्य, दास्य, वात्सल्य भाव तो था ही परन्तु इन सबमें सख्य भाव की प्रधानता दिखती है।

भगवान अर्जुन को सखा मानते हैं और अर्जुन भी कृष्ण को सखा कहते हैं। सख्यभाव को अभिव्यक्त कर अर्जुन कहते हैं।

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं,

हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।

अजानता महिमानं तवेदं,

मया प्रमादात्प्रणयेन वापि॥

भगवान अर्जुन से क्या कहते हैं ?

योगः प्रोक्तः पुरातन।

स एवायं मया तेऽद्य,

भक्तोऽसि मे सखा चेति,

रहस्यं ह्येत दुत्तमम्॥

भगवद्गीता मे बहुत से भाष्य हुए लेकिन ज्ञानेश्वर महाराज के श्रीमुख से क्या निकला ? भगवान कृष्ण कहते हैं “ मै तो निराकार हूं फिर भी साकार बन गया, क्योंकि जो मुझसे इतना प्रेम करते हैं, मुझे एक बार उनके दर्शन करना था।

स्वामीजी ने आगे कहा “काम अपना करना, याद भगवान को करना। प्रतिदिन गीताजी के कुछ श्लोक अवश्य पढें, न हो सके तो एक श्लोक, यह भी नहीं सके तो एक चरण या

मामनुस्मर युध्य च”।

जीव भगवान का है और शरीर संसार का, शरीर से करना भगवान की सेवा और मन से करना भगवान को याद, तो जीवन आनन्द से चलेगा। भगवान को संतुष्ट कर आप भगवान् तक पहुंच जाते हैं। मामनुस्मर युद्ध च इस छोटेसे टुकडे का इतना बडा अर्थ है।

दूसरा टुकडा है – “कर्मण्यैवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन “ ॥2/ 47॥

श्लोक सुनें
२.४७

मेरा काम मेरा कर्म करना इतना ही है बस।भगवान फल अवश्य देंगे,आज नहीं तो कल देंगे, इस जन्म मे नहीं तो अगले जन्म मे देंगे,

तीसरा टुकड़ा है -“ न में भक्तः प्रणश्यति “9/31”

मेरी भक्ति करने वाले का कभी नाश नहीं होता। संकट नहीं आयेंगे ऐसा नहीं होगा लेकिन संकट से उबारेंगे भगवान् ही।ये छोटे चरण बहुत ही महत्वपूर्ण हैं, एक छोटा निर्णायक चरण भी आपका उद्धार करेगा।

संस्कृति की सेवा करने के लिए, सनातन धर्मियों को एक मंच पर लाने के लिये, बाल मन को मोहने वाले कार्यक्रमों के निर्माण कर, बालपन से ही भारतीय जीवन मूल्यों की स्थापना बालकों मे करने का प्रयास गीता परिवार विविध उपक्रमों से कर रहा है, उसी की एक श्रृंखला है, गीता मैत्री मिलन। भारतीय जीवन मूल्यों की मांग सारे विश्व मे हैं, उसी की पूर्ती व प्रसार करने के लिए कटिबद्ध है,गीता परिवार, गीता पढें, पढायें, जीवन मे लायें इस उक्ति के साथ।

- महामहोपाध्याय श्रद्धेय स्वामी श्रीभद्रेशजी maharaj GMM, USA, !st Oct 23

1 अक्टूबर 2023 को अमेरिका (USA) के न्यू जर्सी में आयोजित गीता मैत्री मिलन में **श्रद्धेय स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरिजी** के साथ **महामहोपाध्याय श्रद्धेय स्वामी श्री भद्रेशजी** प्रमुख अतिथि के रूप में विराजमान थे। उनके वक्तव्य के कुछ आशीर्वचन यहाँ प्रस्तुत हैं:

श्रद्धेय स्वामी श्री भद्रेशजी

"सर्वेभ्यो नमो नमः" से आरम्भ कर, समस्त जनसमुदाय से

1. "गीता परिवार मेरा परिवार"
2. "जब हम एकता से काम करेंगे, पूरे विश्व को वश कर लेंगे"

इन पंक्तियों को दुहराने का आग्रह कर स्वामीजी ने अपना वक्तव्य आरम्भ किया।

मैत्री शब्द की यथार्थ उत्पत्ति-भूमि श्रीमद्भगवद्गीता ही है। भगवान श्रीकृष्ण ने **बारहवें अध्याय** में अपने प्रिय भक्तों के लक्षण बतायें –

अद्वेष्टा सर्वभूतानां,
मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहंकारः,
समदुःखसुखः क्षमी॥१२/१३॥

श्लोक सुनें
१२.१३

भक्त का प्रथम लक्षण है अद्वेष्टा और दूसरा मैत्री।
जहाँ-जहाँ भी जीव-संपदा है, वहाँ मैत्री करनी है।

"गीता सामान्य ग्रन्थ नहीं है।"
स्वामी गोविन्ददेव गिरिजी ने 'हर घर गीता, हर कर गीता' – यह वाक्य गीता परिवार का समर्पित संकल्प बताया।
स्वामी श्री भद्रेशजी ने इसमें जोड़ते हुए कहा:

"हर कंठ गीता, हर हृदय में गीता। गीता हृदयस्थ हो।"

उन्होंने गीता के *18* अध्यायों का सार अत्यंत मार्मिक रूप से प्रस्तुत किया:

"श्रीमद्भगवद्गीता किसी व्यक्ति या समाज के लिए लिखा गया ग्रंथ नहीं है – यह सबके लिए लिखा गया विजय ग्रंथ है।"

इस ग्रंथ को क्रम से पढ़ना आवश्यक नहीं, अभ्यास व कंठस्थ करने हेतु क्रम आवश्यक है, परंतु भगवान के हितपूर्ण वाक्य किसी भी अध्याय से पढ़े जा सकते हैं। एक शब्द ही जीवन बदल सकता है।

प्रथम अध्याय केवल अर्जुन का नहीं, हर पढ़ने वाले की आँखों में अश्रु लाता है।
हम दुर्योधन, रावण या कंस को आदर्श नहीं मान सकते। अर्जुन की भूमिका हम सामान्य नागरिकों से मिलती-जुलती होने के साथ उनसे ऊपरी भी है।

अध्याय 1, श्लोक 20:

अथ व्यवस्थितान दृष्ट्वा
धार्तराष्ट्रान् कपिध्वजः।
प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते
धनुरुद्यम्य पाण्डवः॥

श्लोक सुनें
१.२०

उत्साह से भरे अर्जुन ने जैसे क्रिकेटर बॅट उठाता है, वैसे गाण्डीव उठाया और कहा:

सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत।

श्लोक सुनें १.२१

लेकिन श्लोक 26 में

तत्रापश्यत्स्थितान् पार्थः...॥ 1/26॥

श्लोक सुनें १.२६

संबंधियों को देखकर भावनाएँ बीच में आ गईं।
अब अर्जुन की उलझन थी: भावनाओं के साथ रहें या दायित्व निभाएँ?

गीता ऐसा ग्रंथ है जो मनुष्य की भावनाओं से जुड़ जाता है। इतना मनोवैज्ञानिक उदाहरण और कहीं नहीं मिलेगा।

भावनावश तो सभी होते हैं, पर अर्जुन जैसे पवित्र नहीं होते।
अर्जुन रो रहा है, शोकग्रस्त है।
वहीं **द्वितीय अध्याय के प्रथम श्लोक** में भगवान अर्जुन की तीन अवस्थाओं को पहचानते हैं:

1. स्थूल शरीर (आँसू)
2. सूक्ष्म शरीर (मानसिक भाव)
3. कारण शरीर (मोह)

भगवान को अर्जुन रोगी प्रतीत हुए वे वैद्य बनकर उपचार करने लगे।
गीता संवाद अब समस्त विश्व के समक्ष औषधि रूप में है।

जब अर्जुन ने शिष्यत्व स्वीकार किया, तब भगवान ने उनकी शरणागति को स्वीकार किया —
प्रथम शरणागति:

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्॥ 2/7॥

श्लोक सुनें २.७

दूसरी शरणागति:

सर्वधर्मान् परित्यज्य
मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो
मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥ 18/66॥

श्लोक सुनें १८.६६

भगवान कहते हैं: मेरी शरण में आ जाओ। पाप से मत डरो, मैं तुम्हारा उद्धार करूँगा। इन दोनों शरणागतियों के मध्य गीता का प्रवाह गंगा-प्रवाह के समान है।

स्थितप्रज्ञ की भाषा, 18 श्लोकों में ऐषा ब्राह्मी स्थिति को स्पष्ट करती है।

गीता केवल उपदेश नहीं।
गीता ऐतिहासिक प्रश्न से आरंभ होती है, उपदेश बीच में आता है, और
फलश्रुति अंत में मिलती है।

अर्जुन अठारहवें अध्याय में कहते हैं-

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा
त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः
करिष्ये वचनं तव॥ 18/73॥

श्लोक सुनें
१८.७३

अर्जुन ने यह नहीं कहा कि "मैं युद्ध करूँगा",
बल्कि कहा "जो आप कहेंगे वही करूँगा।"
यही है *"करिष्ये वचनं तव"* गीताजी की पूर्णाहुति।

इसके बाद **भगवानुवाच नहीं आता।**
अब संजय का संवाद शुरू होता है
धृतराष्ट्र दुःखी हैं, लेकिन **संजय प्रसन्न हैं**।

अंत में संजय कहते हैं:

यत्र योगेश्वरः कृष्णो
यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा
नीतिर्मतिर्मम॥ 18/78॥

श्लोक सुनें
१८.७८

महामहोपाध्याय स्वामी श्री भद्रेशजी ने कहा:
"मैं स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरिजी का शिष्य हूँ। गीता परिवार को ऐसे अद्भुत संत प्राप्त हुए हैं। यदि हम उनके दिखाए मार्ग पर चलें तो गीता का रहस्य सहजता से जीवन में समाहित हो सकता है।"

अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्रीमान आशूजी गोयल (मैत्रीमिलन यू. ए. ई. – दुबई,17 मई 2025)

(अध्यक्षीय वक्तव्य के मुख्य अंश)

मम जीवन पाथेय

बदल जाओ वक्त के साथ,
या फिर वक्त को बदलना सीखो।
मजबूरियों को मत कोसो,
हर हाल में चलना सीखो॥

सुन्दर पंक्तियों के साथ *"मम जीवन पाथेय"* इस मार्गदर्शक सत्र का आरम्भ, श्रद्धेय **स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरिजी** के आकाशवाणी सदृश आशीर्वचनों एवं पारम्परिक प्रार्थना व दीप प्रज्वलन के पश्चात **श्री आशू भैया** ने किया।

भारतवर्ष से हजारों मील दूर, विभिन्न प्रांतों, भाषाओं, संस्कृतियों से जीवन यापन के लिए *UAE (दुबई)* में आए हुए पांथिकों को संबोधित करते हुए आशू भैया बोले—

"श्रीमद्भगवद्गीता की आराधना व चिंतन के लिए एकत्रित सभी यह जानते हैं कि गीताजी पढ़ने के बाद हम वह चिराग बन गए हैं जो सदा रोशनी लुटाता है।"

भारत से दूर बसे पथिकों को **पाथेय** का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा—

- पाथेय क्या है?

हम जिस मार्ग पर चलते हैं वह है पथ, और उस पथ पर चलते समय जो आवश्यक साधन सामग्री (खाद्य पदार्थ आदि) लेकर चलते हैं, वह है पाथेय।
इहलौकिक व पारलौकिक दोनों जीवन को सुसह्य व सुखी करने के लिए आवश्यक प्रयास ही पाथेय है।

इस जीवन में, इहलोक में रहते हुए जो परलोक की व्यवस्था करता है, जिसने मृत्यु को जीवन रहते हुए जीत लिया, वही सच्चा योगी है।

भगवान अर्जुन से कहते हैं कि तपस्वी, ज्ञानी और कर्मकांडी से भी बढ़कर योगी बनो:

तपस्विभ्योऽधिको योगी,
ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः।
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी,
तस्माद्योगी भवार्जुन॥ 6/46॥

श्लोक सुनें
६.४६

योगी केवल इस जीवन के सामान्य पाथेय (बल, बुद्धि, ममत्व, वस्तु, व्यक्ति व परिस्थिति) की ही व्यवस्था नहीं करता, वह इहलोक के साथ परलोक के लिए भी पाथेय तैयार करता है।
जिसने पाथेय अच्छे से तैयार किया है, उसे किसी सहारे की आवश्यकता नहीं होती।

जीवन पथ पर चलते हुए तन व मन स्वस्थ रखें, परिवार, मित्रों व समाज की आवश्यकतानुसार अपना अमूल्य समय दान करें।

"दुश्मनी जमकर करो,
लेकिन इतनी गुंजाइश रखो,
कि वापस दोस्त बनो,
तो शर्मिंदा न होना पड़े।"

मित्र व समाज का बंधन बहुत बड़ी ताकत प्रदान करता है।

कभी सुख है, कभी दुःख है,
इसी का नाम जीवन है।
जो दुःख में भी न घबराए,
उसे इंसान कहते हैं॥

- भविष्य निधि

धन को आवश्यक महत्व दें, क्योंकि—

"अर्थ वह धुरी है, जिसके चारों ओर समाज की सारी मानवीय प्रक्रियाएं घूमती हैं।"

धन का आवश्यक व्यवस्थापन अति आवश्यक है।
धन के अभाव को दूर करना आवश्यक है, लेकिन उसके प्रभाव का त्याग भी आवश्यक है।
धन के लिए सुख-शांति, समाज व धर्म को दांव पर न लगाएं।

- धर्म

धर्म क्या है?

धर्म का अर्थ सम्प्रदाय या धार्मिकता नहीं है। उपासना पद्धति धर्म का एक अंग है।
धर्म का अर्थ है – कर्तव्य।
पितृधर्म, मातृधर्म, पुत्रधर्म, राष्ट्रधर्म – जिस भूमिका में हैं, उस कर्तव्य को निभाना ही धर्म है।
जो अपने कर्तव्य का ईमानदारी से पालन करे, उसका जीवन उन्नत है।
"अधिकार" या "लिबरेशन" – यह कल्पना पाश्चात्य है। हमारे देश में कर्तव्य पालन पर जोर दिया गया है।
कर्तव्य पालन करेंगे तो अधिकार स्वयं मिल जाएंगे।

सत्यम् ब्रूयात्, प्रियम् ब्रूयात्।
न ब्रूयात् सत्यम् अप्रियम्।

जिस प्रकार कड़वी दवाई शहद में घोलकर दी जाती है, ठीक वैसे ही मिठास में घोलकर कड़वे सत्य की पैकेजिंग करें।

- Balance Sheet of Life

What is a Balance Sheet?

वह विवरण जो किसी कंपनी की वित्तीय स्थिति स्पष्ट करता है।

What is the Balance Sheet of Life?
वह विवरण जो जीवन की स्थिति को प्रदर्शित करे — वह है *Balance Sheet of Life*।

"साई इतना दीजिए,
जामे कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा न रहूं,
साधु न भूखा जाए॥"

महाभारत में यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा था—
"कौन दरिद्र है?"
युधिष्ठिर ने उत्तर दिया:

"असंतुष्टः सः दरिद्रः।"
जो पास है उसी में संतुष्ट रहे — वही सच्चा श्रीमंत।

- जीवन की संतुलित Balance Sheet के लिए आवश्यक—

1) परिसम्पत्ति, वैभव (Assets)

जीवन के चार वैभव होते हैं:
A) व्यक्तिगत (Personal)
B) व्यावसायिक (Professional)
C) सामाजिक (Social)
D) आध्यात्मिक (Spiritual)

आपकी व्यक्तिगत संपत्ति, व्यावसायिक प्रगति, समाज में स्थान, और आध्यात्मिक उन्नति — इन चार मुख्य स्तंभों पर जीवन टिका है।
ये स्तंभ मजबूत हों, तो जीवन वैभवसम्पन्न जानिए।

- दो बातें अत्यंत महत्वपूर्ण:

1. **न अति दैन्यम्**
2. **न अतिमानिता**

अति दैन्य का प्रदर्शन उचित नहीं।
यहाँ भर्तृहरि नीतिशतकम् का एक श्लोक स्मरणीय है—

रे रे चातक, सावधान मनसा,
मित्र! क्षणं श्रृणुताम्।
अम्भोदाः बहवः सन्ति गगने,
सर्वेऽपि नैतादृशाः।
यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतः,
मा ब्रूहि दीनं वचः॥

वर्षा ऋतु में चातक पक्षी आशा से प्रत्येक मेघ को ताकता है, पर कवि कहता है— "रे चातक! आशा से हर मेघ को मत ताक, सभी मेघ समान नहीं होते।"

"खुदी को कर बुलंद इतना,
कि खुदा बंदे से पूछे –
तेरी रज़ा क्या है!"

तात्पर्य:
न तो अति दीनता उचित है, न अतिमानिता।
अतिमानिता अहंकार दर्शाती है —

"I am self-sufficient. I don't need anybody."
Such *super ego* is not appreciated.

धन इतना देना प्रभुजी,
कि हमारी आवश्यकताएं पूर्ण हो जाएं।

- Anger

क्रोध की एक छोटी सी चिन्गारी सर्वनाश का कारण बनती है।

क्रोध क्यों आता है ?

कामना मे विघ्न का आना, अहंकार पर चोट, मोह या लोभ,क्रोध के कारण हैं।

क्रोध को कैसे काबू मे करें ?

क्रोध आरम्भ मे छोटा होता है लेकिन heated argument से, वाद विवाद से वह बडा हो जाता है। क्रोध को छोटा रहते रोको .

- दो शब्द माँ के लिये, दो शब्द पिता के लिये

————————————————————-

श्री आशूजी ने इस सत्र के प्रारम्भ मे पालकत्व के कुछ आयाम स्पष्ट किये।

हम कहाँ चूक गये ?

हमने बच्चों को जीव शास्त्र सिखाया लेकिन जीवन शास्त्र नहीं, चित्रकला सिखाई लेकिन चरित्र कला सिखाना भूल गये, अंकगणित पढ़ाया लेकिन जीवन के गणित के कुछ प्रश्नों का हल बताने में हम चूक गये। सुखों की खोज में हम इतना भटक गये कि हमने शांति खो दी। इतिहास पढ़ाया लेकिन ऐतिहासिक नायकों की जीवन गाथा नहीं बताई

शान्ति खोजने निकले और शान्ति को ही दॉव पर लगा दिया।

आज का बच्चा पझल में फँस गया है। किस टुकडे को कहाँ फिट करना नहीं जानता।

जब भावनायें जुड़ जाती हैं तो हमें चीज़ें जैसी हैं वैसी दिखाई नहीं देतीं।

प्रकृति व समाज के दबाव में आकर हम बच्चों पर दबाव डालते हैं। अपेक्षाओं का पहाड़ बच्चे पर लाद देते हैं। दबाव बढ़ा आत्मविश्वास घटा।

Every individual is different, competition के भँवर मे फँसकर बच्चा आत्मविश्वास ही खो देता है,

स्वामीजी कहते हैं "when confidence is lost every thing is lost for ever and ever ।

Boost up the morale of your child by giving appropriate time for active listening .

माली बीज बोता है पौधे उगते हैं, वह हर पौधे की आवश्यकतानुसार अलग अलग व्यवहार करता है, किसी को धूप में, किसी को छांव मे, किसी को कम पानी, किसी को अधिक पानी, किसी को कम खाद, किसी को अधिक खाद डालता है। तभी सुन्दर रंगबिरंगे विविध गंध व स्वरूप के फूलों से उपवन सज जाता है।

बच्चों के जीवन की बगिया को सुन्दर बनाने के लिये उनकी आवश्यकता पहिचान कर सुविधायें प्रदान करना माता पिता का परम कर्तव्य है। जैसा फूल आना हो वैसा वातावरण प्रदान करना है।

गीता मैत्री मिलन (धुलिया) महाराष्ट्र

श्रीमान संञ्जयजी मालपाणी (गीता मैत्री मिलन, धुलिया, महाराष्ट्र २/४/२०२५)

अध्यक्षीय मैत्री संवाद

स्नेहश्रीमन्त श्रीराधाकृष्ण महाराजजी की कथा के बीच गीतापरिवार के राष्ट्राध्यक्ष श्री संञ्जय मालपाणीजी को वक्तव्य के लिए आमंत्रित किया। समस्त कार्यकर्ताओं का अभिवादन कर,संञ्जय भैया ने गीता परिवार के ऑनलाइन संथा वर्ग के प्रारम्भ का इतिहास कथन किया। लखनऊ की एक बहिन झूम पर ऑनलाइन क्लास ले रही थीं, संजय भैया ने ऑडियो व विडिओ बन्द रखकर चुपचाप निरीक्षण किया और आशू भैया से फोन पर लिंक की मॉग की,पॉच मिनट में २५० साधक गीता पढ़ने के लिये तैयार हो गये। तब वाट्सएप पर एक लिंक में २५० लोग ही मीटिंग के लिये जुड़ सकते थे। लोगों को झूम लिंक की जानकारी नहीं थी। दूसरी, तीसरी लिंक भी फुल हो गयीं। कोरोना की महामारी से त्रस्त मन को शांती मिली।२५०० साधकों के साथ शान से गीता संथा वर्ग का बिगुल बजा। आदरणीय सुवर्णा काकीजी को क्लास लेने के लिये आमंत्रित किया, वे अपने साथ पचीस महिलायें पढाने के लिये लेकर आंयी,। बचपन मे मैने एककहानी सुना थी कि " जब एक दुर्गा खडी होती है तो सहस्र हाथ निकल आते हैं। दुर्गा काकीजी की भी सहस्र भुजायें निकल आयीं और गीता वर्गों का प्रसव हुआ "।यह था नारी शक्ति का प्रमाण, हजारों वर्षों से जो देश कभी अंग्रेज, कभी मुगल, कभी पोर्तुगीजों का गुलाम था,इस देश के स्वत्व व सत्व का ह्रास न हो पाया,उसका एकमात्र कारण नारीयों की ऊर्जा, शक्ति था। एक हजार वर्षों पहले जब अग्नि वर्षा हुई उस समय हमारे सारे परिवार घरों मे दुबककर बैठे थे तब संत ज्ञानेश्वर महाराज की ज्ञानेश्वरी, एकनाथ महाराज की भागवत और श्रीमद्भगवद्गीता इन ग्रंथों का नन्दादीप घर घर में प्रदीप्त कर रखा, वे इस देश की महिलायें हैं, जिन्होंने इसे संजोकर रखा इसिलिये धर्म बचा, संस्कार बने रहे पचीस महिलाओं ने बारहँवा अध्याय सिखाने की तैयारी प्रदर्शित की। बीस दिनों का समय था, तब भगवद्गीता के PDF तैयार किये गये,अनुस्वार के उच्चारण तयार किये गये। संस्कृत का अभ्यास न था, तब संस्कृत के एक विद्वान थे जिन्होने पाणिनी के व्याकरण की जानकारी दी। क्, च्, ट्, त् प् वर्गों व पाँचवाँ अनुनासिक अनुस्वार का उच्चारण क्यों व कैसे यह जाना अनुस्वार के उच्चारण कोष्टक में लिखे गये। सारी गीताजी सरल हो गयी, लेकिन किन्ही संस्कृत के विद्वान महोदय ने श्रीस्वामीजी को फोन किया।क्या चल रहा है गीता परिवार मे ?कोष्टक मे अनुस्वार का उच्चारण कैसे दिया? यह तो संस्कृत की गरिमा का पतन है, स्वामीजी के पास शिकायत की, स्वामीजी ने संजय भैया को फोन किया और पूछा क्या चल रहा है गीता परिवार मे ?

संजय भैया बोले "बहुत बढ़ियाँ चल रहा है स्वामीजी,२५०० लोग गीता सीख रहे हैं "।

स्वामीजी ने कहा "संस्कृत पण्डित नाराज़ हो रहे हैं "।

संजय भैया – क्यों नाराज़ होरहे हैं ?

स्वामीजी – क्योंकिअनुस्वार के लिए संस्कृत में यह नियम नहीं है।

संजयभैया – जब पाणिनीजी ने नियम बनाये तो क्या तब किसी ने कोई शिकायत की ?लोगों को समझाने के लिये नियम बनाये गये थे। वे नियम पाणिनी जी ने बनाये थे, गीताजी को सरल पठनीय बनाने के लिये, ये नियम इस मालपाणी ने बनाये हैं।

स्वामीजी – सुधारणावादी व तात्विक विचारों वाले हैं, परम्पराओं का पालन करते हुये आधुनिकता को अपनाते हैं उन्होने स्वीकृती दी और गीता संथा वर्ग की गाडी पटरी पर दौडने लगी।

मैत्री हृदय से होती है, जिसके हृदय मे गीताजी बस गयीं, वे कम से कम दो अध्याय अवश्य कण्ठस्थ करेंगे, जिज्ञासू,पाठक,पथिक व गीताव्रती तक का प्रवास बडा सुखदायी व आनन्द देने वाला है, लेकिन साथ ही कभी कभी अहंकार भी आता है।स्वामीजी

सम्मानित करते हैं, यह बहुत बडी बात है। गीता परिवार मे बयासी वर्ष की एक महिला गीताव्रती हो गयीं उन्हे देखकर संजय भैयाजी नतमस्तक हो गये,

गीताजी मे अंत मे भगवान कहते हैं " सर्व धर्मान्परित्यज्य,

मामेकं(म्) शरण(वँ) व्रज।

अहं(न्) त्वा सर्वपापेभ्यो,

मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

संजय भैया ने कहा "मुझसे किसी ने पूछा सोलहवें अध्याय तक तो भगवान धर्म श्रेष्ठ बता रहे थे।अर्जुन से क्षत्रिय धर्म का पालन कर,युद्ध करने के लिये कह रहे थे और अब कहते हैं ——-सर्वधर्मान्परित्यज्य,

मामेकं(वँ) शरणं(वँ) व्रज।

शिक्षक का शिक्षक धर्म, माता का मातृ धर्म, पिता की पितृ धर्म, पुत्र का पुत्र धर्म, राष्ट्र का राष्ट्रधर्म सभी को त्यागो यह क्यों ? हमने जो कर्तव्य चयन किया है वह हमारा धर्म है। अचानक धर्म की व्याख्या कैसे बदल गयी। प्रथम अभ्यासित सत्रह अध्याय व्यर्थ गये"।

संजय भैया ने स्पष्टीकरण दिया –

" धर्म के पालन के साथ जो अहंकार आता है,पुत्र के यश पर पिता को, शिष्य के धर्म पालन पर शिक्षक अपना सीना तानता है।सैनिक परमवीरचक्र सीने पर लगाकर गौरवान्वित होता है। छात्र के पराक्रम पर शिक्षक फूला नहीं समाता। जब तक कर्तव्यपूर्ती का समाधान है,सब सुचारू रूप से चलेगा किन्तु कर्तव्य पूर्ति के साथ जो अहंकार जुड़ गया, उसका परित्याग ही

सर्व धर्मपरित्याग है।

योगासन् का नियम् है, आगे झुकना है तो सॉस को पूर्ण रूप से बाहर निकालना होता है।

अन्दर शून्य निर्माण करना होता है, जब तक सारी सॉस बाहर नहीं निकल जाती आगे झुकना सरल नहीं होता। यदि नतमस्तक होना है,तो भी सीना खाली करना पड़ता है और भगवान यही कहते हैं,

मामेकं(वँ) शरणं(वँ) व्रज ",

मात्र सॉस ही नहीं,सीने के अन्दर का अहंकार भी जब तक बाहर नहीं फेंकते शरणागति नहीं होती।

शरणागति के साथ ही व्यक्ति निर्विचार बनता है।निर्विचारिता के साथ ही निर्विकारिता भी आती है।

यह योगशास्त्र है। भगवद्गीता स्वयं यह कहती है "

"ज्ञान विज्ञान सहितंम्,

यज्ञात्वा मोक्ष्यसे शुभात्"।

भगवान के मुख मे प्रथम अध्याय मे एक भी श्लोक नही है। महारथी अर्जुन ऑसू ढाल रहा है।उसका मन भ्रमित हो गया, और वह रथ के पीछे बैठ गया। कृष्ण तो कुछ भी न बोले फिर यह कैसा कृष्णार्जुन संवाद ? लेकिन संवाद के लिये दोनों का बोलना आवश्यक नहीं है एक बोले दूसरा ध्यान से सुनें तब भी वह संवाद ही रहता है।

भगवद्गीता यह योगशास्त्र है, अष्टांग योग में योग गीताजी के अध्यायों से ही आये हैं। यह ज्ञान है, यह विज्ञान है,भगवान नवें अध्याय में कहते हैं ....

" ज्ञान विज्ञान सहितम्,

यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्॥९/१॥

श्लोक सुनें
९.१

विज्ञान मे शरीर शास्त्र सम्मिलित है। शरीर के साथ मन को भी स्वस्थ रखना आवश्यक है, मन तभी स्वस्थ रहेगा, जब प्राण व अपान में समत्व होगा।

योग की प्रथम परिभाषा है “ समत्वं योग उच्यते “भगवान संतुलन की बात कर रहे हैं”।गीता पठन से स्वभाव व शारीरिक परिवर्तन आता है,क्योकि प्राण व अपान समान होते हैं। ऑक्सीजन का स्तर बढ़ता है निराशा, क्रोध नकारात्मकता समाप्त हो जाती है व सारे निर्णय सही होने लगते हैं।भय व चिन्ता ऑक्सीजन का स्तर कम करती है जिससे मन भ्रमित होता है।

समं (ङ्) काय शिरोग्रीवं(न्) धारयन्नचलं(म्) स्थिरः।

सम्प्रेक्ष्य नासिकाग्रं(म्) स्वं(न्)

दिशश्चानवलोकयन्॥६/१३॥

श्लोक सुनें
६.१३

शरीर, ग्रीवा व शीश को सम कर नासिका के अग्र पर दृष्टी लगाकर, दश दिशाओं को बन्द कर, अन्दर झॉको, धारा को उल्टा बहाओ,उसे मोक्ष देने वाली राधा बनाओ।

सारी दैवी गुण सम्पदा स्वयं(म्) में समाओ व पढ़ाओ।

लोक मन संस्कार करना यह परम गति साधना है। संस्कार कार्य का उपक्रम जीवन में लायें और बालकों को सुसंस्कारित करें।

जीवन एक रंगावली है। कितने बिन्दुओं की यह तो विधाता के हाथ है किन्तु उन बिन्दुओं को जोड़ना व उनमें रंग भरना हमारे हाथ मे है।

तो आईये हम सब मिलकर भक्तिभाव से मैत्री के रंग भरें।

जय श्रीकृष्ण

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/snsthaagt-snrcnaa/giitaa-maitrii-miln/



बाल संस्कार वर्ग के बच्चे अपनी बनाई चित्रकला उत्साह से ऊपर उठाकर दिखाते हुए।

०३ संस्थागत संरचना

बाल संस्कार से राष्ट्र निर्माण: गीता परिवार का अटूट संकल्प और सेवा का दिव्य प्रकाश

३ मिनट पठन · १ चित्र

३नचालीस वर्ष पूर्व, **राष्ट्रसंत परम पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरी जी महाराज** के दिव्य नेतृत्व में गीता परिवार ने एक अत्यंत पावन संकल्प लिया — **"बाल संस्कार से राष्ट्र निर्माण"** यह केवल एक नारा नहीं,अपितु भारत के भविष्य को संवारने वाली एक महा योजना का आरंभ था। इस संकल्प का मूल उद्देश्य था – बच्चों के कोमल मन-मस्तिष्क में **संस्कार, संस्कृति और नैतिकता** के बीज बो कर उन्हें आदर्श नागरिक बनाना।

संस्कार केंद्र: जड़ें भारतीय संस्कृति की, ऊँचाई राष्ट्र निर्माण की

भारत के गाँव-गाँव, नगर-नगर में गीता परिवार द्वारा बाल संस्का र केंद्रों का संचालन किया जा रहा है, जहाँ बच्चों को :

- योग व प्राणायाम से आत्म अनुशासन
- ध्यान व कथा -कथन से शांति व प्रेरणा
- नैतिक शिक्षा एँ से व्यवहारिक जीवन मूल्य
- श्री भगवद्गीता का पाठ व देशभक्ति गीतों के माध्यम से आध्यात्मिक और राष्ट्रीय चेतना
- कला, शिल्प व खेल के ज़रिए रचनात्मक विकास सिखाया जाता है।

यह केंद्र बच्चों को शिक्षित ही नहीं, संस्कारित भी कर रहे हैं, जिससे एक सशक्त भारत का निर्माण सुनिश्चित होता है।

को रो ना का ल में 'लर्न गी ता ': संकट में संबल

महामारी के समय जब कक्षाएँ ठप पड़ गई थीं, तब गीता परिवारका **'लर्न गीता ' ऑनलाइन उपक्रम** एक आशा की किरण बनकर उभरा। इसने हजारों घरों में गीता ज्ञान का प्रकाश पहुँचाया। इसी प्रयास से **'गीता मैत्री मिलन'** और उसके बाद **'टीम 11'** जैसे संगठनात्मक प्रयासों ने संघटन में ऊर्जा और गति भर दी।

500 से अधिक गीता सेवी : सेवा की भावना से साकार हो रहा संकल्प

आज 500 से अधिक गीता सेवी, पूरे विश्व में ऑफलाइन गतिविधियों को संचालित कर रहे हैं।

ये सेवी :

- गीता श्लोकों का सही उच्चारण और अर्थ सिखाते हैं |
- बच्चों को योग, नैतिकता,ध्यान और देशभक्ति से जोड़ते हैं |
- श्री मद्भगवद्गीता पारायण, बाल प्रतियोगिताएं, प्रेरक कहानियों द्वारा विकास और नेतृत्व का मार्ग प्रशस्त करते हैं |
- स्कूलों, समाजों,जेलों और महिलाओं तक भी संस्कारों का प्रकाश पहुँचा रहे हैं|

इनसेवीयों का समर्पण, समय और सेवा भाव, गीता परिवार की शक्ति और भाव का जीवंत उदाहरण हैं |

संपूर्ण भारत व विदेश में प्रभाव: संस्कृति की पताका

आज गीता परिवार का यह अभियान न केवल भारत के विभिन्न राज्यों और जिलों,बल्कि विदेशों में भी सक्रिय है। लाखों बालक-बालिकाएं:

- श्री मद्भगवद्गीता से जुड़कर जीवन जीने की कला सीख रहे हैं |
- अपनी संस्कृति व राष्ट्र के प्रति चेतनाशील हो रहे हैं |
- एक संस्कारयुक्त और आत्मनिर्भर भारत की नींव रख रहे है|

जब सेवा और संकल्प मिलें, तो राष्ट्र पुनः उठ खड़ा हो ता है

“संस्कार ही शक्ति है, संस्कार ही भविष्य है” – इसी मंत्र को लेकर गीता परिवार **सामूहिक गीता पारायण**,

बाल संस्कार केंद्र, टीम 11, लर्न गीता, और **गीता मैत्री मिलन** जैसी पहल के माध्यम से, हर आयु वर्ग तक गीता का ज्ञान और जीवन मूल्य पहुँचा रहा है। 500 से अधिक समर्पित गीता सेवी, इस परवर्तन के वाहक हैं। वे केवल कक्षा नहीं चला रहे, वे भारत के भविष्य का स्वरूप गढ़ रहे हैं|

gpteam11.com

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/snsthaagt-snrcnaa/baal-snskaar-se-raassttr-nirmaann-giitaa-privaar-kaa-attuutt/

Panchavarshapoorti Samaroha Story...

3 min read · १ चित्र



Statistics panel recording 1445 events across 35 countries and 573 cities.

Respected Ashu Goyal Bhaiyya, the esteemed International President of Geeta Pariwar and Program Director of Learngeeta, made a thrilling announcement during one of the engaging Sevis meetings in late March. He joyfully revealed that Learngeeta will proudly celebrate its fifth anniversary on June 23, 2025. The atmosphere on the Zoom call was electric, as the Sevis participants were filled with an overwhelming sense of joy, pride, and happiness, a testament to our collective journey that united us across distances.

During the vibrant and animated conversation, a multitude of suggestions flowed enthusiastically, yet the familiar, routine ideas were swiftly cast aside. It soon became apparent that this new initiative required an entirely fresh format, one that broke away from past experiences. Swamiji's Panchsutri Vision passionately emphasizes the necessity of integrating the number five into all of our upcoming projects, symbolizing growth and transformation. Inspired by this vision, Ashu Bhaiyya immediately took to his device, searching online for available domain names. He discovered **"five.Learngeeta.com,"** which stood out for its simplicity, ease of recall, and perfect resonance with the essence of the project.

Sevis passionately explored numerous ideas in depth and finalized the following inspiring events:

1. **Dedicated Newsletter**: A vibrant platform to celebrate the remarkable milestones of our five-year journey.
2. **Parayana**: The Bhagavad Gita, our guiding light and the essence of the Panch Sutras, will inspire our path.
3. **Shobha Yatras**: A beautiful expression of the Bhagavad Bhakti Sutra from the Panch Sutras, while Group Events ignite the spirit of Rashtra Prem (patriotism) and Vijnyana (knowledge).
4. **Fun Events**: Joyful activities centered on Bal sanskar (childhood values), including "Maya Sang Kanhaiya," to nurture our young ones.

Each subject was skillfully guided by a dedicated and experienced Sevis, who passionately drove activities forward by meticulously crafting engaging content, including interactive quizzes, challenging crosswords, and exciting competitions, while also hosting dynamic events that brought the community together.

The team launched into an inspiring journey to develop an innovative new website. Drawing on valuable insights from the existing Geeta Jayanti website, a dynamic and youthful team was

assembled, brimming with fresh ideas and enthusiasm for the project. After several in-depth discussions that involved all stakeholders, the website was brought to life and officially launched on May 15th.

The Panchavarshpurti event dates were set to span from June 17th to August 3rd, with an encouraging extension to August 17th, allowing even more participation. In a remarkable display of creativity and collaboration, the talented creative team designed a stunning logo and produced visually striking promotional materials in a remarkably short timeframe.

A vibrant marketing campaign was meticulously crafted, showcasing eye-catching banners adorned with inspiring slogans. From the outset, Sadhakas, Sevis, and Offline Teams welcomed everyone with boundless enthusiasm, orchestrating lively and memorable festivities that filled the air with joy.

To date, an impressive total of 1445 events have unfolded in 159 diverse locations across 15 countries, and 670 cities—and that number is steadily rising, reflecting a growing sense of community and connection.

In celebration of this significant milestone, a grand online meeting had been scheduled for Sunday, July 20th, 2025. This virtual gathering featured an array of imaginative Geeta-based activities, exciting quizzes, and competitive tournaments designed to ignite passion and participation among attendees.

We extend our heartfelt gratitude to all 14 million Sadhakas for their unwavering love and support, which has made this joyous celebration not just possible, but truly unforgettable.

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2025-06/snsthaagt-snrcnaa/panchavarshapoorti-samaroha-story/

03

०३ संस्थागत संरचना

In Divine Code: The Story of the LearnGeeta App

2 min read · १ चित्र

Every growing mission reaches a moment where its soul seeks a new vessel. For LearnGeeta, that moment arrived when its spiritual momentum outpaced its logistical tools. With thousands of sadhaks flowing into Zoom rooms across continents, and a growing thirst for resources, reminders, and connectivity, the need for a centralized digital companion became undeniable. Thus began the quest not just to build an app, but to embody a journey in code.

In the early stages, professional IT firms were consulted. Yet, despite technical expertise, something vital remained missing. The sacred simplicity, the lived devotion, the rhythm of sadhna these could not be outsourced. As is often said in divine work, when the seeker is ready, the path appears. Into this moment of divine design stepped Pankaj Aggarwal Bhaiya a sadhak who, after completing Level-1, didn't just continue his journey but transformed its very infrastructure.

What followed was nothing short of an IT revolution, led not by corporate strategy, but by quiet seva. Under his guidance, the LearnGeeta App was born in 2023 not as a flashy product, but as a clean, purposeful, and spiritually resonant tool. Initially offering access to helplines and recorded Vivechans, the app was intentionally minimal, its simplicity echoing the clarity of the Gita itself.

But as sadhaks engaged, so did evolution. Feedback flowed in, and the app responded like a living organism. Soon, one could join Zoom classes directly from the app, no searching for links, no confusion. The LearnGeeta Saral Pathaneeya books could be ordered with a few taps. Volunteers could access Prachar materials, register family members, and even join WhatsApp groups – all from one sacred hub.

The app's second wave of development brought integrated links for exam practice, connections to the Ram Pratishtha app, and much more. It was no longer just a utility; it had become a spiritual companion. As one sadhak aptly put it: "It feels like carrying the entire LearnGeeta program in my pocket."



Promotional card inviting users to download the LearnGeeta app, with a scannable QR code and the Play Store listing shown on a phone.

Today, the IT team continues its quiet innovation, developing features like daily Shloka updates, reminders, and interactive learning tools. Guided not just by tech trends but by tapasya, their mission is clear: to merge technology with transcendence and serve the Gita in the language of the times.

In every swipe and every click, there is bhav, seva, and a whisper of eternity.

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/snsthaagt-snrcnaa/in-divine-code-the-story-of-the-learngeeta-app/

03

०३ संस्थागत संरचना

गीता परिवार के अंचल अनुसार कार्यकर्ता शिविर संपन्न

७ मिनट पठन

पूज्य स्वामी श्री गोविंददेवगिरिजी महाराज द्वारा स्थापित गीता परिवार मुख्य रूप से बाल संस्कार क्षेत्र में गत ४ दशकों से कार्यरत है। बाल संस्कार के लिए कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण गीता परिवार की एक प्रमुख गतिविधि है जिसके अंतर्गत शाखा स्तर पर एक दिवसीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग से लेकर राष्ट्रीय स्तर पर तीन दिवसीय निवासी कार्यकर्ता शिविर तक आयोजित किए जाते हैं। गत ५ वर्षों में लर्न गीता के माध्यम से हजारों नए लोग गीता परिवार से जुड़े हैं। ऐसे अनेक नए कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिए अंचल अनुसार कार्यकर्ता शिविरों के आयोजन का निर्णय राष्ट्रीय कार्यकारिणी में किया गया।

पश्चिमांचल के लिए प्रथम शिविर कोटा में दि ४ से ६ जनवरी २०२५ को आयोजित किया गया। पश्चिमांचल के प्रभारी श्री गोविंदजी माहेश्वरी तथा वरिष्ठ कार्यकर्ता श्रीमती निर्मलाजी मारू, श्री दामोदरजी मारू के नेतृत्व में एलेन प्रतिष्ठान के भवन में यह शिविर संपन्न हुआ। शिविर की सफलता के लिए श्रीमती अंकिताजी राठी, श्रीमती नीनाजी माहेश्वरी, श्री विपुलजी गुप्ता, श्री विजयजी मित्तल, श्रीमती शिल्पा गोयल आदि कार्यकर्ताओं ने कार्य किया। श्री गोविंदजी माहेश्वरी ने अपने मधुर स्वर में भजन गाकर सभी को प्रफुल्लित कर दिया। इस शिविर में १२० शिविरार्थी सहभागी हुए।

दूसरा शिविर पूर्वांचल के कार्यकर्ताओं के लिए दि ९ से १२ जनवरी २०२५ को कोलकाता के निकट जोका में आयोजित किया गया। पश्चिमांचल की प्रभारी श्रीमती आशाजी साबू तथा श्री संदीपजी सोमानी, श्री अशोकजी साबू के नेतृत्व में स्वामीनारायण मंदिर के भव्य परिसर में यह शिविर संपन्न हुआ। श्रीमती बुलबुल जी पोद्दर, श्री जवाहर कर्मकार, श्रीमती पियाली दत्ता गुप्ता श्रीमती महलिका घोष, श्री जयदेब रॉय आदि कार्यकर्ताओं ने इस शिविर के लिए अनेक दिनों तक प्रचार-प्रसार, आयोजन के लिए कार्य किया। इस शिविर में १६० शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

तीसरा शिविर मध्यांचल के कार्यकर्ताओं के लिए दि १४ से १७ मार्च २०२५ को पुणे में आयोजित किया गया। मध्यांचल की प्रभारी श्रीमती प्रमिलाजी माहेश्वरी तथा श्रीमती अंजलीजी तापड़िया, श्री सत्यनारायणजी मूंदड़ा, श्रीमती संतोषी मूंदड़ा, श्री शामजी मणियार के नेतृत्व में महेश भवन में यह शिविर संपन्न हुआ। इस शिविर के लिए श्रीमती विद्याजी म्हात्रे, श्री दीपकजी भूतड़ा, श्री प्रणयजी चौमवाल, श्रीमती विद्या पाथरीकर, श्रीमती कल्पना मालू, श्रीमती मंजू डागा, वेदिका कुलकर्णी, श्री पुष्करजी, श्रीमती संगीताजी मणियार, आदि ने परिश्रम किया। इस शिविर में २०० कार्यकर्ताओं ने पूर्ण समय रहकर प्रशिक्षण प्राप्त किया।

चौथा शिविर अयोध्या में दि १८ से २१ अप्रेल २०२५ में संपन्न हुआ। अयोध्या की महिमा ही ऐसी है कि इस शिविर में उत्तरांचल की सीमाएं लाँघकर चार देशों और १७ राज्यों तक के कार्यकर्ताओं ने सहभाग लिया। अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आशु गोयल के नेतृत्व में और श्रीमती प्रमिला जी माहेश्वरी, श्री दत्ताजी भांदुर्गे की प्रमुख उपस्थिति में ये शिविर संपन्न हुआ। सुश्री रूपल शुक्ला, श्री जितेंद्र कुमार, सुश्री ज्योति शुक्ला, सुश्री कविता वर्मा, श्रीमती पूजा गोयल ने भी शिविर में प्रशिक्षण दिया।

इस शिविर में 4 देशों, 76 नगरों, और 17 राज्यों से कार्यकर्ता पधारे। विभिन्न ध्यान, प्रार्थना, खेल, गीत, रचनात्मक आदि सत्रों के माध्यम से सभी ने बालकों में संस्कारों का बीजारोपण कैसे किया जाये इसका स्पष्ट मार्गदर्शन भी पाया।

इसमें कुल 104 पुरुष एवं 102 महिला साधकों ने भाग लिया, जिनका समर्पण और उत्साह पूरे शिविर में देखने को मिला।

गीता परिवार के अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. आशू गोयल भैया का प्रेरणादायी सत्र “स्वनिर्माण एवं राष्ट्रनिर्माण” सभी के हृदय में गहराई तक उतरा। उन्होंने बताया कि यदि हम एक श्रेष्ठ साधक बनें, तो उसी से कार्यकर्ता का जन्म होता है, और वही साधना आगे चलकर समाज निर्माण का प्रकाश बनती है।

उनका “गीता षट्क” विषय पर सत्र और बच्चों को गीता कैसे सिखाएँ, इस पर दिया गया मार्गदर्शन, विशेष रूप गीता साधकों हेतु उपयोगी एवं प्रेरणादायी रहा।

शिविर में ६१० संस्कार शिविरों तथा ५० केन्द्रों का संकल्प लिया गया।

चारों ही शिविर अत्यंत सफल हुए किंतु मध्यांचल शिविर के सहभागियों को एक विशेष सौभाग्य प्राप्त हुआ – पूज्य स्वामीजी के दर्शन और आशीर्वचन का! प्रथम दिन ही पूज्य स्वामीजी अपने अत्यंत व्यस्त कार्यों से समय निकाल कर शिविर स्थल पर पहुंचे और उन्होंने सभी शिविरार्थियों को गीता परिवार के कार्य एवं इसके उद्देश्य के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि यह कार्य व्यक्ति विशेष पर नहीं बल्कि एक ध्येय पर आधारित है। इस अवसर पर सभी को वो समय भी स्मरण हो आया जब गीता परिवार के प्रत्येक कार्यकर्ता शिविर को पूज्यश्री के पावन सानिध्य का सौभाग्य प्राप्त होता था। पुणे के कार्यकर्ताओं ने छत्रपति शिवाजी, संत ज्ञानेश्वर, स्वामी विवेकानंद जैसे महापुरुषों के वेश में पूज्यश्री का स्वागत किया।

गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ संजयजी मालपाणी की पूर्णकालिक उपस्थिति ने पश्चिमांचल एवं मध्यांचल के शिविर की गरिमा को शतगुणित कर दिया। उन्होंने गीता परिवार की कार्यप्रणाली, कार्ययोजना, कार्यलक्ष्य, कार्यसंकल्प एवं “जानो गीता बनो विजेता” इन विषयों पर मार्गदर्शन किया। अंतिम दिन कार्यकर्ताओं के मन में उठने वाले प्रश्नों के उत्तर भी दिए। अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आशुजी गोयल के मार्गदर्शन का लाभ पूर्वांचल के शिविर को प्राप्त हुआ जिसमे उन्होंने टीम-११, स्वनिर्माण, राष्ट्रनिर्माण, गीता इन विषयों पर व्याख्यान दिए। राष्ट्रीय सह-सचिव श्री गिरीशजी डागा ने पश्चिमांचल, मध्यांचल एवं पूर्वांचल के तीनों ही शिविरों में “मुख्य शिक्षक” के रूप में अपने दायित्व का निर्वाह किया और पूज्य स्वामीजी द्वारा दी गई “पंचसूत्री” पर विस्तृत व्याख्यान दिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने बाल मनोविज्ञान, टॉक शो, प्रत्यक्षिक प्रबोधन आदि विषयों पर भी मार्गदर्शन किया। मध्यांचल प्रभारी श्रीमती प्रमिलाजी माहेश्वरी भी तीनों ही शिविरों में उपस्थित रहीं और उन्होंने प्रज्ञा संवर्द्धन प्राणायाम, विद्यालय कार्य विस्तार जैसे विषयों पर मार्गदर्शन किया। उनकी ऊर्जा एवं उनके अविरल-अथक कार्य साधना का ही ये प्रभाव है कि उनकी उपस्थिति मात्र ही कार्यकर्ताओं को उत्साहित कर देती है। मुख्य कार्यालय के प्रभारी श्री दत्ता जी भांदुर्गे ने इन तीनों ही शिविरों में योगासन, सूर्यनमस्कार, मैदानी एवं बैठे खेल विषयों पर प्रशिक्षण दिया। इसमें अर्जुन युवा मंच के कार्यकर्ता श्री श्रीधर बंसोड़े, श्री चंद्रकांत पवार, श्री सागर परिहार, श्री समर्थ पवार तथा श्री जितेंद्र कुमार जी ने उनका साथ दिया। संगमनेर के श्री सौरभ जी म्हालस ने पूर्वांचल एवं मध्यांचल शिविरों में नाट्य प्रशिक्षण का विषय लिया। इसके अतिरिक्त श्रीमती निर्मलाजी मारू, श्रीमती अंजली जी तापड़िया, श्रीमती रेखाजी मूंदड़ा, श्रीमती सोनल जिंदल, श्रीमती अनीता शिवशंकर, श्री प्रदीपजी राठी आदि ने विशेष विषयों के प्रशिक्षण दिए तथा अन्य स्थानीय कार्यकर्ताओं ने हस्तकला, संस्कृत संथा जैसे विषयों पर प्रशिक्षण दिया।

श्री गिरीशजी डागा, श्रीमती संगीताजी जाधव एवं सुश्री रूपल शुक्ला ने इन शिविरों के लिए “संस्कार साधना पथ-प्रदर्शिका” नाम से १८५ पृष्ठों का एक अभ्यासक्रम तैयार किया जिसके आधार पर इन शिविरों में प्रशिक्षण दिया गया। इन तीनों ही शिविरों में प्रशिक्षण तथा इसमें किए गए कार्य संकल्प के आधार पर शिविर पश्चात अनेक स्थानों पर नए-नए साप्ताहिक संस्कार वर्ग आरम्भ हुए। अनेक कार्यकर्ताओं ने अपने-अपने स्थान पर नए-नए विद्यालयों से संपर्क कर वहाँ संस्कार कार्य का सूत्रपात किया। पश्चिमांचल के शिविर में संजय भैया ने सभी को इतना उत्साहित कर दिया कि वहाँ के कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों ने संकल्प किया कि गीता परिवार के ४० वर्ष पूर्ति पर वे कोटा में राष्ट्रीय स्तर का महोत्सव आयोजित करेंगे। पूर्वांचल के शिविर में तो असम, नेपाल, बिहार, झारखंड, ओडिशा, उत्तरार-पूर्व, बंगाल आदि राज्यों से कार्यकर्ता आए थे। इन्होंने विपरीत परिस्थितिओं में भी जो कार्य आरम्भ किया है वह अत्यंत प्रशंसनीय और अनुकरणीय है। मध्यांचल के शिविर में यह तय हुआ कि अगले वर्ष सम्पूर्ण मध्यांचल में कुल एक लाख तेईस हज़ार बच्चों का “शक्ति-भक्ति महोत्सव” आयोजित किया जाएगा।

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/snsthaagt-snrcnaa/giitaa-privaar-ke-ancl-anusaar-kaarykrtaa-shivir-snpnn/

03

०३ संस्थागत संरचना

गीता चिंतनिका सत्र : गीता पठन-चिंतन की अनवरत साधना

इस संकल्प को मूर्त रूप देने के लिए गीता परिवार ने प्रत्येक एकादशी के पावन दिन गीता चिंतनिका सत्र का आयोजन प्रारंभ किया गया — यह एक ऐसा सत्र जो केवल पाठ नहीं, भगवद चिंतन और आत्मबोध की यात्रा को गति देता है।

४ मिनट पठन

"संयम, साधना और भगवद स्मरण — यही हैं जीवन की सच्ची दिशा। एकादशी का दिन, इन तीनों का पावन संगम है।" एकादशी, भारतीय संस्कृति में केवल उपवास का दिन नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि और आत्मसाधना का विशेष अवसर है। यह दिन हमें जीवन की गति को विराम देकर अंतर की ओर लौटने का निमंत्रण देता है। आज से 40 वर्ष पूर्व, परम पूज्य स्वामी श्री गोविंददेवगिरिजी महाराज ने श्रीमद्भगवद्गीता के प्रचार-प्रसार का बीड़ा उठाया। उनका मूलमंत्र था — **"घर-घर गीता, हर-कर गीता"** — अर्थात हर घर में गीता का वास हो और हर कर्म में गीता का प्रकाश।

"चिंतनिका" का भाव

"चिंतनिका" अर्थात चिंतन की कणिका।

जैसे बीज में वटवृक्ष छिपा होता है, वैसे ही गीता के प्रत्येक श्लोक बीज रूप में हैं। जब उनका गहन चिंतन किया जाता है तो वे ज्ञान, भक्ति और जीवनमार्ग के विराट स्वरूप में प्रस्फुटित होते हैं। इसीलिए चिंतनिका सत्र का उद्देश्य केवल पठन ही नहीं, बल्कि गीता श्लोकों के बीज को जीवन में फलित-फूलित करना है। चिंतनिका सत्र का प्रमुख उद्देश्य है —गीता जी का शुद्ध पठन, ज्ञानपूर्ण चिंतन और उसे जीवन में उतारने की प्रेरणा देना। यह सत्र प्रतिमाह एकादशी को ज़ूम मंच पर रात्रि 9:00 से 10:00 बजे तक होता है।

सत्र की संरचना

– श्रीमद्भगवद्गीता के 18 अध्यायों को 6 खंडों में विभाजित किया जाता है।

– प्रत्येक एकादशी को 3 अध्यायों का पठन एवं उन पर क्रमशः चिंतन होता है।

– एक संपूर्ण पारायण तीन माह की अवधि में पूर्ण होता है।

विशेषता यह है कि इसमें सेवा देने वाले साधक प्रायः गीताव्रती होते हैं — अर्थात जिन्होंने गीता संपूर्ण कंठस्थ कर परीक्षा द्वारा यह उपाधि अर्जित की है।

सत्र की रूपरेखा

सत्र का प्रारंभ मंगलमय प्रार्थना एवं दीप प्रज्वलन से होता है। तत्पश्चात क्रमशः तीन अध्यायों का पठन व चिंतन किया जाता है, जिनमें से एक अध्याय का चिंतन प्रादेशिक भाषा में भी प्रस्तुत होता है। अंत में धन्यवाद ज्ञापन और आरती के साथ सत्र संपन्न होता है।

प्रत्येक पारायण के आरंभ से पूर्व गीताव्रतियों की बैठक लेकर सभी 18 अध्यायों के पठन व चिंतनकर्ताओं की सूची तैयार की जाती है। उनके द्वारा समय रहते ऑडियो व स्क्रिप्ट भेजे जाते हैं, जिनका संशोधन व रिकॉर्डिंग कर सत्र सुनिश्चित रूप से संपन्न किया जाता है।

विशेष अवसर

पारायण के प्रथम सत्र में स्वागत भाषण श्री आशुजी गोयल अथवा श्री हरिनारायणजी द्वारा दिया जाता है।

अंतिम सत्र में दिव्य आरती होती है, जिसमें सभी दीप प्रज्वलनकर्ता साधकों को आमंत्रित किया जाता है।

सहभागिता और विस्तार

– प्रत्येक सत्र में लगभग 10-11 गीताव्रती साधक सेवा देते हैं।

– विविध क्षेत्रों की टीमें इस आयोजन को सुव्यवस्थित बनाती हैं।

– व्हाट्सएप समूहों के माध्यम से समय पर जानकारी और सूची साझा की जाती है।

– आज इन सत्रों से लगभग 1000 साधक ऑनलाइन जुड़कर पठन-चिंतन का अमृत पान करते हैं।

– वर्तमान में सप्तदश (17वाँ) पारायण का पठन एवं चिंतन जारी है।

सभी साधक इस अवसर को परम सौभाग्य मानते हैं कि उन्हें प्रत्येक एकादशी को गीता के अध्यायों के पठन और चिंतन श्रवण का अवसर मिलता है। अंततः यही प्रार्थना — “भगवान श्रीकृष्ण अपनी कृपा से हमें सदैव सत्य के मार्ग पर अग्रसर रखें और गीता के संदेश को जीवन में जीने की शक्ति दें।”

गीता पढ़ें, पढ़ाएँ, जीवन में लाएँ।

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/snsthaagt-snrcnaa/giitaa-cintnikaa-str-giitaa-ptthn-cintn-kii-anvrt-saadhnaa/

03

०३ संस्थागत संरचना

संपूर्ण गीता पारायण – साधना का महायज्ञ !

४ मिनट पठन

“जहाँ श्लोकों की लय में आत्मा का आरोहण होता है, वहीं पारायण केवल पठन नहीं, पुनर्जन्म बन जाता है।”

संपूर्ण गीता पारायण केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, यह आत्मिक परिष्कार की एक दिव्य प्रक्रिया है। ‘पारायण’ शब्द स्वयं में एक गूढ़ संकेत है—‘पार’ यानी सीमा या तट, और ‘आयन’ यानी मार्ग। यह वह यात्रा है जिसमें साधक इस पार की सीमाओं को पार कर उस पार की चेतना तक पहुँचता है।

यह साधना केवल श्लोकों का उच्चारण नहीं, बल्कि अंतर्मन की शुद्धि, विचारों की स्थिरता और आत्मबोध की ऊँचाई का यज्ञ है। “पारायण वह दीप है, जो साधक के भीतर नया प्रकाश भरता है।”

संपूर्ण गीता पारायण : एक वर्ष, एक सौ अवसर, एक अविरत आराधना

लर्न गीता उपक्रम के शुभारंभ के पश्चात, श्रीकृष्ण कृपा से संपूर्ण गीता पारायण के अनेक पावन अवसर हमें प्राप्त हुए। यह पारायण केवल श्लोकों का पठन नहीं, अपितु एक भक्तिपूर्ण साधना है—जहाँ हर श्लोक में आत्मा का स्पंदन, हर छंद में श्रीकृष्ण का साक्षात्कार होता है।

न्यास के पश्चात्, संपूर्ण 700 श्लोकों का लयबद्ध, छंदबद्ध, तालबद्ध पठन होता है। क्षमा याचना और गीता आरती के साथ यह पारायण पूर्णता को प्राप्त होता है। हर बार, हर अवसर पर, यह पठन हमें नए अर्थ, नई अनुभूति और नई दिशा प्रदान करता है।

17 सितंबर 2023 को सेवकों ने संकल्प लिया कि प्रत्येक रविवार प्रातः 6.30 बजे संपूर्ण गीता पारायण होगा। 24 दिसंबर 2023 को गीता जयंती के पावन दिन अखंड अष्टादश पारायण सम्पन्न हुआ—जो साधकों के लिए अविस्मरणीय आध्यात्मिक पर्व था। देखते-देखते एक वर्ष बीत गया और सितंबर 2024 में प्रथम वर्षपूर्ति का उत्सव भी पारायण के साथ मनाया गया। उसी वर्ष गीता जयंती महोत्सव में 25 नवंबर से 12 दिसंबर तक छब्बीस पारायण सम्पन्न हुए। और फिर एक दिव्य संयोग—भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव के दिन ही 100वां संपूर्ण गीता पारायण सम्पन्न हुआ। यह संयोग नहीं, अपितु भगवान का आशीर्वाद ही था।

गीता पारायण का प्रभाव साधक के जीवन में प्रत्यक्ष दिखाई देता है। इससे मन की एकाग्रता बढ़ती है, आत्मबल का विकास होता है और जीवन के हर क्षेत्र में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। यदि किसी संकल्प के साथ पारायण किया जाए तो संकल्प सिद्धि की अद्भुत अनुभूति होती है। स्वयं भगवान गीता में कहते हैं—

“अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः,
ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः॥” (18.70)

अर्थात जो श्रद्धा से गीता का अध्ययन करता है, वह ज्ञानयज्ञ करता है और वह भगवान को अत्यंत प्रिय होता है।

श्लोक सुनें
१८.७०

पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी महाराज सदैव हमें प्रेरित करते हैं कि गीता पारायण केवल पठन न बने, बल्कि जीवन की साधना बने। उनके जीवन का संकल्प ही है—वेदों की रक्षा, गीता का प्रचार और संत परंपरा का संवर्धन। वे कहते हैं—“गीता परिवार का हर सदस्य चलता-फिरता गीता-दूत बने।”

अब 2025 का गीता जयंती महोत्सव हमारे सामने है। इस वर्ष गीता परिवार अपनी 40वीं वर्षगांठ भी मना रहा है। स्वाभाविक ही है कि इस अवसर पर अनेक संपूर्ण गीता पारायणों के माध्यम से हम इस उत्सव को और भी भव्य, आनंदपूर्ण और प्रेरणादायक बनाएँगे।

संपूर्ण गीता पारायण साधक के लिए आत्मोन्नति की साधना है, समाज के लिए एकता का संदेश है और राष्ट्र के लिए आध्यात्मिक आलोक है। यह एक ऐसी अविरत आराधना है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमें सत्य, शांति और समर्पण की ओर ले जाती रहेगी।

जय श्रीकृष्ण! जय गीता माँ!

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/snsthaagt-snrcnaa/snpuurnn-giitaa-paaraaynn-saadhnaa-kaa-mhaayjny/

नीति, प्रबंधन और स्वभाव : जीवन में गीता संस्कृति का विकास

५ मिनट पठन • १ चित्र



एक सभागृह में श्रद्धालु हाथ जोड़कर बैठे हैं, दाहिनी ओर वक्ता प्रार्थना मुद्रा में खड़े हैं।

गीता परिवार का NPS प्रकल्प — नीति, प्रबंधन और स्वभाव — केवल एक अध्ययन का विषय नहीं है, बल्कि जीवन जीने की उत्तम कला है। यह हमें न केवल कार्य में उत्कृष्टता देता है, बल्कि हमारे जीवन के स्वरूप को भी बदल देता है। आज की जटिल और तीव्र भागती दुनिया में यह प्रकल्प हमें सही दिशा, संतुलन और स्पष्ट दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह आत्मविश्वास बढ़ाता है, निर्णय क्षमता को सशक्त करता है और संबंधों को मधुर बनाता है। इसलिए यह प्रकल्प हर आयु के व्यक्ति के लिए नितांत आवश्यक और जीवन को सार्थक बनाने वाला है।

नीति (Policy)

नीति का अर्थ है — उचित समय, उचित स्थान पर उचित कार्य करना। ऐसा व्यवहार जो स्वयं के साथ-साथ समाज के भी कल्याण का मार्ग बने। नीति हमें बताती है कि कार्य कैसे हो, ताकि वह न्यायपूर्ण और हितकारी हो।

प्रबंधन (Management)

प्रबंधन केवल संसाधनों का उपयोग नहीं, बल्कि जीवन को व्यवस्थित करने की प्रक्रिया है। योजना बनाना, उसे क्रियान्वित करना और नियंत्रण रखना—यह सब प्रबंधन के दायरे में आता है। प्रबंधन सिखाता है कि सीमित संसाधनों से भी बड़े उद्देश्यों को साधा जा सकता है।

स्वभाव (Character)

स्वभाव, व्यक्ति का असली परिचय है। इसमें करुणा, विनम्रता, सत्यनिष्ठा और प्रेमभाव की झलक मिलती है। यही स्वभाव हमें मानवता से जोड़ता है और हमारी पहचान समाज में मजबूत करता है।

जब नीति, प्रबंधन और स्वभाव—ये तीनों एक साथ आते हैं तो सेवा का मार्ग सहज और सरल हो जाता है। गीता परिवार का यह प्रकल्प हमें यही सिखाता है कि— **नीति अपनाइए, प्रबंधन से दक्ष बनिए और स्वभाव को सात्विक रखिए।** इन्हीं तीन स्तंभों पर खड़ा जीवन न केवल स्वयं को उन्नत करता है, बल्कि समाज में भी विश्वास और सद्भाव का वातावरण निर्मित करता है।

यही गीता दर्शन का वास्तविक प्रसार है—जहाँ सिद्धांत केवल पढ़े नहीं जाते, बल्कि जीवन में उतारकर जिए जाते हैं।

NPS श्रृंखला की अद्वितीय बगिया से चुने हुए पुष्प

1. **गीता दृष्टि : अनुद्वेगता (शांतचित्तता)**
   "दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।"

आदरणीय आशू भैया जी ने अनुद्वेगता विषय पर विशेष प्रकाश डाला। भगवद्गीता में कहा गया है कि—

- दुःख आने पर जो उद्विग्न न हो, वही स्थितप्रज्ञ मुनि है। (2.56)
- जो किसी को उद्वेग न दे और किसी से उद्वेग न पाए, वही भगवान को प्रिय है। (12.15)
- उद्वेग न करने वाली वाणी ही वाणी का तप है। (17.15)

अर्थात, अनुद्वेगता का सीधा अर्थ है—सुख-दुःख में संतुलित रहना। यही संतुलन जीवन की सबसे बड़ी शक्ति है और यही गीता का मार्गदर्शन भी है।

1. **मीठी वाणी : वाणी ही संस्कार का दर्पण**
   "अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्। स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥"

आदरणीय भैया जी बताते हैं कि वाणी हमारी आंतरिक दशा का सटीक प्रतिबिंब है।

- सत्य, प्रिय और हितकारी वाणी ही श्रेष्ठ है।
- कठोर भाषा, निंदा और अपशब्द हमारी वाणी की शक्ति को नष्ट कर देते हैं।
- वाणी एक ऐसी औषधि है जो घाव भर सकती है, और वही तलवार भी बन सकती है।

इसलिए गीता का संदेश स्पष्ट है—**वाणी को साधना, स्वयं को साधने जैसा है।**

1. **बेहतर संस्करण : स्वयं को श्रेष्ठ बनाना**
   "उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्। आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥"

गीता परिवार हमें सिखाता है कि हर दिन अपने आपको बेहतर बनाना ही सच्ची साधना है।

- कठिनाइयों से भागने के बजाय उनका समाधान करना।
- लक्ष्यों को स्पष्ट रखना और प्राथमिकताओं को तय करना।
- अहंकार छोड़कर सहयोग की भावना अपनाना।
- और सबसे महत्वपूर्ण—**सुनना सीखना**, क्योंकि सुनना ही समझने की पहली सीढ़ी है।

1. **पुरुषार्थ चतुष्टय : जीवन का आधार**
   "त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन। निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्॥"

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—ये चार पुरुषार्थ जीवन को संतुलन और दिशा देते हैं।

- धर्म जीवन का आधार है।
- अर्थ जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।
- काम जीवन को आनंद प्रदान करता है।
- मोक्ष जीवन का अंतिम लक्ष्य है।

गीता हमें सिखाती है कि **धर्मयुक्त अर्थ और धर्मयुक्त कामना से ही मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है।**

1. **आलोचना : विकास का अवसर**
   "समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते॥"

आदरणीय भैया जी कहते हैं—आलोचना जीवन का दर्पण है।

- निंदक को निकट रखना हमें स्वयं को सुधारने का अवसर देता है।
- आलोचना चाहे सुननी हो या करनी, दोनों ही स्थितियों में संतुलन और सद्भाव बनाए रखना आवश्यक है।

आलोचना को अवसर मानकर ही हम स्वयं का बेहतर संस्करण बना सकते हैं।

निष्कर्ष

NPS प्रकल्प हमें यह जीवन सूत्र देता है—
नीति से सही मार्ग चुनो।
प्रबंधन से संसाधनों का सदुपयोग करो।
स्वभाव से जीवन को सुंदर बनाओ।

और जब ये तीनों हमारे जीवन में उतरते हैं, तो गीता संस्कृति सहज ही हमारे भीतर विकसित हो जाती है।

जय श्रीकृष्ण

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/snsthaagt-snrcnaa/niiti-prbndhn-aur-svbhaav-jiivn-men-giitaa-snskrti-kaa-vikaa/

04

शैक्षणिक योगदान

The Practice app: practice.learngeeta.com

पृष्ठ ८८

०४ शैक्षणिक योगदान

The Practice app: practice.learngeeta.com

Initially this App helps only to examine the charan wise shlokas, and could facilitate testing yourself. Gradually this App got upgraded and by now can be used in testing through various parameters.

1 min read · १ चित्र

Practice app is an amazing masterpiece App, playing a very value additive and a great support role in the self learning and self assessment process of every Pariksharthi and am sure everyone will unanimously accept it.

- You have the choice of selecting 1,2,more or even all chapters for mock test
- Tests are not limited to Charanwise in sequence but can also test random memorisation of shloka, shlokank advanced practice and also serial wise learning
- You can use any of the 11 languages provided in the App.
- Audios as well as Scripts of Shlokas are provided to verify your attempts.
- Add on facilities like timer is also available to study the quickness, promptness in answering

Thus, this App enables us to know where we stand in our Exam preparations.

If we are ready for exams, it helps in building temperament for Exams and boosts our self confidence.

QR code linking to the Learn Geeta practice app at practice.learngeeta.com.

Most benefitting is by self analysing independently. You don't have to depend on someone to test you and someone need not be all the time engaged for you.

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2025-06/shaikssnnik-yogdaan/the-practice-app-practice-learngeeta-com/

05

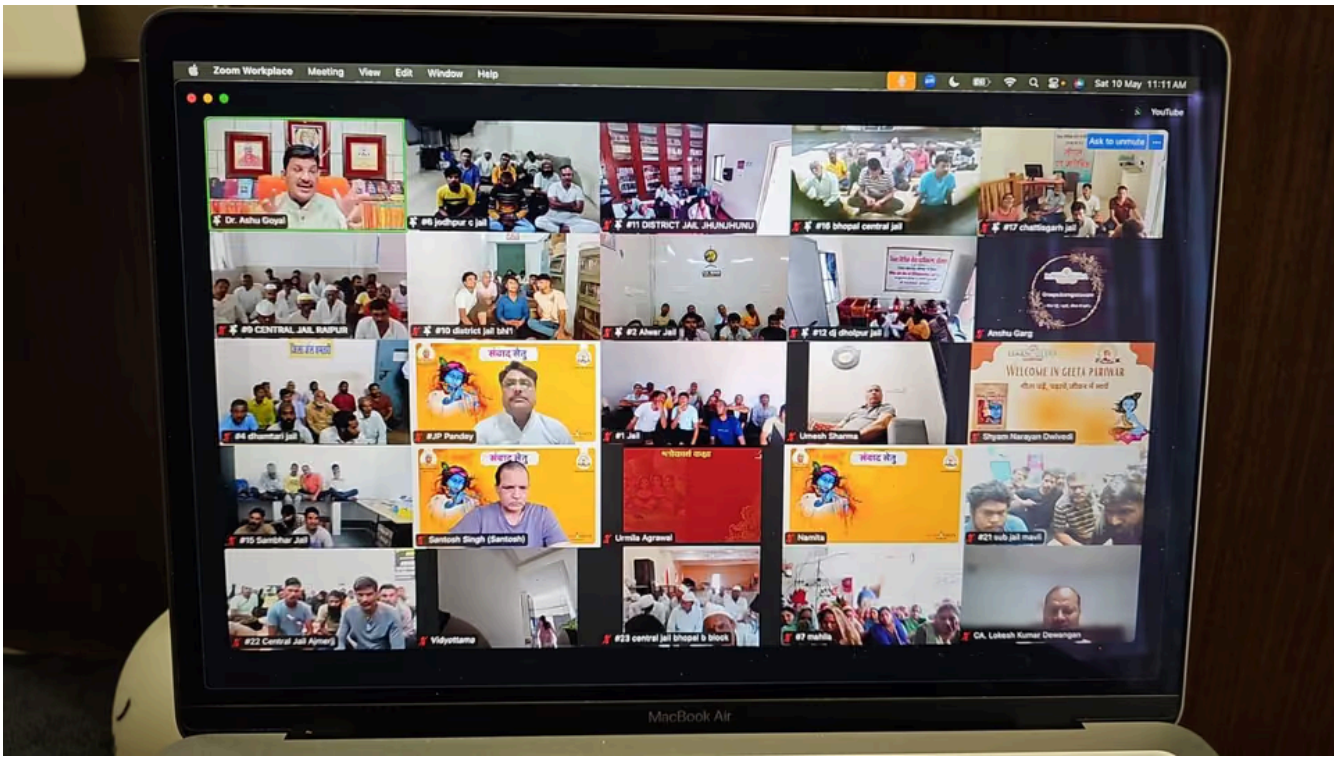
सेवा और संगठन

गीता ज्ञान से आत्मपरिवर्तन की ओर एक राष्ट्रव्यापी प्रयास

पृष्ठ ९१

गीता ज्ञान से आत्मपरिवर्तन की ओर एक राष्ट्रव्यापी प्रयास

४ मिनट पठन • २ चित्र



देशभर की जेलों से जुड़े प्रतिभागियों के साथ ऑनलाइन गीता सत्संग का ज़ूम सत्र।

Group Classes के माध्यम से सामूहिक गीता कक्षाओं की चल रही एक अनूठी आध्यात्मिक यात्रा!groups.learngeeta.com

“हर घर गीता, हर कर गीता” यह केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि गीता परिवार का संकल्प है, जो श्रीमद्भगवद्गीता के दिव्य संदेश को जन-जन तक पहुँचाने केलिए समर्पित है। परम श्रद्धेय गोविन्द देव गिरिजी महाराज की प्रेरणा से प्रारंभ हुआ यह अभियान आज एक आंदोलन का रूप लेचुका है, जिसका उद्देश्य केवल गीता का पाठ सिखाना नहीं, बल्कि उसके गूढ़ ज्ञान को जीवन में उतारना है।

इसी उद्देश्य को साकार करने के लिए Groups.learngeeta.com के माध्यम से पूरे देश में विद्यालयों, सेवाभावी संस्थाओं और विशेष समूहों को जोड़ कर गीता अध्ययन की नियमित कक्षायें संचालित की जा रही हैं। यह एक अनूठी पहल है, जिसमें जेल, विद्यालय, महाविद्यालय, नेत्रहीन विद्यालय, वृद्धाश्रम, सेवाभावी संस्थान, कार्य र्यस्थल तथा प्रवासी भारतीय समूहों केलिए विशेष रूप से अनुकूल की गई कक्षाएँ चलाई जा रही हैं।

जेलों में आत्मचिंतन की लौ आज जब समाज केवल दंड की बात करता है, तब गीता परिवार उसे आत्मसुधार और विवेक की दिशा में ले जा रहा है। देश की 50 से अधिक प्रमुख जेलों में नियमित गीता कक्षाएँ संचालित की जा रही हैं, जिनका उद्देश्य है जेल को बंदियों के लिए केवल दंड का स्थान नहीं, बल्कि उनके आत्मचि चिंतन, धर्म और पुनरुद्धार का केंद्र बनाना।

राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ की जेलों जैसे अजमेर, जयपुर, नासिक, तलोजा, रायपुर, जबलपुर और संभाजीनगर में इन कक्षाओं के माध्यम से अब तक 2000 से अधिक बंदी जुड़ चुके हैं। इनमें से 500 से अधिक ने गीता गुंजन परीक्षा, 50 से अधिक ने जिज्ञासु (3 अध्याय कंठस्थ), 15 ने पाठक (6 अध्याय), और 9 ने पथिक (12 अध्याय कंठस्थ) परीक्षा पूरी की है।

ज़ूम के माध्यम से 200 से अधिक “विवेचन सत्र” बंदी भाइयों केलिए चले हैं, जिनके माध्यम से बंदियों को गीता के तात्त्विक ज्ञान से जोड़ ने का सार्थ र्थक प्रयास गया है। ‘संवाद सेतु’ नामक कार्यक्रम में प्रश्नोत्तरी द्वारा गहन चर्चा की जाती है, जिससे साधकों का आत्मविकास और मार्गदर्शन संभव हो पाया है।

विद्यालयों और संस्थानों में गीता शिक्षण यह प्रयास केवल जेलों तक सीमित नहीं है। Groups.learngeeta.com के माध्यम से अब तक 300 से अधिक संस्थाएँ जैसे विद्यालय, महाविद्यालय, बालिका आश्रम, वृद्धाश्रम, विशेष रूप से सक्षम बालकों के केन्द्र, अंध विद्यालय, गर्भवती महिलाओं के समूह तथा प्रवासी भारतीयों की मण्डलियाँ इस शिक्षा से लाभान्वित हो रही हैं।

देशभर के 100 से अधिक प्रतिष्ठित विद्यालय जैसे डीपीएस भोपाल (अहमदाबाद), दयानंद वैदिक विद्यालय (मुंबई), गायत्री विद्यापीठ गुरुकुल (तिरगाँव), जाजू इंटरनेशनल स्कूल, सरस्वती शिशु मंदिर आदि इस अभियान में सम्मिलित हैं। अब तक 4000 से अधिक वि विद्यार्थियों को गीता गुंजन प्रमाणपत्र प्रदान किए जा चुके हैं।

संस्थाओं को प्रचारक, औपचारि क पत्र द्वारा आमंत्रित करते है, और फिर उनकी सुविधा के अनुकूल कक्षा का शुभारंभ कि या जाता है। यह लचीला, सहभागि तापूर्ण र्ण और नवाचारी दृष्टि कोण Groups.learngeeta.com की विशेषता है।

समर्पित स्वयंसेवकों की टीम

इस विशाल अभियान को सफल बनाने में 300 से अधिक कार्यकर्ता कार्यरत है। इसमें Trainer Department, Technical Department, Examination and Certification dept., Group coordinator dept., Group class Incharge, Vivechan Play team, Group class coordinator, ये सभी अपने-अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए गीता के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने में जुटे हैं।

समूह में अध्ययन का विशेष अनुभव

श्रीमद्भगवद्गीता जब समूह में पढ़ी जाती है, तब उसका प्रभाव कई गुना अधिक होता है। आपसी चर्चा, चिन्तन और आत्ममंथन से साधकों को अभूतपूर्व अनुभव हुए है। चाहे वह विद्यार्थी हों, गृहस्थ हों या बंदी सबको इस अध्ययन में आनंद और दिशा मिल रही है।

आइए, इस ज्ञानयज्ञ में सहभागी बनें

हर घर गीता, हर कर गीता

जय श्रीकृष्ण!

groups.learngeeta.com

राष्ट्रव्यापी गीता अभियान से जुड़ने के लिए स्कैन किया जाने वाला क्यूआर कोड।

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2025-06/sevaa-aur-sngtthn/giitaa-jnyaan-se-aatmprivrtn-kii-or-ek-raassttrvyaapii-pryaa/

06

विशेष अनुभाग

Local to Global पृष्ठ ९५

Zoom Help line and Helpdesk सेवा पृष्ठ ९८

GeetaVrati & Geeta Vichakshan Recipients पृष्ठ १०१

Local to Global

2 min read · २ चित्र



Geeta Parivar YouTube channel card describing the value-education organisation founded 28 years ago at Sangamner, Maharashtra.

Covid 19 Pandemic came as a boon in disguise. Transformations like Digital connections, Virtual events and live sessions became the new normal. The Social media potential was harnessed to tap and reach the global audience to enroll for the online Geeta Classes by Learn Geeta, GeetaPariwar. Prior to online Geeta Classes there was only one website **geetapariwar.org** . The presence of Learn geeta on social media has now grown multifold **learngeeta.com**

This brought the world closer, it enhanced availability and accessibility to unique learning experiences worldwide, it eased building the social communities of shared interests through which exchanges were possible in turn synergizing the euphoria to grow and evolve.

Today our presence is established on various Social media platforms like face book, Instagram, You tube, Twitter and also feel proud to have a robust website for Learn Geeta

(A) Earlier it was only www.geetapariwar .org now spread wings in social media in youtube, facebook, twitter, instagram page,and app with variety of portals

Instagramwww.instagram.com/geetaparivar
Facebookwww.facebook.com/geetaparivarTwitter twitter.com/Learn_GeetaYouTube http://www.youtube.com/c/G
Group https://facebook.com/groups/learngeeta

(B) Various links



Logo badge of the Geeta Pariwar Uttar Pradesh chapter, carrying the organisation's roundel and its tagline.

Geeta Pariwar – Uttar Pradesh

https://www.facebook.com/profile.php?id=61564976431367

Geeta Pariwar – Chhattisgarh

https://www.facebook.com/profile.php?id=61566166465318

Geeta Pariwar – Gujarat ગુજરાત

https://www.facebook.com/profile.php?id=61565832428010

Geeta Pariwar – West Bengal পশ্চিমবঙ্গ

https://www.facebook.com/profile.php?id=61565592676479

Geeta Pariwar – Rajasthan

https://www.facebook.com/profile.php?id=61566166975727

Geeta Pariwar – Chhattisgarh

https://www.facebook.com/profile.php?id=61566166465318

Geeta Pariwar, Hariyana

https://www.facebook.com/profile.php?id=61571151741553

Geeta Pariwar – Telangana

https://www.facebook.com/profile.php?id=61567702827782

Geeta Pariwar – Andhra Pradesh

https://www.facebook.com/profile.php?id=61566370857044

Geeta Pariwar – Odisha ଓଡ଼ିଶା

https://www.facebook.com/profile.php?id=61565554337374

Geeta Pariwar, Assam-অসম

https://www.facebook.com/profile.php?id=61572919887754

Geeta Pariwar, Punjab

https://www.facebook.com/profile.php?id=61569822403415

Geeta Pariwar, Delhi

https://www.facebook.com/profile.php?id=61571163170840

Geeta Pariwar, Himachal Pradesh

https://www.facebook.com/profile.php?id=61570552273361

LEARNGEETA

https://www.facebook.com/profile.php?id=100087436795967

(C) Twitter

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/vishess-anubhaag/local-to-global/

06

०६ विशेष अनुभाग

Zoom Help line and Helpdesk सेवा

कोरोना महामारी के समय, जब पूरा विश्व महामारी से परेशान था। समय व्यतीत नहीं होता था, सभी पर डिप्रेशन का असर दिखता था। संसार डिजिटल शिक्षण की ओर अग्रसर हो रहा था, उस समय जून 2020 में गीता परिवार ने भी, ज़ूम के माध्यम से अपने ऑनलाइन गीता पाठ वर्गों की शुरुआत की।

५ मिनट पठन

Our Helpline Team Details

Helpline Number: 1800-203-6500

WhatsApp Numbers:

+91 858-786-8498

+91 85868 22506

Email –helplinegeeta@gmail.com

Store Contact Number: 7500-707707

Team Members (Delhi):

Kajal Shrivastav

Kavita Rajput

Saraswati Nadar

Shalu Shukla

⏰ **Working Hours:** 8:00 AM to 8:00 PM

Our team is available to assist you through Helpline Calls, WhatsApp, Live Chat, and Email.

परिचय

यह यज्ञ सेवा डिजिटल माध्यम से लाखों साधकों को जोड़ने का एक दिव्य भागीरथी प्रयास था।

आवश्यकता

लेकिन साधकों की संख्या लाखों में पहुँचने पर, जिनमे प्रमुख ग्रहणियां, महिलायें, बच्चे, और वरिष्ठ जन थे।

यह महसूस किया गया कि अनेक साधक, विशेष रूप से वरिष्ठ नागरिक, गृहणियां, तकनीकि रूप से कम दक्ष थे। अतः तकनीकि जटिलताओं के कारण, चाह कर भी वे कक्षा में नियमित रूप से जुड़ नहीं पा रहे थे। ऐसे में, एक हेल्प डेस्क सेवा की आवश्यकता महसूस हुई। जिसका मुख्य उद्देश्य था—गीता साधकों को तकनीकि एवं व्यावहारिक समस्याओं से मुक्त करके श्रीमद्भगवद्गीता के अध्ययन में सहायक बनाना।

इसके लिए हेल्पडेस्क फ़ोन नंबर्स, ईमेल आदि के माध्यम से सेवा दी जाने लगी। समय के साथ हेल्प डेस्क नंबर्स पर जरूरत से अत्यधिक बोझ बढ़ गया। तब कुछ नए ढंग से हेल्प देने के बारे में सोचा ताकि त्वरित सेवा द्वारा अधिकतम साधकों की सार्थक मदद की जा सके। उनका तकनीकि का डर दूर हो सके और ज्यादा से ज्यादा साधक इस का लाभ ले सकें।

Zoom Helpdesk की शुरुआत – आवश्यकता से नवाचार तक

जुलाई 2024 में गीता परिवार ने Zoom Helpdesk सेवा की शुरुआत की। इसका उद्देश्य साधकों को उनके;

नवीन पंजीकरण,
भाषा परिवर्तन,
समय परिवर्तन,
डबल रजिस्ट्रेशन की समस्या,
लेवल चयन/ बदलना,
परिवारजनों के लिए नामांकन,
एग्जाम अदि से सम्बंधित समस्या,
डाटा बेस से सम्बंधित समस्या,
ज़ूम इनस्टॉल करना एवं अन्य तकनीकि समस्याओं में सहायता प्रदान करना था।

पहले सहायता केवल फ़ोन, ईमेल या WhatsApp पर मिलती थी, जो कभी कभी सीमित होती थी, व्यस्त, और कभी-कभी भाषा संबंधी समस्याओं से ग्रसित थी।

Zoom Helpdesk ने इस समस्या का समाधान किया – यह एक लाइव Zoom मीटिंग के रूप में कार्य करता है, जहाँ साधकों को उनकी अपनी भाषा में, प्रत्यक्ष रूप से स्क्रीन शेयर कर के सहायता दी जाती है। और डाटा बेस अदि से सम्बंधित समस्याओं का तुरंत निदान किया जाता है।

सेवा की विशेषताएँ

बहुभाषीय सहायता: हिंदी, अंग्रेज़ी, मराठी, गुजराती, कन्नड़, बंगाली, तमिल, तेलुगु आदि भाषाओं में।
विदेश में रह रहे साधकों के लिए रात्रि तक सपोर्ट देना।
लाइव स्क्रीन शेयरिंग द्वारा समस्या समाधान।
दैनिक आधार पर सुबह-शाम निर्धारित Zoom हेल्पडेस्क मीटिंग्स।
जरूरत होने पर कभी भी उपलब्ध है।
1-to-1 एवं समूह में सहायता।
WhatsApp/ Video कॉल सपोर्ट भी उपलब्ध।

प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण

Zoom Helpdesk केवल एक तकनीकी सहायता केंद्र नहीं है, बल्कि यह एक प्रशिक्षण केंद्र भी है। यहाँ Core Trainers, Group Coordinators, Batch Coordinators एवं Technical Assistants को प्रशिक्षित किया जाता है कि वे भी अपने स्तर पर साधकों को Zoom से जुड़ने में सक्षम बना सकें।

आंकड़ों में सफलता

अब तक 65,000+ से अधिक साधकों को सीधी Zoom सहायता प्राप्त हुई।
लगभग 400+ प्रशिक्षकों को हेल्पडेस्क संचालन हेतु प्रशिक्षित किया गया।
2,000+ बार स्क्रीन शेयरिंग द्वारा समस्याएँ हल की गईं।
प्रत्येक दिन औसतन 300+ साधक सहायता प्राप्त करते हैं।

साधकों के अनुभव

“मैं पहली बार Zoom से जुड़ने जा रही थी और बहुत घबराई हुई थी, पर Zoom Helpdesk पर मुझे जैसे एक परिवार का सदस्य मिला। बहुत धैर्यपूर्वक मेरी समस्या हल की गई।”

– श्रीमती प्रतिभा शर्मा, 72 वर्ष, पुणे

भविष्य का उद्देश्य और दिशा

Zoom Helpdesk का मूल उद्देश्य गीता परिवार के प्रत्येक साधक को तकनीक के कारण पीछे न रहने देना है। यह सेवा, गीता के प्रचार-प्रसार में तकनीकि और सेवा भाव का अद्भुत संगम बन गई है।

भविष्य में इसका विस्तार मोबाइल ऐप इंटीग्रेशन, AI चैटबॉट आधारित सहायता, एवं क्षेत्रीय हेल्पडेस्क इकाइयों तक किया जाएगा।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQs)

Q1. Zoom Helpdesk कब उपलब्ध रहता है?
उत्तर: बैच शुरू होने से पूर्व 2 दिन प्रातः 07:00 से दोपहर 2:00 बजे तक और सायं 5:00 से मध्यरात्रि 12:00 बजे तक।
Q2. मुझे कोई तकनीकी समस्या है, तो मैं कैसे जुड़ूँ?
उत्तर: आप को केवल व्हाट्सएप्प का ग्रुप अथवा Zoom ऐप खोलना है और गीता परिवार द्वारा साझा Zoom Helpdesk लिंक से जुड़ना है।
Q3. क्या यह सेवा नि:शुल्क है?
उत्तर: हाँ, यह सेवा पूर्णतः नि:शुल्क है और गीता साधकों, फैकल्टी मेंबर्स की सहायता हेतु है।

निष्कर्ष

Zoom Helpdesk एक सेतु है – तकनीक और साधना के बीच। यह उस भावना का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ ‘सेवा ही साधना’ है। यह सेवा यह प्रमाणित करती है कि जब मिशन गीता के प्रसार का हो और भावना सहयोग की हो, तब तकनीकि बाधाएँ भी साधना के मार्ग में रुकावट नहीं बन सकतीं।

आइए, इस यज्ञ में हम सब सहयोग करें, इस सेवा को और सशक्त बनाएं, और हर साधक को जोड़ें – श्रीमद्भगवद्गीता की अमूल्य धरोहर से।

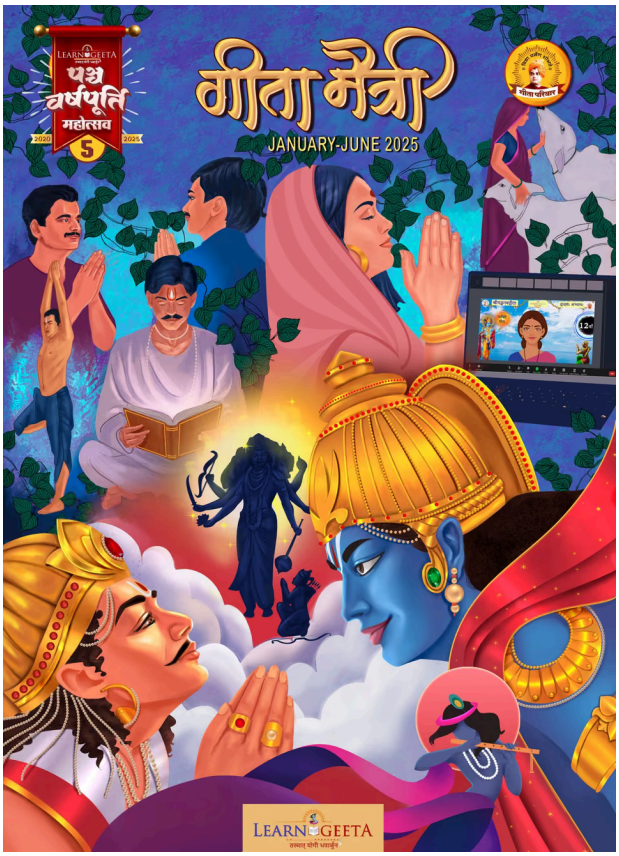
यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2025-06/vishess-anubhaag/zoom-help-line-and-helpdesk-sevaa/

GeetaVrati & Geeta Vichakshan Recipients

13 min read · १ चित्र



Cover of the January-June 2025 Geeta Maitree magazine marking five years of the Panchavarshapoorti Mahotsav.

S.No Name City
1 Manavi Upadhyaya Bangalore
2 Neera Handa Kanpur
3 Swarnalatha Kalavala Jharsuguda
4 Ramdas Bapu Mungi Margao
5 Abhishek Sharma Hoshiarpur
6 Manisha Deo panvel
7 Shashi Prabha Goyal Noida
8 Bhavani Nagasarapu Narasaraopeta
9 Dr.Shruti Samir Jamadagni Pune
10 Swati Manohar Kankani Bhiwandi
11 Meera Mahesh Choudhari parbhani
12 Chitra Satish Kulkarni Pune
13 Nanda Anand Grampurohit Bangalore
14 Janaki M Koppal
15 NUNNA NEERAJA Visakhapatnam
16 Sonali Nagle Pune
17 rakhi agarwal Ajmer
18 Pournima Sanjay Ruikhedkar Jalna
19 Uma Mali Solapur
20 Rekha S P Gupta Bengaluru
21 Varalaxmi Babbula Warangal
22 FAKIRA ZIBAL WAGHMARE Nagpur
23 Dr Amruta Deshmukh Aurangabad
24 Chandra Prakash Pandey Lucknow
25 Srividya Balakrishnan Bengaluru
26 Anita Arun Rahalkar Amravati
27 S Manjunath Bangalore
28 Jaya Nayak Bangalore
29 Anuradha Ukadgaonkar Parbhani
30 Pushpalata Pramod Patil JALGAON
31 M V NAGA PADMAJA Bhadrachalam

32 Narayan Appachar Salem
33 Aruna Shiva Secunderabad
34 Geeta Thakkar Rajnandgaon
35 Raghvendra Nilesh pathak Aurangabad
36 Harshil Patel Mumbai
37 Girija Balasubramani Bangalore
38 Swati Pramanik Pune
39 JVSM LAKSHMI Hyderabad
40 Mrs K.V.Swarna Latha Hyderabad
41 Kshama Anilkumar Potdar Parbhani
42 Mira Aggarwal Thane
43 Ruby bhattacharya Bastar
44 Reshma Tejnani Nashik
45 Vasant Sadashiv Salaskar-1 Pune
46 Ram phal singh hooda Panipat
47 Anuradha Mundra Jaipur
48 B V Savitri Visakhapatnam
49 Rajeshwari Devikumar Mudgod Sorob
50 Swamini Sunil Kale Mumbai
51 Hemalatha S Madurai
52 Beena Mangesh Lahoti Gulbarga
53 Vasudha Dongre Karkala
54 Gomati Kathane pune
55 Gadiraju Supraja Tanuku
56 Deore Milind Narhar Nashik
57 Gauri pramod Kulkarni Thane
58 Jharna makhija. MUMBAI ANDHERI LOKHANDWALA
59 Falguni Pathak Visakhapatnam
60 Geeta devi Pakur
61 Manju Somani Mumbai
62 Mridula Acharyya Belda
63 Shakambari S Bengaluru
64 Swati Pramanik Pune
65 Arathi Ganesh Bangalore
66 Priya Prashant Deshmukh Chikhli
67 Rachna choudhary New Delhi
68 Arunkumar Rallabandi Hyderabad
69 Nileshkumar Gunvantrai Bhatt Surat
70 Shambhavi Mangesh Joshi Ahmednagar
71 Prakash Jairam Kantheshwarkar Parbhani
72 Keshav kumar choudhary Tar din
73 Suhasini Dattatraya Dalal Nagpur
74 Chhaya Totala Nashik
75 Vaishali Kulkarni Thane
76 Deepa S Mangalore
77 Sahaja Frisco
78 ALG BHAVANI Mallisala
79 Prabhakar Sadashiv Satwe Pune
80 Gopal Debnath Habra
81 Veena Verma New Delhi
82 Alaka Anant Ramekar Bhugaon
83 S SHAKUNTHALA Mysore
84 Shashikirana Bhave Bengaluru
85 Vijayendra Waykar England
86 Sarvakota balatripura Krishnaveni Visakhapatnam
87 Rajni Kaul Ludhiana
88 Gayathri Holla UDUPI
89 Madhuri Ashok Tadurwar Nagpur
90 Vandana singhania Siliguri
91 souradip sarkar shimurali
92 Kiran khandelwal Aurangbad
93 Mamata Mishra Loisingha
94 Shreyasi shripad joshi Nagpur
95 Aadvay Sandip Kulkarni Pune
96 Shashikala Jadhav Karad
97 Vrunda Naresh Bhayade Nashik
98 Soma Karmakar Asansol
99 Shaila deshmukh Thane
100 Lakshmi Sasidharan Ernakulam
101 Manjusha Alegaonkar Pune
102 Manas Subhedar Harda
103 Gayatri Singh Mumbai
104 Nirmala Balijepalli Mumbai
105 B Shailaja Rao Hyderabad
106 SAVITA MARKANDEYA Ambajogai
107 Janaki N Bengaluru
108 Mamta New Delhi
109 Subodh Vinchurkar Pune

110 K L N V Sujatha Hyderabad
111 Anita Aryal Nepal. Hetauda
112 Swati Sudhir Kulkarni Mumbai
113 Yogesh Chandra Mishra Lucknow
114 MAGULURI V MALLIKARJUNA RAO Guntur
115 Saraswoti Devi Pandey Kathmandu
116 Ashok Kumar Jena Balasore
117 Bhavna Dineshchandra Sevak Ahmedabad
118 Urmila Agarwal Jalgaon
119 Shital kiran kulkarni Aurangabad
120 Suneeta Godkhindi Mysuru
121 radha rani vangapandu Hyderabad
122 Archana Singh Muzaffarpur
123 Bhaskara Pramila Hyderabad
124 Kamal Shamsundar Lakhotiya buldhana
125 RATANMAAla Pune
126 Jayshree Gaurang Pabani Ahmedabad
127 Ammaji Muppalla Visakhapatnam
128 Markandeya Swati Niteen Parbhani
129 Haribhakti honey Shah Pune
130 M SRIDEVI VISAKHAPATNAM
131 Udayachandrika Shikaripur
132 Swarna Latha Vizag
133 Rajendra Prasad pant Almora
134 Pyarasani Ramulu Rangareddy Disy
135 Shankarlal adaraji Purohit Ahmedabad
136 Priyadarsini Mishra Bhubaneswar
137 Vani ramaka Warangal
138 Nilesh Nageshrao Borlepawar Nanded
139 K Rama Tulasi Eluru
140 Mrs Varsha Chetwani Jodhpur
141 Maheshbhai Khakhkhar Ahmedabad
142 Aayushe Ambardar Jammu
143 Dnyanada Shankar Ghuge Nashik
144 Lakshmi Narasimha Rao Shikaripura
145 Preeti Agarwal Dhanbad
146 Kalpana bimal desai Surat
147 Alka Chandrakant Aney Wani..dist.Yavatmal
148 KIRAN MUNDADA Parbhani
149 Malti liladhar Rathi Amravati
150 Sharvi Harish Devadiga Pune
151 Arnav Sai Tandur
152 Poori Soujanya Tandur
153 Prabha Vilas Kulkarni Aurangabad
154 Jayasri sivapuram Pune
155 Anik Adak West Midna
156 Tulasi Bengaluru
157 Deepali Deo Austin
158 Naga Sri Latha Hyderabad
159 Saadhya Tandur
160 Sanjita Agarwal Dhuliyan
161 Sita Singhal Agra
162 Ranjitha suresh Ernakulam
163 Pujari saraswathi Vizag
164 Ujwala Shrikant Zambre Parbhani
165 Upasna zanzote Nagpur
166 Bhaskar N Patel Danville
167 Shilpa Mehta Malad west
168 Pushpa Sinha Patna
169 Jyoti Gupta Greater Noida
170 K Seshakala Tejaswini Hyderabad
171 Santhi vangapandu Bhimavaram
172 Budumuru kalyani Visakhapatnam
173 Seema Gurunath Kulkarni PUNE
174 Suman Bhutra Ahmedabad
175 Geetanjali Prashant Pachhade Nagpur
176 Jayarama K Sullia
177 Vandana Dilip Pawar Piliv
178 Vishakha Prashant Sontake Mumbai
179 Nilima Prakash Wadgaonkar Aurangabad
180 Shraddha Shrikant Kalikar Amravati
181 Sreekumari K Thiruvananthapuram
182 M Sumukha Kadapa
183 Rupali Jagdish Nagapurkar Pune
184 Jayashree khasne Hyderabad
185 Sujatha Balachandran Chennai
186 Indra Mohan Bengaluru
187 Shubhangi Pramod Potbhare Pune
188 Parul Thakkar Edison
189 MALLIKA KOLLIPARA Tirunelvel

190 Mukta Vijay pokale Sonpeth
191 Hemlata devidas bagad-1 Mumbai
192 Vinodini Pai Bangalore
193 Utpat Jayashree Gopal Pandharpur
194 Chandra Has Khanduri Gurugram
195 Batakrushna Sahoo Jajpur
196 M Skanda Kadapa
197 Hema Badrinarayan Laddha Amravati
198 Ratnamala Ratnakar Narawane. Karad
199 Anita Nerlekar Pune
200 Sushila Mahadev Mohita Osmanabad
201 Dinesh Pande Akola
202 Arvind prabhakar parakh Nashik
203 Sharda Rani Garhshankar
204 Deivanayaki Hariharan Chennai
205 Shama Ashok Chandak KHAMGAON
206 Amita Anirudha Gargate Pune
207 Hema Saish Chavali Pune
208 Uma Sankaran Manipal
209 Chandrashekhar Madhukar Kayande Pune
210 Vedavyas Ritwik Marada Warwickshire
211 Sneha Satyajit Narkhede Akola
212 Rama Tulasi A Vizag
213 Vinita Vaghela Ahmedabad
214 Jishnu D Bangalore
215 Kumkum Bhatnagar Lucknow
216 Rupa Gajjar Rajkot
217 Babita Lakhotiya. Biratnagar
218 SUDHA S J Bangalore
219 Golla Durga Sri Dhyuti Rajamahendravaram
220 Gayathri Holla UDUPI
221 Sushama Nandkumar Tanksale Sangli
222 Prabha Khare Kolkata
223 Arati Hemant Naik Kalyan East Dist Thane
224 Vinita Kothari Mumbai
225 Dakshakunvarba Jagdishsinh Gohil Ahmedabad
226 Sushama Koleshwar Calgary
227 Manoranjitha Mocherla Bellary
228 AMBILI SUNIL Bangalore
229 Mrunal Sathaye Pune
230 Sunita Dilip Kothavade Ambernath
231 Sunita Agrawal Jaipur
232 Raghunathan G Pune City East
233 Bhargavi Shankar Kanade Chiplun
234 Pushpa nayar Bengaluru
235 Madhuri Kulkarni Mehkar
236 Hari das Bethamcherla
237 Nirmala Shashikant Dandage Satara
238 Ajay Gupta Meerut
239 Golla Rama Saanvi Rajamahendravaram
240 Saanush Reddy S Hyderabad
241 Pratibha Prashant Zade Nagpur
242 NANDA VIJAY AYACHIT Nagpur
243 Amita Shrikant Maniar Mumbai
244 Arunaben C Belani Ahmedabad
245 B S A N L MANGATAYARU Bandarulanka
246 Lata shantial chavan Jalgaon
247 Venuvu Adapala Hyderabad
248 Pratibha Dipak Devale Ambajogai Dist Beed
249 Anjali Shindore Nashik
250 Anjul Gupta Ghaziabad
251 Jyothi Srihari Mumbai
252 Mahesh Kanadkhedkar Nanded
253 Datta Rambhau Kedare Parbhani
254 JYOTHI KOTA Kadapa
255 Mrs. Kanchan Prashant Pohankar Nagpur
256 VENKATA BHASKARA NAGAMANI KOLLEPARA Narasapuram
257 Sukumaran T P Palakkad
258 Sunanda Padmakar Pathak khamgaon,Distt. Buldana
259 Minakshi Ramesh Thakor Vadodara
260 Vinodkumar shivrajappa Mukhare Parabhani
261 Meghana Mayuresh Belsare Pune
262 ANJALI HARI KULKARNI Tuljapur
263 Sapana Manish Khandelwal Ahmednagar
264 Jyoti Sarwade Thane,West
265 Medha Keskar Mumbai

266 Aruna Pramod Newaskar Navi Mumbai
267 Surekha Namdeo Kawade Pune
268 Sunita Anil narkhede Yavatmal
269 Palak K Patel Hansot
270 Rajani Subhash Amale Solapur
271 Meenakshi Shrikant Mandlekar Nagpur
272 Sulochana Bhat Shivamogga
273 Snehalata Vijay Shukla Amravati
274 Richa Abhay Kumbhojkar Kolhapur
275 Shreesha rajeshwar deshmukh Pune
276 RADHARAMESH CITY
277 Pasupuleti Nagamani Bengaluru
278 Manda Sureshrao Jungade Ahmedabad
279 Hema Badrinarayan Laddha Amravati
280 Medha Avinash Joshi Chiplun
281 Shubhangi Joshi Pune
282 Komanduri Yatiraja Sridevi Hyderabad
283 Malan M Todkar CITY
284 Mukund Raghwendra Deshmukh Amravati
285 Ushaprasad Mysore
286 PRACHI PRAKASH JOSHI Nashik
287 Radhika Khandalkar Bengaluru
288 D.Madhavi Paradeep
289 Shailaja Bapu Rane Thane
290 Nupur Gupta Mumbai
291 Maya yadav Barwani
292 Jhansi Rani Vemulapalli Hyderabad
293 Veena Ranganath Kulkarni Pune
294 Abhay Kumar Tripathi Jamshedpur, East Singhbhum
295 Keshab Chandra Borah Jorhat
296 Amogh Nadiger Bengaluru
297 Minakshi Sunil kinge Boisar
298 Manjiri Gokhale Pune
299 Sukhada Shrikrishna Jawadekar Solapur
300 Deepa Yogesh Pithwa Bangalore
301 Chitra Suresh Coimbatore
302 Karri Kamireddy Kakinada
303 Padala SuryaKumari Kakinada
304 Suchitra Joshi Thane
305 Narayani Surendra kathane pune
306 Shubhangi Rameshrao Kulkarni Ambajogai
307 RamyaSrinivasan Chennai
308 Sasmita Padhi Bhubaneswar
309 Devansh Kalantri Amravati
310 Ajeet Kumar Singh Lucknow
311 Alka Acharya Vadodara
312 YATHARTHA AGRAWAL Biratnagar
313 Nanda Vijay Deshpande Nashik
314 Geeta Thumar Rajkot
315 Aarav Mukund Laddha Amravati
316 Anushree Arvind Warhadpande Nagpur
317 Vibha Rajendra Patil Amravati
318 Naga Raja Chetty Annam Bangalore
319 Vidya Ramakrishna bhat Sirsi
320 Jayshri R Gorde Warud
321 Sharda Sudhir Deshpande Dharashiv
322 Sharmila Salian Mumbai
323 Hari Priya Kurnool
324 Trivedi Harshkumar Yogeshbhai Bhavnagar
325 Pradeep Bansal DWARKA,DELHI
326 Sandhya Anil Manke Mumbai
327 Venkata sunanda Kavali
328 Manisha thakkar Dombivali
329 arun madhavrao kulkarni nandura
330 Kavita Saraf Kolkata
331 Suneeta kotra New Delhi
332 Nanda pramod patil Talwel
333 Malini Prakash Kulkarni Latur
334 SRINIVASA UPADYAYA Mysore
335 Thakaji Dharmaji Jadhav Nashik
336 Dinesh Kumar Rakheja Gurgaon
337 Kalpana Thakker Mumbai
338 Hemalatha Hyderabad
339 Shailaja Khadke Thane
340 K S NAGAMANI Vijayawada
341 Sunitha Chetan Doddabele Bangalore
342 Neela Ratnakar Ranade Dhule

343 Akondy Mani Kesari Kakinada
344 Pradeep Mittal Agra
345 Yatharth Tripathi Gonda

9.2 Vichakshan verse

1 Hemakiran Krishnamurthy Bengaluru
2 Mrinalini Sachin Joshi Ahmedabad
3 Pramila Deshmukh Noida
4 Rekha Manohar Barhate Bangalore
5 Ranjana R Bhat Bengaluru
6 Manisha Sanjay Kawale Mumbai
7 Koyeli Ganguly Jabalpur
8 Visalakshi Putta Kakinada
9 Vasudha Deshpande Pune
10 Manasvi Sharma Meerut
11 Neera Handa Kanpur
12 Karri Kamireddy Kakinada
13 Priti Abhay Joshi Pune
14 Renuka Pramod Joshi Shegaon
15 Manavi Upadhyaya Bangalore
16 Pratibha Khamamkar Chandrapur
17 Krithiga Krishnasamy Bengaluru
18 Sunita goel Delhi
19 Nirmala Sadashivrao Upadhye Ambad
20 Manika Periwal Mumbai
21 Alaka Surendra Karnik Pune
22 GAYATHRI SL BENGALURU
23 Meenakshi veeranna Takkalki Belagavi
24 Sunanda Arvind Kulkarni Parbhani
25 D.Madhavi Paradeep
26 Sucheta Deepak Karande Mumbai
27 Kunadharaju Rama Devi Bhimavaram
28 PADMAVATHY PRABHAKAR Dombivali
29 Arvind Chitale KHAMGAON
30 Bhagwati Gautam Patel Dapoli
31 Rama aggarwal Ghaziabad
32 Krutika Bhambhani. Mumbai
33 Suma prashanth bhat Kumta
34 Yogesh Kumar New Delhi
35 Meeno Bhat Bhiwadi, Alwar
36 Munmun Roy Howrah
37 KRISHNAN R Trichirappalli
38 Vinod Batra Delhi
39 Naga Raja Chetty Annam Bangalore
40 Akshatha kedlaya Barkur
41 Neeta Ashok Badiyani Mumbai
42 Jaini Deepika Dhone
43 Pooja narayan tela Umarkhed
44 M Ananda kumar vizag
45 Prabhavati Hegde Joginmane Heggarni,Karnataka
46 SANJEEV VAMANACHARYA PUJAR NAVI MUMBAI
47 Saroja Shivaram Bhat Tirupati
48 Patel Alpa Manishbhai Ahmedabad
49 Prakash Ramchandra Joshi Jule Solapur, Solapur
50 Shobhana K R Yeldur
51 Jayalakshmi Hyderabad
52 NARENDRA PRASAD VYAS Bhopal
53 Swati Amit Maheshwari Nasik
54 Lata Kancharlawar Nanded
55 Dipika Mandhania Jaipur
56 Shreyasha Shrikant Deshmukh Barshi
57 Swathi K S Bengaluru
58 Sayoni Datta Bangalore
59 Bharti kushwaha.. Shahdol
60 Ganesh Auti Pune
61 Asmita Pawar Belgaum
62 Kirti Pramod Shidhaye Aurangabad
63 Shailaja Udaysingh Pisal Deshmukh Wai
64 Tanvi Desai Bangalore
65 KIRANBALA NAGAR Acton
66 Mrs Kavita Pravin Bhusari CITY. Nagpur
67 Anita Somani Bhilwara
68 Vidya Nishtala Hyderabad
69 Sapna D Jeere Bangalore
70 Ibungoton Sinam Flat no 3C, 55 South End Park, Kolkata
71 Geeta devi Pakur
72 Rupali Kabra Jalgaon
73 Varun Pathak Pune
74 Vaishali Balduwa Bhisi
75 Anitha Hurgat Dharmabad
76 Reeta Chawla Ludhiana
77 Ritu Sharma Amritsar
78 Meera Gupta Meerut
79 Shaila Kailas Parashar Nashik
80 Chhabi Mahanti Howrah
81 Mamta Tandon Lucknow
82 Er Deva Sharma Paudel Kathmandu

83 Saroj Rani North West
84 Santosh Kashyape Davie
85 Renu Agarwal Mumbai
86 Shanta Shah Ahmedabad
87 Gagan Bihari Bhuyan Bhubaneswar
88 Yogesh Chandra Mishra Lucknow
89 Vijayalakshmi S Mangalore
90 Narayan Appachar Salem
91 Manisha thakkar Dombivali
92 Rajeshwari Umesh Kondawar CITY
93 VINABAHEN Himatnagar
94 Urvashi Patel Danville
95 NUNNA NEERAJA Visakhapatnam
96 Archana Bang Bhopal
97 Srividya Balakrishnan Bengaluru
98 Shraddha Khaitan Kolkata
99 Vyjayanthi Gurudath Auckland
100 Rajkumar Sharma Mathura
101 Padmavathi Karna Kukatpally, hyderabad
102 Jayant Balkrishna Kulkarni New panvel (west)
103 Chetna A Sachde Mumbai
104 Nisha kulshreshtha Greater noida
105 Vani C Adiga Udupi
106 Mamatha Duvvala KamaReddy
107 SMITA GIRISH SOMANI Sangamner
108 DUVVALA KUSHAL MANOHAR YADAV KamaReddy
109 Sujata Wamanrao Moharil Chandrapur
110 Usha Gangatirkar Nagpur
111 Mihir Pathak Mumbai
112 PRATIBHA SHARMA New delhi
113 Rekha Trivedi Jalgaon
114 Nagamalleswari Rachakonda Guntur
115 Kamal Ashok Adhav Ahmednagar
116 Siddemsetty manju Vijayawada
117 T Malathi Kalahasti
118 Anjali Balwant Samant Mumbai
119 Jayashree JN Bengaluru
120 Meera Mangesh Trifaley Nagpur
121 Ashish Vimalkant Pandey Sambhajinagar
122 Harati Dumpala Bengaluru
123 Kailash chandra agrawal Mathura
124 Haritha Manthena Hyderabad
125 Geetanjali Prashant Pachhade Nagpur
126 Guduru Narender Reddy Bhupalpally
127 Harsha Amar Rathi Amravati
128 Sonali Nagle Pune
129 Sangeeta jain Narnaul
130 Uma shetty Margao
131 Maitreyee Tambe Mumbai
132 Rekha Phalak Nashik
133 Saranga Raghuwanshi Amravati
134 Shailaja ulhas inamdar Delhi
135 Shailaja Ramesh Chaudhari Dombivali
136 Madhuri patil Bhilai
137 Madhuri Kali Indore
138 Malati Bhagwat Patil Bhusaval
139 Manisha Deo Panvel
140 BOLLINENI Padmaja Visakhapatnam
141 Bhakti Thakkar Dumont
142 Sudha Anil Kumar Pillai Thane
143 Rukmini Devi K Sullia
144 Rajani Chamadia Rewa
145 Madhumati R Shigehalli Siddapur
146 Suchita Subhash Pingle pune
147 Ansuya Shah Ahmedabad
148 Gauriben Patel Ahmedabad
149 Chandralekha Navi mumbai
150 Shubhangi Shrinivas Patwardhan Nagpur
151 Puja Ramawat Bikaner

9.3 Vichakshan Reverse

1 Pratibha Mahendra Karwa Jalna
2 A Sai Yeshin Reddy Hyderabad
3 Roopa N Aithal Bengaluru
4 Rupa Maheshkumar Zariye Bangkok
5 Sapna D Jeere Bangalore
6 Veligotla Meenakshi Nagpur
7 Jagruti Thaker Ahmedabad
8 Lakshmi vempati Hyderabad,telangana
9 Smritikana Banerjee Chinsurah
10 Sumana S Revankar Kumta
11 KALA SUBRAMANIAN Chennai
12 Meeira Rangachary West mambalam chennai
13 Mehul M Anjaria Vadodara
14 Pallavi Prashant Singh Pune
15 Sanavi Satish Pathak Barshi
16 Swapnil Satish Pathak Barshi
17 Savita Sethi Delhi
18 Anushree Kulkarni Nagpur

19 Varsha Kiran Polawar Aurangabad
20 Vandana Patil Mumbai
21 Radha Mahadev Chinchole Beed
22 Suvarna Khanwalkar Dehradun
23 Kiran puri New delhi
24 Mrudula Anil Deshpande Dombivali
25 Devidas Pandurang Paramwal Nashik
26 Vaishnavi Vineet Joshi Indore
27 Kriti Bardhan Gupta Lucknow
28 Khyati Gupta Lucknow
29 Kiran Bhardwaj Hyderabad
30 Mugdha Mayur Koulavkar Bengaluru
31 Padmaja Satish Bhandakkar Chandrapur
32 Kavita Gulabrao Pakwanne Pune
33 Jayshreeben Vaishnav Ahmedabad
34 Rajkumar Sharma Mathura
35 Pranita Devraj Majmudar Canton, michigan, usa
36 Sreedevi Bengaluru
37 D.SRI LAKSHMI Nandyal
38 Supriya Patki Islampur
39 R Rajeswari. Chennai
40 Asha Mittal Ludhiana
41 Suvarna Suresh Anvikar Sillod
42 Mrs Prajakta Pramod Ambekar Pune
43 Swathi K S Bengaluru
44 Acharya Guruji Brampton
45 DUVVALA KUSHAL MANOHAR YADAV KamaReddy
46 Manasvi Sharma Meerut
47 Archana Bang Bhopal
48 Shailaja Ramesh Chaudhari Dombivali
49 Anandi Nilesh Bhuyar Amravati
50 BOLLINENI Padmaja Visakhapatnam
51 Krithiga Krishnasamy Bengaluru
52 Visalakshi Putta Kakinada
53 Sudha Anil Kumar Pillai Thane
54 GAYATHRI SL BENGALURU
55 Maitreyee Tambe Mumbai
56 Dr Trupti Dinesh Keny Mumbai
57 Shilpa Kabra Erandol
58 Mamatha Duvvala KamaReddy
59 Saranga Raghuwanshi Amravati
60 Rukmini Devi K Sullia
61 Shubhangi Shrinivas Patwardhan Nagpur
62 Sucheta Deepak Karande Mumbai
63 Varsha Vijay Patil Pune
64 Priti Abhay Joshi Pune
65 Vyjayanthi Gurudath Auckland
66 Shraddha Khaitan Kolkata
67 Kunadharaju Rama Devi Bhimavaram
68 Guduru Narender Reddy Bhupalpally
69 Jayashree JN Bengaluru
70 Rekha Trivedi Jalgaon
71 Sujata Wamanrao Moharil Chandrapur
72 Nagamalleswari Rachakonda Guntur
73 Naga Raja Chetty Annam Bangalore
74 Koyeli Ganguly Jabalpur
75 NUNNA NEERAJA Visakhapatnam
76 Rekha Manohar Barhate Bangalore
77 Madhumati R Shigehalli Siddapur
78 Smritikana Banerjee Chinsurah
79 Anita Billaiya Indore
80 Yogesh Kumar New Delhi
81 Padmavathi Karna Kukatpally, Hyderabad
82 Madhuri Kali Indore
83 Bhakti Thakkar Dumont
84 Manisha Deo panvel
85 Jayalakshmi Hyderabad
86 Rajani Chamadia Rewa
87 Krutika Bhambhani. Mumbai
88 Dr. Aparna Holkundkar Bhopal
89 Akshatha kedlaya Barkur
90 Usha Gangatirkar Nagpur
91 Meeno Bhat Bhiwadi, Alwar
92 D.Madhavi Paradeep
93 Haritha Manthena Hyderabad
94 Siddemsetty manju Vijayawada
95 Vani C Adiga Udupi
96 Manika Periwal Mumbai
97 Uma shetty Margao
98 Sangeeta jain Narnaul
99 KARTHYAYINI M D Mysore
100 Mihir Pathak Mumbai
101 Sonali Nagle Pune
102 Ansuya Shah Ahmedabad
103 Jayant Balkrishna Kulkarni New Panvel (West)
104 Renuka Pramod Joshi Shegaon
105 Gauriben Patel Ahmedabad
106 Karri Kamireddy Kakinada
107 Uddhav Neeraj Jawale Vadodara

108 Surendra Malik Delhi
109 Vinod Batra Delhi
110 Anjali Balwant Samant Mumbai
111 Rama aggarwal Ghaziabad

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/vishess-anubhaag/geetavrati-geeta-vichakshan-recipients/

07

भाव एक भाषा अनेक



भगवा वस्त्र धारण किए संत पद्मासन में बैठे हुए दोनों हाथों में नारियल लिए हैं।

०७ भाव एक भाषा अनेक

भाव एक भाषा अनेक

५४ मिनट पठन • १ चित्र

Bangla #1 Bul bul Podder

শ্রেষ্ঠ উপহার

জয় শ্রীকৃষ্ণ নাম নিয়ে হলো পাঁচটি বছর পার,

এ যে বৃহৎ পরিবার,নাম গীতা পরিবার।

Learn Geeta.com, এই ঠিকানা নিয়ে,

দেশে ও বিদেশে সদস্যরা রয়েছে ছড়িয়ে ।

শুনেছিলাম প্রবাদ বাক্য, শাপেও থাকে বর,

ভগবানের কৃপা যদি থাকে নিরন্তর ।

পাঁচ বছর আগে যখন প্রায় সবকিছু ছিল ভালো,

হঠাৎ এলো মহামারী, জীবন এলোমেলো ।

গুরুদেবের ভালোবাসায় ভয়কে করে জয়,

গীতা মাতার সঙ্গে হল মোদের পরিচয়।

গীতা পড়, গীতা পড়াও, জীবনে আনো গীতা ;

এই মন্ত্রের দীক্ষা দিয়ে হলেন পরিত্রাতা।

চলছি সবাই একসাথে মোরা, লক্ষ্য করে স্থির,

ঘরে ঘরে গীতা, সব হাতে গীতা, পৌছাবো নিশ্চিত।

ভগবানের বাণী মেনে হব অর্জুন সম,

তব পদে সমর্পিত সব কর্মফল মম।

যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ যদি মোদের সাথে রয়,

স্বকর্ম ক্ষেত্রে সফলতা আসবে নিশ্চয়।

জীবন ভর পেয়েছি তো কত উপহার,

মোর জীবনের শ্রেষ্ঠ উপহার " গীতা পরিবার"।

___ বুলবুল পোদ্দার

Bangla #2 CT Rupali Chakraborty (Bangla)

গীতাপরিবার-এর সঙ্গে আমার যাত্রা এক গভীর আত্মিক পরিবর্তনের পথ। আমি প্রথমে একজন শিক্ষার্থী হিসেবে *শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা* পাঠ শুরু করি এবং ধীরে ধীরে গীতা পরিবারে সেবা দেওয়ার সৌভাগ্য অর্জন করি। গত দুই বছর ধরে আমি প্রশিক্ষক হিসেবে সেবা দিচ্ছি। গীতার নিয়মিত পাঠ ও মননে আমার চিন্তাভাবনায় যে স্বচ্ছতা, শৃঙ্খলা ও মানসিক স্থিতি এসেছে, তা ভাষায় প্রকাশ করা কঠিন। গীতা পরিবার শুধুমাত্র একটি প্রতিষ্ঠান নয় — এটি একটি মূল্যবোধনির্ভর আন্দোলন, যা আত্মোন্নয়ন ও সেবা-ভিত্তিক জীবনের দিকে পথ দেখায়। এই গীতার আলোয় আমার জীবনে যে আলোড়ন এসেছে, তাতে আমি চিরঋণী। আমি কৃতজ্ঞ এই মহান সংগঠনের প্রতি, যারা আমাকে শুধু গ্রহণ করতে নয়, সেবা দেওয়ার পথেও এগিয়ে যেতে সুযোগ দিয়েছে। ঈশ্বর করুন, আরও অনেকের জীবনে গীতার এই জ্যোতি পৌঁছাক।

Tamil #3 CT Sujatha Balachandran

என்னை ஆட்கொண்ட கீதை.

மனித குலத்திற்கே உயர்வான
உயிரான கீதையை

உயிர் எழுத்துக்களால் சமர்ப்பிக்கிறேன்.

அ – அற்புத கீதையில் உள்ளது

ஆ – ஆழமான கருத்து

இ – இதை அறிய வேண்டும் எனில் உனக்கு

ஈ – ஈஸ்வர கிருபை இருந்தால் தான்

உ- உணர முடியும் அதற்கு உன்

ஊ – ஊன கண்களினால்

எ – எதையும் அறிய முடியாது

ஏ – ஏனென்றால் அதை அறிய
ஞானக்கண் தேவை

ஐ – ஐந்தறிவு உயிரினம் போல்
இல்லாமல் மனதை

ஒ – ஒருமுகப்படுத்தி அவனை நினைத்து

ஓ – ஓம் எனும் பிரணவத்தை ஓதினால்
அதுவே சகல

ஔ – ஔஷதம் ஆக மாறி அனைவரையும்

ஃ – காஃகும் நம் தெய்வீக கீதை

ஸர்வம் கிருஷ்ணார்ப்பணமஸ்து.

Tamil #4 S.Shobhan Babu

அனைத்துமானாய்.....

1. பகவானின் நாமங்கள் அருளானதே,

அதை

அனுதினமும் சொல்ல மனதின்
இருள் போகுமே!

2.கிருஷ்ணா உன் வார்த்தைகள்
மறையாகுமே, அதை

தினந்தோறும் படிக்க
பாவக்கரை போகுமே!

1. ஐயா உம் பாதங்கள் பெரிதானதே,

சரணாகதி எனும் ஒன்றில்
அது வசமானதே!

4.போர்களத்தில் நீ உரைத்தாய்
அது கீதையானது,

ஜீவாத்மா கரைசேர அதுவே
பாதையானது!

1. கிருஷ்ணா நீ இருக்கும் பக்கம் தர்மம்
நிலைக்கும், ஆனால்

அதர்மம் தழைக்கும் போது நான்
வருவேன் என்றாய்!

1. நீ படைத்த அண்டங்களில் ஓர் தூசு நானே

உன் மகிமைகள் அறியாது
நான் பேசினேனே!

1. எனக்கோ கீதையைப் பற்றித் தெரியாது!

அதைப் படித்தாலும் எதுவும் புரியாது!!

1. ஐயா உம்மை அளக்க ஓர் அளவில்வையே!, உன்னை

சிறைபிடித்த என் இதயம் அவ்வளவு பெரிதில்லையே!

1. மாயைகள் கண்முன்னே ஜாலம் காட்டும்

உனைத்தேடும் கண்கொண்டால்
மோக்ஷம் கிட்டும்!

1. உயிருள்ளதும் உயிரற்றதும் எல்லாம் நீயே, அதிலெல்லாம்

உன்னைக் காண நீ மாயம்தானே!

1. நாதா உன் லீலைகள் புரியாததே,

அதில்

புதைந்துள்ள அர்த்தங்கள்
என்றும் புதிரானதே!

1. உலகின் ஐஸ்வர்யம் எல்லாமே உனதாகுமே, இருந்தும்

பக்தியுள்ள சிறுபடையலுக்கு உன் மனம் ஏங்குமே!

1. உன் நாமங்கள் என் நாவின் துடிப்பாகட்டும்....

உன் அன்பை என் இதயம் தினம் ருசி பார்க்கட்டும்....

1. ஆயிரம் சூரியன் உன் ஒளியாகுமே, ஆயினும்

என் அடைக்கலம் உன்
திருப்பாத நிழலாகுமே!

1. பரம் பிரம்மம், பரமபிதா நீரே ஐயா, இந்த

ஜீவாத்மா உன்னைச் சேர சித்தம்
கொள்வாய் ஐயா ...

சர்வம் ஸ்ரீ கிருஷ்ணார்ப்பணம்!!!!

English #5 CT Rakhma Balaji

Article... Personal experience of Geeta

Bhagavad Geeta has been a long dream and covid seems a blessing in disguise and Geeta Pariwar provided a unique platform to learn and teach which brought the innate passion to tap the potential to the forum.. The enthusiasm kindled by Krishna ‘s blessings towards spiritual teaching, no looking back ever since.

It was in June 2024 when I was preparing for L4, my father fell sick and was in ICU, I was in the room chanting only 8 th chapter throughout.. This became a testimony where Geeta stood tall and substantiated every word as Krishna . He was most respected, known for magnanimity throughout and impacted every person in the village he lived and for all the spiritual sewa he rendered, Krishna gave him a peaceful journey as in chap 8.Krishna made sure of #5 in reality where his thoughts were already transported to God’s names and great Acharya like Sri Raghavendra swamy to whom he rendered his Aradhana sewa for 52 years.. The end came on an ekadashi day with chap 8 shlokas making it very true in all the ways..

Chanting the 15 th chapter everyday has a profound effect at my home with the way Tulasi grows so happily with the lush green like a bush, all standing as a great testimony about the greatness of Geeta in our life.

Tamil #6 Names of Arjuna

கீதையில் அர்ஜுனனின் பெயர்கள்

1.அர்ஜுனன்- தூய்மை பிரகாசம்

2.கவுன்தேய- குந்தியின் புதல்வன்

3.தனஞ்செய- தனத்தை ஜெயித்தவன்

4.மஹாபாஹோ- பெரும் தோள்களை உடையவன்

5.பார்த்த –

ப்ருததாவின் புத்திரன்

6.பரதர்ஷப-

பரத குலத்தின் காளை

7.பரந்தப – எதிரிகளை வாட்டுபவனே

8.குடாகேச- உறக்கத்தை வென்றவன்

9.குரு நந்தன –

குரு வம்சத்தை சேர்ந்தவன்

10.பரதஷ்ரேட்ட –

பரத குலத்தில் சிறந்தவன்

11.காபித்வஜ – அனுமன் கொடி தாங்கியவன்

12.குருசத்தம –

குரு வம்சத்தில் சிறந்தவனே

13.அனக- பாவமற்றவனே

14.புருஷ வியாக்ர- புருஷர்களில் புலி போன்றவனே

15.சவ்ய சாச்சின்- இரு கைகளிலும் அம்பு தொடுப்பவன்

1. பாண்டவ- பாண்டுவின் புத்திரன்

1. பாரத –

பரத குலத்தை சேர்ந்தவனே

1. விஜயன்- வெற்றி ஈட்டுபவனே

Tamil #7 Compiled by: Mrs.MAHALAKSHMI SRIDHAR

பகவத்கீததயும் குறளும்

காலத்தால் அழியாத பல உன்னதமான தத்துவங்கதை பகவத் கீதத நமக்கு ககாடுத்தைத்து. உலகப்கபாதுமதறயாம் திருக்குறில் கீததயில் தைத் தத்துவங்கைக் கூறப்பட்தைடுன.அவற்றில் சிலவற்தற இங்கு காண்பபாம்.

குறற் 6: கபாறிவாயில் ஐந்தவித்தான் கபாய்தீர் ஒழுக்க

கநறிநின்றார் நீடுவாழ் வார்

விளக்கம்:

மமய், வாய், கண், மூக்கு, மெவி ஆகிய ஐந்து ம ாறிகளின் வழி ் பிறக்கும் தீய ஆசெகசள அழித்து கடவுளின் ம ாய்யற்ற ஒழுக்க வழியிலே நின்றவர் மநடுங்கோம் வாழ்வார்

பகவத் கீதத 8.12

ஸர்வ-த்3வாராணி ஸம்யம்ய ம பனா ஹ்ருதி3 நிருத்4ய ச மூ ர்த்4ன்ய் ஆதா4யாத்மன: ப்ராணம் ஆஸ்தி2 பதா பயாக3-தா4ரணாம

குறற் 126: ஒருதமயுள் ஆதமபபால் ஐந்தடக்கல் ஆற்றின்

எழுதமயும் ஏமாப் புதடத்து

விளக்கம்:

உறு ்புகசள ஓர் ஓட்டுக்குள் அடக்கிக் மகாள்ளும் ஆசமசய ்ல ோ் ஐம்ம ாறிகசளயும் அடக்கியாளும் உறுதி, கோமமோம் வாழ்க்சகக்குக் காவே அரணாக அசமயும்

பகவத் கீதத 2.58

யதா३ ஸம்ஹர பத சாயம் கூர்
பமாங்கா३னீவ ஸர்வஸ²:
இந்த்३ரியாணீந்த்३ரியார் பத ²ப்⁴யஸ் தஸ்ய
ப்ரஜ்ஞா ப்ரதிஷ்டி²தா

குறை 223: இலகனன்னும் எவ்வம் உதரயாதம ஈதல்

குலனுதடயான் கண்பண யை

விளக்கம்:

தமக்குள்ள வறுசமத் துன் த்சதக் காட்டிக்மகாள்ளாமே பிறருக்கு ஈவது உயர்ந்த குடி ்பிறந்தவரின் ண் ாகும்

பகவத் கீதத 17.20

தா३தவ்யம் இதி யத்३ தா३னம்
தீ३ய பதநுபகாரிபணபத३க்ஷஸ²
காபல ச பாத்பர ச தத்३ தா३னம்
ஸாத்த்விகம் ஸ்ம்ருதம்

குறை 344: இயல்பாகும் பநான்பிற்ககான் றின்தம உதடதம

மயலாகும் மற்றும் கபயர்த்து

விளக்கம்:

ஒரு ற்றும் ஜோதிருத்தலே துறவுக்கு ஏற்றதாகும் ஓன்றன் லமே ற்று சவ ்பினும், அது லமன்லமலும் ற்றுகசள ்ம ருக்கி மயங்கெ் மெய்துவிடும்

பகவத் கீதத 18.49

அஸக்த-பு३த்³தி4: ஸர்வத்ர ஜிதாத்மா
விக३த-ஸ்ப்ருஹ: தநஷ்கர்ம்ய-ஸித்³தி4ம்
பரமாம் ஸன்ன்யாபசஸனாதி4க३ச்ச²தி
18.49

श्लोक सुने
१८.४९

குறை 356: கற்றீண்டு கமய்ப்கபாருே் கண்டார் ததலப்படுவர்

மற்றீண்டு வாரா கநறி

விளக்கம்:

கற்க லவண்டிய வற்சறக் கற்று இங்கு மமய் ்ம ாருசள உணர்ந்தவர், மீண்டும் இ ்பிற ்பிற்கு வராத வழிசய அசடவர்.

பகவத் கீதத 10.7

ஏதாம் விபூ4திம் பயாக३ம் ச மமபயா
பவத்தி தத்த்வத: பசாவிகம்பபன
பயாபக३னயு ஜ்யபத நாத்ர ஸம்ஸ²ய:

English #8 Nutan Chandra — Back to my roots

The knowledge of my faith, a distant memory,

Once lost in the rhythm of survival—

Work, cook, clean, sleep—

An endless cycle, a life reserved for duty.

No moment spared, no room to pause —

To feed my roots,

To understand the teachings, that shaped the heart within me.

Then came an unexpected gift—

A quiet space, a breath between tasks,

Where birdsong filled the silence,

And the scent of lilacs lingered in the air.

They say the teacher finds the student when the student is ready,

And in that stillness, Gita Parivar found me.

Hesitant, uncertain,

My tongue stumbled over sacred words,

So I sat in silence, listening.

Yet with each class,

Each devoted Guru, each impassioned voice,

Confidence took root, growing inch by inch.

The rhythm of the verses became a melody,

That played in my dreams

A song that stirred the depths of my soul.

Now, I stand steadfast—

An eternal student, walking the path,

Drawing ever closer,

Until the wisdom of the Bhagavad Gita

Becomes a part of me!

Kannada #9 Dr Aruna K R

ಶ್ರೀ ಕೃಷ್ಣ, ಗೀತೆ ಮತ್ತು ನಾನು

ಗೀತೆಯ ಉದ್ಘೋಷಕ ನೀ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ |

ಪರಮಪಾವನ ನಿನ್ನ ಸಾನ್ನಿಧ್ಯ ||

ತಣಿವುದು ಹೃನ್ಮನ ಗೀತೆಯಲಿ |

ಎಂತಹ ಮಹಾತ್ಮೆಯೋ ಅದರಲ್ಲಿ |

ಸಖನು ನೀನು ಸುಪ್ರಿಯನು ನೀನು |

ಬಾಳಿನ ಹೊಂಬೆಳಕಾದೆ ನೀನು || 1 ||

ಕರ್ತವ್ಯವೇ ಸದ್ಧರ್ಮವಾಗುತಲಿ |

ಗುಣತ್ರಯಗಳು ಆಹಾರದಲಿ |

ಭಂಗವು ಅಹಂಕಾರಾಭಿಮಾನಗಳು |

ತೆರೆದವು ಜ್ಞಾನದ ಚಕ್ಷುಗಳು || 3 ||

ಬಡವ-ಬಲ್ಲಿದ ಭೇದವಿಲ್ಲದೆ |

ಭಾವದಲೆಂದೂ ಮೇಲು-ಕೀಳಿಲ್ಲದೆ |

ಯಜ್ಞದಿ ಕಾಣಲು ಪೂರ್ಣ ನಿಷ್ಠೆಯ |

ಸಮತ್ವವ ಸಾರಿದ ಗುರುವರ್ಯ || 4 ||

ಆಂತರ್ಯದಿ ಸಮರವಾಗುತಿರೆ |

ಯುಕ್ತಿಯ ಉಪದೇಶ ನೀಡುತಿರೆ |

ಗೀತೆಯೇ ಬಾಳರಥದ ಚಕ್ರವು |

ಚರಾಚರಗಳೆಲ್ಲಾ ಅಧ್ರುವವು || 5 ||

ಗಾಂಡೀವಿಯು ನಿಂತಿರುವಲ್ಲಿ ನಾನು |

ಪ್ರೇಮದಿ ಶಿರ ನೇವರಿಸಿ ನೀನು |

ನೀ ತೋರಿದ ಮಹಾವಿಶ್ವರೂಪವು |

ಸರ್ವಸ್ವವೂ ನಿನ್ನ ಅಂತರ್ಗತವು || 6 ||

ಹೇ ಕೃಷ್ಣ ಅದೆಂತಹ ಪ್ರೇಮಮಯಿ |

ವಾತ್ಸಲ್ಯಕ್ಷೀರವ ನೀಡುವ ತಾಯಿ |

ಕರಪಿಡಿದು ನಡೆಸುವ ತಂದೆ |

ಜಗದ್ಗುರು ಕಾರುಣ್ಯಸಿಂಧುವೆಂದೆ || 7 ||

ಎನ್ನ ಆತ್ಮೀಯನು ನೀನಾಗಿರಲು |

ಹೃದಯದಿ ಸಂತಸ ತುಂಬಿರಲು |

ನಿನ್ನ ವಾಣಿಯೇ ಗೀತೆಯ ಸುಧೆಯು |

ಹೀರಿದ ನಾನೇ ಸುಖಿಯು

ಧನ್ಯೆಯು || 8 ||

ಗೀತೆಯ ಉದ್ಘೋಷಕ ನೀ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ |

ಪರಮಪಾವನ ನಿನ್ನ ಸಾನ್ನಿಧ್ಯ ||

Kannada #10 Ram

||ಬಾಳೇ ಕೃಷ್ಣಾರ್ಪಣ||

ಹಾಡಿ ಮೆಚ್ಚಿಸೆ

ನಾಡ ಕೋಗಿಲೆಯು ನಾನಲ್ಲ

ಅಡವಿಯೊಳು

ನುಡಿವ ಕಾಡ- ಹಕ್ಕಿ..

ಜಗವ ಬೆಳಗುವ

ಪ್ರಖರ ಭಾನು ನಾನಲ್ಲ,

ಕಾರಿರುಳ ಬಾನ

ಮೂಲೆಯಲೊಂದು ಚುಕ್ಕಿ..

ಆಯ್ದು ತಂದರ್ಚಿಸಿದ

ಕಮಲಪುಷ್ಪ ನಾನಲ್ಲ..

ಕೃಷ್ಣ ಪಾದಕೆ ಬಿದ್ದೆ

ಸುಳಿವ ಗಾಳಿಗೆ ಸಿಕ್ಕಿ...

ಜಗದೊಳಾವ ಹೆಸರೂ

ನನಗೆ ಬೇಕಿಲ್ಲ..

ಗೈದ ಕಾರ್ಯಗಳೆಲ್ಲ

ಕೃಷ್ಣಾರ್ಪಿತವೆಂಬುದೇ ಉಕ್ತಿ..

Kannada # 11Gururaj Jahageerdar

ಗೀತಾ ಪರಿವಾರದಲ್ಲಿ ನನ್ನ ಅನುಭವ – ಗುರುರಾಜ್ ಜಹಾಗೀರ್ದಾರ್

ನಾನು 2024ರ ಜನವರಿಯಲ್ಲಿ ಗೀತಾ ಪರಿವಾರಕ್ಕೆ ಸೇರ್ಪಡೆಯಾಗಿ ಎಲ್ಲ ನಾಲ್ಕು ಹಂತಗಳ ಅಧ್ಯಯನವನ್ನು ಯಶಸ್ವಿಯಾಗಿ ಪೂರ್ಣಗೊಳಿಸಿದ್ದಕ್ಕೆ ನನ್ನ ಮನಸ್ಸು ತುಂಬಿ ಹೋಗಿದೆ. ಈ ಪವಿತ್ರ ಪ್ರಯಾಣದಲ್ಲಿ ತಾಂತ್ರಿಕ ತಂಡದ ಸದಸ್ಯನಾಗಿ ಸೇವೆ ಸಲ್ಲಿಸುವ ಅಪೂರ್ವ ಅವಕಾಶವೂ ನನಗೆ ದೊರಕಿತು—ಇದು ನಿಜಕ್ಕೂ ಸ್ಫೂರ್ತಿದಾಯಕ ಹಾಗೂ ಜೀವನಪೂರಕ ಅನುಭವವಾಗಿತ್ತು.

ನಾನು ಮೊದಲ ತರಗತಿಗೆ ಹಾಜರಾದಾಗ ಅದರ ನಿರ್ವಹಣಾ ಶೈಲಿಗೆ ನಿಜವಾಗಿ ಚಕಿತನಾದೆ. ಈ ತರಗತಿಗಳು ನನ್ನ ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಅನುಭವಿಸಿದ ಯಾವುದೇ ಅಧ್ಯಯನ ಕ್ರಮಕ್ಕಿಂತ ವಿಭಿನ್ನವಾಗಿದ್ದು, ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ ಉತ್ಸಾಹ ಹಾಗೂ ಶಿಸ್ತುಪೂರ್ಣ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯಿಂದ ತುಂಬಿದ್ದವು.

ಈ ಅಧ್ಯಯನದಲ್ಲಿ ಮುಂದೆ ಸಾಗಿದಂತೆ, ಈ ಕಾರ್ಯದ ಹಿಂದೆ ಇರುವ ಹಿನ್ನಲೆ ತಂಡದ ಅಪಾರ ಪರಿಶ್ರಮ, ತ್ಯಾಗ ಹಾಗೂ ನಿಷ್ಠೆಯ ದೀಪ್ತಿಯನ್ನು ನಾನು ಅರಿತೆ. ವ್ಯಾಕರಣ ಮತ್ತು ಗೀತೆಯ ತಾತ್ತ್ವಿಕ ಅಂಶಗಳಲ್ಲಿ ಆಳವಾದ ಅರಿವಿನಿಂದ ಅಧ್ಯಾಯಗಳನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸಿರುವುದರಿಂದ ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬ ಸಾಧಕರಿಗೂ ಸುಲಭವಾಗಿ ತಿಳಿಯುವಂತೆ ಈ ಪಾಠಗಳು ರೂಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ. ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಅಂಶವೂ ನಿಖರತೆ, ಶ್ರದ್ಧೆ ಹಾಗೂ ಸಮರ್ಪಣೆಯಿಂದ ಕೂಡಿರುವುದು ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿತ್ತು.

ಗೀತಾ ಪರಿವಾರವನ್ನು ವಿಶೇಷವಾಗಿಸುವ ಅಂಶವೆಂದರೆ ಇದು ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಸಾಧಕರಿಂದ ರೂಪುಗೊಂಡ ಹಾಗೂ ನಡೆಸಲ್ಪಡುವ ನಿರ್ಲೋಭಿ ಸಂಸ್ಥೆಯಾಗಿದೆ. ಇದು ತಂತ್ರಜ್ಞಾನವನ್ನು ಶ್ರೇಯಸ್ಕರ ಮತ್ತು ಧರ್ಮಸಾಧನೆಗೆ ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಜೀವಂತ ಮಾದರಿಯಾಗಿದೆ.

ಈ ದೈವಿಕ ಪ್ರಯತ್ನದ ಒಂದು ಭಾಗವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ನನಗೆ ಭಗವದ್ಗೀತೆಯ ತಾತ್ತ್ವಿಕ ತಳಹದಿಯ ಅರಿವು ಮಾತ್ರವಲ್ಲದೆ, ನನ್ನ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವದಲ್ಲಿಯೂ ಅನೇಕ ಧನಾತ್ಮಕ ಬದಲಾವಣೆಗಳನ್ನು ತಂದಿದೆ. ನಾನು ಇದೇ ರೀತಿಯ ಪರಿವರ್ತನೆಯನ್ನು ಅನೇಕ ಸಹಸಾಧಕರಲ್ಲಿಯೂ ನೋಡಿದ್ದೇನೆ.

ಗೀತಾ ಪರಿವಾರವು ಕೇವಲ ಒಂದು ಸಂಸ್ಥೆಯಲ್ಲ—ಇದು ಪ್ರೀತಿ, ಅಧ್ಯಯನ ಹಾಗೂ ಸೇವೆಯ ಶುದ್ಧ ಚಳವಳಿಯಾಗಿದೆ.

Kannada # 12 Roopashree Kumar

ಅನುಭವ ಲೇಖನ

“ಭಕ್ತಿಯೋಗದಿಂದ ಗೀತಾವ್ರತಿಯವರೆಗೆ”

“ಉತ್ತಮ ಕಾರ್ಯಗಳು ಉತ್ತಮ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಘಟಿಸುತ್ತವೆ ಎಂಬುದಕ್ಕೆ ನಮ್ಮ ಗೀತಾ ಪರಿವಾರದ online ತರಗತಿಯೇ ನಿದರ್ಶನ. ಕೋವಿಡ್ ಸೋಂಕಿನಿಂದ ಇಡೀ ವಿಶ್ವವೆ ತಲ್ಲಣದಿಂದ ಇದ್ದ ಸಂಧರ್ಭದಲ್ಲಿ ಗೀತಾ ಪರಿವಾರದ ಸಂಸ್ಥಾಪಕರಾದ ಪೂಜ್ಯ ಸ್ವಾಮೀಜಿ ಶ್ರೀ ಗೋವಿಂದದೇವ್ ಗಿರೀಜಿ ಮಹಾರಾಜ್ ಅವರಿಗೆ online ತರಗತಿಗಳನ್ನು ನಡೆಸಬೇಕೆಂಬ ಪ್ರೇರಣೆ ಆಯಿತು. ಅದನ್ನು ಕಾರ್ಯಗತ ಮಾಡಲು ಅವರ ಪ್ರೀತಿಯ ಶಿಷ್ಯರಾದ ಸಂಜಯ್ ಮಲ್ಪಾನಿ ಮತ್ತು ಆಶು ಗೋಯಲ್ ಅವರಿಗೆ ಜವಾಬ್ದಾರಿ ವಹಿಸಿದರು. ಅವರಿಬ್ಬರ ನಿಷ್ಠೆ, ಬದ್ಧತೆಗೆ ಮತ್ತಷ್ಟು ಹಿರಿಯ ಸೇವಿಗಳ ಸಹಾಯ ದೊರೆಯಿತು. ಅವರೆಲ್ಲರ ಜೊತೆಗೆ ಗೀತಾಸೇವಿಗಳು ಸೇರಿಕೊಂಡು ಇಂದು ಗೀತಾ ತರಗತಿಗಳಲ್ಲಿ ಭಗವದ್ಗೀತೆಯನ್ನು ಕಲಿತ ಸಾಧಕರ ಸಂಖ್ಯೆ ಸರಿ ಸುಮಾರು 12ಲಕ್ಷ. ಸ್ವಾಮೀಜಿಯವರ ಸಂಕಲ್ಪ, ದೃಢ ನಿಶ್ಚಯದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ online ಗೀತಾ ಪರಿವಾರವು ಇಂದು ಐದು ವರ್ಷಗಳನ್ನು ಪೂರೈಸಿದ ಸಂತಸದಲ್ಲಿದೆ. ಐದು ಐವತ್ತಾಗಲಿ, ನೂರಾಗಲಿ, ಇಡೀ ಮನುಕುಲವನ್ನು ಉದ್ಧರಿಸಲಿ.

2021ರ ಏಪ್ರಿಲ್ ತಿಂಗಳ ಮೊದಲ ವಾರ ಗೀತಾ ಪರಿವಾರದ L1 ತರಗತಿಗೆ ನಾನು ಸೇರಿದೆ.

ಸೇರಿದೆ ಎಂದರೆ ತಪ್ಪಾಗುತ್ತದೆ. ಶ್ರೀ ಕೃಷ್ಣನೇ ಸೇರಿಸಿದ ಎಂದರೆ ಹೆಚ್ಚು ಸಮಂಜಸ. 12 ನೇ ಅಧ್ಯಾಯ ಭಕ್ತಿಯೋಗದಿಂದ ಆರಂಭವಾದ ಗೀತಾ ಕಲಿಕೆಯು, ಕಲಿಸಿದ ಗುರುಗಳ ಉತ್ಕಟ ಶ್ರದ್ಧೆ, ತಾಳ್ಮೆ ತಾಂತ್ರಿಕ ಸಹಾಯಕರ ಸಮಯಬದ್ಧತೆ, ಸಮಾಧಾನ ಮುಂತಾದ ಗುಣಗಳಿಂದ ಉತ್ತೇಜನಗೊಂಡು ತಾಂತ್ರಿಕ ಸಹಾಯಕಿಯಾಗಿ ಸೇವೆ ಆರಂಭಿಸಿ, ನಂತರ ಗುಂಪು ಸಂಯೋಜಕಿಯಾಗಿಯೂ ಸೇವೆ ನೀಡಿದೆ. ಆದರೆ ವೃತ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಅಧ್ಯಾಪಕಳಾಗಿದ್ದ ನನಗೆ ಹೆಚ್ಚಿನ ಒಲವು ಮೂಡಿಸಿದ್ದು ಕಲಿಸುವ ಗುರುವಿನ ಸ್ಥಾನವೇ. ಅದುವರೆಗೂ ಗೀತೆಯಲ್ಲಿ ಒಟ್ಟು ಎಷ್ಟು ಶ್ಲೋಕಗಳಿವೆ ಎಂಬುದೂ ಗೊತ್ತಿರದ ಕೆಲವೇ ಕೆಲವು ಶ್ಲೋಕಗಳನ್ನು ಯೋಗ ತರಗತಿಗಳಲ್ಲಿ, ಶ್ರೀ ವಿಷ್ಣು ಸಹಸ್ರನಾಮ ಫಲಶ್ರುತಿಯಲ್ಲಿ ಕೇಳಿದ್ದ ನಾನು L2 ಹಂತ ಮುಗಿಯುವಷ್ಟರಲ್ಲಿ 12,15,16 ಅಧ್ಯಾಯಗಳನ್ನು ಕಂಠಪಾಠ ಮಾಡಿ ಪರೀಕ್ಷೆಗೆ ಸಜ್ಜಾದೆ. ಕಂಠಪಾಠ ಮಾಡುವುದೆಂದರೆ ಅದೊಂದು ತೆರನಾದ ವ್ರತ, ಧ್ಯಾನವೆಂದರೆ ಅತಿಶಯೋಕ್ತಿಯಲ್ಲ. ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಶ್ಲೋಕಗಳದೇ ನಿರಂತರ ಪಠಣ, ಸುಲಭದಲ್ಲಿ ನೆನಪುಳಿಯಲು ಬರೆದು ಕಲಿಯುವುದು, ಬರೆದದ್ದನ್ನು ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಓದುವುದು, ಮನೆಯ ಕೆಲಸಗಳನ್ನು ಮಾಡುತ್ತಾ ಸುವರ್ಣ ಕಾಕಿಯವರ ಆಡಿಯೋ ಕೇಳುವುದು, ಅರ್ಥ ವಿವೇಚನೆಗಳಲ್ಲಿ ಅರ್ಥ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವುದು ಹೀಗೆ ನಿರಂತರ ಪಠಣ ಮತ್ತು ಅಧ್ಯಯನ. ಇದು ನನ್ನನ್ನು ನನ್ನ ಶಾಲಾ ದಿನಗಳಿಗೆ ಕೊಂಡೊಯ್ದಿತ್ತು. ಆಗ ಕಂಠಸ್ಥೀಕರಣ ತರಗತಿಗಳಿರಲಿಲ್ಲ. ಈಗಾದರೆ ತರಗತಿಗಳಿವೆ. ಅವುಗಳೂ ಬಹು ಉಪಯುಕ್ತವಾಗಿವೆ. ಅಲ್ಲದೆ ಪ್ರತಿ ಪರೀಕ್ಷೆಗೆ ನಮ್ಮ ತಯಾರಿಯನ್ನು ನಾವೇ ಪರೀಕ್ಷಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ವಿಶೇಷ ಅಭ್ಯಾಸ app ಮೊದಲಿಂದಲೂ ಲಭ್ಯವಿದ್ದು ನಿರಂತರ ಅಭ್ಯಾಸಕ್ಕೆ ಸಹಕಾರಿಯಾಗಿದೆ.

ಜಿಜ್ಞಾಸು ಪರೀಕ್ಷೆಗೆ ಎರಡು ದಿನಗಳ ಮೊದಲು ನನ್ನ ಗುರುಗಳಾಗಿದ್ದ ಶ್ರುತಿ ನಾಯಕ್ ಅವರು ಒಂದು ನಕಲು ಪರೀಕ್ಷೆ ನಡೆಸಿ ನಮ್ಮ ತರಗತಿಯ ಪರೀಕ್ಷಾರ್ಥಿಗಳನ್ನು ಹುರಿದುಂಬಿಸಿದರು. ಅಂತೆಯೇ ಮೊದಲ ಹಂತದ ಪರೀಕ್ಷೆಯಾದ ಜಿಜ್ಞಾಸುವು ಬಹಳ ಸುಲಲಿತವಾಗಿ ನಡೆಯಿತು, ಅತ್ಯುತ್ತಮ ಅಂಕಗಳೂ ಬಂದವು.

೭೦ ವರ್ಷದ ಹಿರಿಯರೂ ಐದಾರು ವರ್ಷಗಳ ಪುಟಾಣಿಗಳೂ ಒಟ್ಟಿಗೇ ಪರೀಕ್ಷೆ ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಭಗವದ್ಗೀತೆ ಕಲಿಕೆಯ ಮತ್ತೊಂದು ಮಜಲಾದ ಪರೀಕ್ಷೆ ಎಂಬ ಸುಂದರ ಉದ್ಯಾನದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀ ಕೃಷ್ಣನೊಡನೆ ಸದಾ ನೆಲೆಸುವ ಆಸೆಯಿಂದ ಮುಂದೆ ಸಾಗಿದೆವು. ಆ ಸಮಯದಲ್ಲಿ L1 ಪ್ರಶಿಕ್ಷಕಿಯಾಗಿ ಸೇವೆ ನೀಡುವ ಅವಕಾಶವೂ ಬಂದೊದಗಿದ್ದು ಶ್ರೀ ಕೃಷ್ಣನ ಆಶೀರ್ವಾದವೇ ಹೌದು.

ಒಂದು ಪರೀಕ್ಷೆ ಮುಗಿಸಿ ಜಯಶಾಲಿಗಳಾದ ನಂತರ ಮತ್ತೊಂದು ಪರೀಕ್ಷೆಯಾದ ಪಾಠಕವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು ಗುರುಗಳ ಸತತ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹವಿದ್ದೇ ಇತ್ತು. ಜೊತೆಗೆ ನನ್ನೊಳಗೂ ಒಂದು ಅಲೌಕಿಕ, ಪದಗಳಲ್ಲಿ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಲಾಗದ ತುಡಿತ ಹುಟ್ಟಿತು. ಆದಷ್ಟು ಬೇಗ ಇನ್ನೂ ಮೂರು ಅಧ್ಯಾಯಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಒಟ್ಟು ಆರು ಆಧ್ಯಾಯಗಳ ಕಂಠಸ್ಥೀಕರಣ ಪರೀಕ್ಷೆಯನ್ನು ಮುಂದಿನ ಎರಡು ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ತೆಗೆದುಕೊಂಡಾಗ ಹೇಳಲಾಗದ ಖುಷಿ. ಆರು ಅಧ್ಯಾಯಗಳ ಪಠಣ ನಿತ್ಯವೂ ಮನೆಯೊಳಗೆ ಮೊಳಗಿ ಮನೆಯಲ್ಲೂ ಧನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಯ ಸಂಚಾರ. ಆ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ನಾನು L1 ಮತ್ತು L2 ತರಗತಿಗಳಿಗೆ ಪ್ರಶಿಕ್ಷಕಿಯೂ ಆಗಿದ್ದು ನಿರಂತರ ಕಲಿಕೆ, ಅಭ್ಯಾಸಗಳಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿದ್ದರಿಂದ ಶ್ರೀ ಕೃಷ್ಣ ಧ್ಯಾನವೊಂದು ಬಿಟ್ಟು ಬೇರೇನೂ ಇಲ್ಲ ಎಂಬ ಭಾವ. ಹೀಗೆಯೇ ಮುಂದುವರಿದು ಪಥಿಕ ಮತ್ತು ಗೀತಾವ್ರತಿ ಪರೀಕ್ಷೆ ಮುಗಿಸಿದಾಗ ಹೃದಯದ ತುಂಬ ಶ್ರೀ ಕೃಷ್ಣನೇ,, ಅವನೇ ಎದುರು ನಿಂತಂತೆ ಗೀತೆಯನ್ನು ಹೇಳಿದಂತೆ, ನಾನು ವಿನೀತಳಾಗಿ ಕೇಳಿದಂತೆ ಅನುಭವ, ಗುರೂಜಿಗಳ ಗೀತೆ ಕಲಿಯಿರಿ, ಕಲಿಸಿರಿ, ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಅಳವಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಿರಿ ಎಂಬ ಧ್ಯೇಯವಾಕ್ಯವನ್ನು ಅನುಸರಿಸುವ ನಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಸತತ ಪ್ರಯತ್ನ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದೇನೆ. ಗೀತಾಮೃತವು ಮನೆ ಮನೆಯನ್ನೂ ತಲುಪಲಿ, ಮನಸ್ಸುಗಳನ್ನು ಬೆಸೆಯಲಿ, ಬೆಳಗಲಿ.

Kannada # 13 Savitha Kamat

ನಾನು ಸವಿತಾ ಕಾಮತ್. ನನಗೆ ಈಗ 65 ವರ್ಷ. ಗೀತಾ ಪರಿವಾರ ಕ್ಕೆ ಜೂನ್ 23ರಲ್ಲಿ ಸೇರಿದೆ.

ನನಗೆ ಗೀತಾ ಆನ್ ಲೈನ್ ತರಗತಿಯ ವಿಷಯ ನನ್ನ ಅತ್ತಿಗೆ ಡಾ. ಆಶಾ ಹೆಗ್ಡೆಯವರಿಂದ ತಿಳಿದು ಬಂತು.ಅವರು ಸಾಧಕರಾಗಿ ನಾಲ್ಕು ಹಂತಗಳನ್ನು ಮುಗಿಸಿ ತಾಂತ್ರಿಕ ಸೇವೆಯನ್ನು ಕೊಡುತ್ತಿದ್ದರು. ಅವರ ಪ್ರೇರಣೆಯಿಂದ ನಾನು ಗೀತಾ ಪರಿವಾರಕ್ಕೆ ಸೇರಿದೆ.

ನನಗೆ ಬಾಲ್ಯದಿಂದಲೇ ಪುಸ್ತಕಗಳನ್ನು ಓದುವ ಹವ್ಯಾಸ ಇತ್ತು. ಆದರೆ ಅನುಭವ ಲೇಖನ ಇದೇ ಮೊದಲಬಾರಿ ಬರೆಯುವ ಪ್ರಯತ್ನ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದೇನೆ.

ನಾನು ವಿವಾಹದ ಬಳಿಕ ಇಷ್ಟು ವರ್ಷದ ನಂತರ ಗೀತಾತರಗತಿಗೆ ಸೇರಿದಾಗ ನನಗೆ ಬಹಳ ಸಂಕೋಚವಿತ್ತು. ಆದರೆ ಸೇರಿದ ಮೇಲೆ ಇಷ್ಟೆಲ್ಲ ಸರಳವಾಗಿ ಸುಲಭವಾಗಿ ಕಲಿಸಲು, ಕಲಿಯಲು ಸಾಧ್ಯವೇ? ಎನಿಸಿತು. ನಿಜವಾಗಿ ಗೀತಾಪರಿವಾರವು ನನ್ನಂತಹ ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಗೀತೆಯನ್ನು ಕಲಿಯಲು ಪ್ರೇರಣೆಯಾಗಿದೆ.

ಗೀತಾ ಪರಿವಾರದ ಪ್ರಶಿಕ್ಷಕ ಪ್ರಶಿಕ್ಷಕಿಯರು ಬಹು ಉತ್ತಮ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಶ್ಲೋಕವನ್ನು ತಿದ್ದಿ ಉಚ್ಚಾರವನ್ನು ಸರಿಯಾದ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಕಲಿಸುತ್ತಾರೆ. ನಮ್ಮಿಂದಲೂ ಹೇಳಿಸಿ ತಾಳ್ಮೆಯಿಂದ ತಿದ್ದುತ್ತಾರೆ. ವಾರದ ಐದು ದಿನ ಬೆಳಗಿನಿಂದ ರಾತ್ರಿಯ ತನಕ ನಮಗೆ ಬೇಕಾದ ಸಮಯಕ್ಕೆ ತರಗತಿಗಳನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಬೇಕಾದರೆ ಸಮಯವನ್ನು ನಮ್ಮ ಅಗತ್ಯಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ ಬದಲಿಸಲೂಬಹುದು. ಸೇರಿದ ನಂತರ ವಿವಿಧ ವಿಭಾಗಗಳಲ್ಲಿ ಸೇವೆ ಸಲ್ಲಿಸುವ ಅವಕಾಶವೂ ಇದೆ.

ನನಗೆ ಮೊದಲು ಭಗವದ್ಗೀತೆಯ ಪ್ರಚಲಿತದಲ್ಲಿದ್ದ 10,12 ಶ್ಲೋಕವಷ್ಟೇ ನನಗೆ ತಿಳಿದಿತ್ತು. ನಮ್ಮ ಧರ್ಮ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ನಾವು ಸರಿಯಾಗಿ ತಿಳಿದಿಲ್ಲ ಎಂಬ ಬೇಸರವಿತ್ತು. ಈಗ ಏನೂ ಪ್ರಯಾಸವಿಲ್ಲದೆ ಮನೆಯಿಂದಲೇ ಕಲಿಯಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗಿಸಿದ ಗೀತಾ ಪರಿವಾರಕ್ಕೆ ನನ್ನ ಹೃದಯಪೂರ್ವಕ ಧನ್ಯವಾದಗಳು. ಕೇವಲ ಶ್ಲೋಕವನ್ನಷ್ಟೇ ಕಲಿಸದೆ ತರಗತಿಯ ನಂತರ ಶ್ಲೋಕದ ಆಡಿಯೋ, ಅರ್ಥ ಹಾಗೂ ಅಧ್ಯಾಯದ ಸೋಲೋ, ಅನುಪಠಣ ಇತ್ಯಾದಿಗಳನ್ನು ಸಾಧಕರ ಗುಂಪಿಗೆ ಕಳುಹಿಸುತ್ತಾರೆ. ಮತ್ತು ವಾರಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ ಅರ್ಥ ವಿವೇಚನ,ವ್ಯಾಕರಣ ಮೊದಲಾದ ವಿಷಯವನ್ನು ತಜ್ಞರಿಂದ ತಿಳಿಸಲಾಗುತ್ತದೆ.

ನಾನು ಸಾಧಕಿಯಾಗಿ 4 ಹಂತಗಳನ್ನು ಮುಗಿಸಿ, ಪಥಿಕ ಪರೀಕ್ಷೆಯನ್ನು ಮುಗಿಸಿದ್ದೇನೆ.

ಹಾಗೂ ತಾಂತ್ರಿಕ ಸೇವೆಯ ತರಬೇತಿಗೆ ಸೇರಿದಾಗ, ಮೊಬೈಲ್ ನಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚಿನ ಪರಿಣತಿ ಇಲ್ಲದ ನನಗೆ ತಾಂತ್ರಿಕ ತಜ್ಞರು ತಾಳ್ಮೆಯಿಂದ ತರಬೇತಿ ನೀಡಿದ ರಿಂದ ಈಗ ನಾನು ಲೆವೆಲ್-3ರಲ್ಲಿ ತಾಂತ್ರಿಕ ಸೇವೆಯನ್ನು ನೀಡುತ್ತಿದ್ದೇನೆ.

ಇದನ್ನೆಲ್ಲ ಸಾಧ್ಯವಾಗಿಸಿದ ಗೀತಾ ಪರಿವಾರ ಕ್ಕೆ, ಇದರ ಪ್ರಮುಖ ಪ.ಪೂ. ಸಂತ ಸ್ವಾಮಿ ಶ್ರೀ ಗೋವಿಂದದೇವ ಗಿರಿ ಜೀ ಹಾಗೂ ಡಾ. ಆಶು ಭಯ್ಯಾ ಗೋಯಲ್ ಇನ್ನಿತರ ಪ್ರಮುಖರಿಗೆ ನನ್ನ ಹೃತ್ಪೂರ್ವಕ ಪ್ರಣಾಮಗಳು. ಹಾಗೂ ಎಲ್ಲಾ ಗೀತಾಸೇವಕರಿಗೆ ಹೃತ್ಪೂರ್ವಕ ಅಭಿನಂದನೆಗಳು.

Hindi 14 नई पहचान Dr Vaishali Samant

जय श्रीकृष्ण

जीवन के हर पड़ाव पर हमे एक नई पहचान मिलती है। बचपन में इस परिवार के बच्चे, इस स्कूल के छात्र, बड़े होने पर यह व्यवसाय या नौकरी करने वाले, गृहस्थ जीवन में किसी बच्चे के माता पिता।

मेरे जीवन में भी अलग अलग समय पर ऐसे ही नई पहचान मिलती गई और वो मुझे आज भी अच्छी लगती है।

गीता परिवार में जुड़कर गीता सीख पाई आगे चलकर प्रशिक्षक और प्रचारक की सेवा करने का अवसर मिला। परम पूज्य स्वामीजी के आशीर्वाद से ऑफलाइन वर्ग चलाने का सुअवसर मिला श्रीकृष्ण कृपा से जिस गोकुलधाम कॉलोनी में रहती हु उसी कॉलोनी में गीता वर्ग के लिए जगह मिल गई। पिछले डेढ़ साल से ये वर्ग चल रहे है।

गीता परिवार में जुड़ने से पहले कॉलोनी के सभी जुड़वा बच्चों की मां ऐसे ही जानते थे। पर अब एक नई पहचान मिल गई गीता क्लास की ताई। भगवान तो सदा साथ थे और रहेंगे पर इस नई पहचान से उनके साथ होने का अनुभव होने लगा। इस सब के लिए गीता परिवार का बहुत बहुत धन्यवाद

Gujarati #15 Milind Mujumdar

Difficult Geeta made easy

કૃષિ અને ઋષિ સંસ્કૃતિના સુભગ સમન્વય સમા ભારતમાં પ્રાચીન યોગીઓની જ્ઞાનવાણી વેદોનું સ્વરૂપ પામી. વિશ્વના પ્રાચીનતમ તત્ત્ જ્ઞાનને લોકભોગ્ય બનાવવા ઉપનિષદનો ઉદય થયો. સમગ્ર ઉપનિષદોનો સાર ધર્મક્ષેત્ર એવા કુરુક્ષેત્રની યુદ્ધ ભૂમિ પર સાક્ષાત પરમાત્મા દ્વારા ભગવદ્ગીતાના સ્વરૂપે પ્રાપ્ત થયો. પરમાત્માના શ્રીમુખથી ઉદગારાયેલા શબ્દોને તદ્દન શાસ્ત્રોકત રીતે તાલીમ પામેલા શિક્ષકો દ્વારા

વહેતા કરવાનું ભગીરથ કાર્ય એટલે ગીતા પરિવાર દ્વારા આયોજિત કરાતાં વર્ગો! ગીતા પરિવારમાં સાધક તરીકે જોડાવાનું સદ્ભાગ્ય આમ તો લગભગ દોઢ વર્ષથી પ્રાપ્ત થયું. પ્રશિક્ષકો દ્વારા લેવાતા વર્ગોમાં માત્ર શ્લોકના ઉચ્ચારો જ નહીં પરંતુ વ્યાકરણનું પણ શિક્ષણ પ્રાપ્ત થાય છે.

' સ ' અને ' શ ' જેવા અક્ષરોના ઉચ્ચારો પર પણ ઝીણવટપૂર્વકનું માર્ગદર્શન આપવામાં આવે છે. ગીતાનું શિક્ષણ માત્ર ઉચ્ચારો પૂરતું જ સીમિત ન રહી જાય તે હેતુથી દર શનિ-રવિ તેના વિવેચનના સત્રો આયોજિત કરવામાં આવે છે. વિશ્લેષકો ગીતાના ગૂઢ,ગહન જ્ઞાનને રસાળ શૈલીમાં રજૂ કરે છે.સાધક તરીકે જોડાયા બાદ મને આ પ્રવચનોને આધારે લેખન કરવાની તક મળી. દરેક બાબતમાં માર્ગદર્શન અને મદદ તો ખરી જ. ધ્યાનાકર્ષક વાત તો એ છે કે આ તમામ પ્રવૃત્તિઓ નિઃશુલ્ક ચલાવવામાં આવે છે છતાં પણ ક્યાંય કોઈ કચાશ રહેતી નથી. મોટાભાગના કાર્યકરો સદેહે એકબીજાને મળ્યા હોતા નથી તેમ છતાં પણ એક આત્મીયતાનો ભાવ કેળવાય છે જેને માત્ર અને માત્ર શ્રીકૃષ્ણની કૃપા જ સમજવી રહી.

Gujarati # 16 Sujata Thakkar

Life changing Geeta

નાનપણથી ગીતાજી વાંચવાની તીવ્ર ઈચ્છા હતી અને વાંચતી પણ ખરી પણ શ્લોક નહીં, ફક્ત અર્થ જ વાંચતી કારણ કે શ્લોક સમજાતા નહીં!

પછી કોવિડ આવ્યો અને મન નિરાશામાં ડૂબી ગયું, સમય કેમ પસાર કરવો તે સમજાતું નહોતું.

થોડા વખતમાં જ ગીતા પરિવારની ગીતાના નવા વર્ગની જાહેરાત જોઇ! મન આનંદથી ભરાઇ ગયું! નાનપણની ગીતા શીખવાની ઇચ્છા અનાયાસે પૂરી થઇ ગઇ!

ગીતાજીના ચાર લેવલ પૂર્ણ કર્યા, ત્રીજું, ચોથું લેવલ ફરીથી કર્યું. હવે! જીવનમાં સૂનકાર વ્યાપી ગયો. ત્યાંતો વિવેચન લખવાની તક મળી જે હજી સુધી ચાલુ છે.

જીવનમાં ધૈર્ય અને શાંતિ પ્રાપ્ત થયા છે, દરેક વખતે વિવેચન સાંભળવાથી શ્લોકના જુદા-જુદા અર્થો સમજાય છે. ગીતા પરિવારનો આ ઉપકાર ભૂલી શકાય એવો નથી જેણે જીવન જીવવાની જડીબુટ્ટી આપી દીધી છે.

જય શ્રીકૃષ્ણ

Gujarati # 17 Jigisha Shah

Effect of Geeta on our life

ગીતાના પાનાઓમાં,

કૃષ્ણ અર્જુનના પ્રશ્નોના જવાબ આપે છે,

તે આપણાં જીવનના રહસ્યો પ્રગટ કરે છે.

તમારું કાર્ય કરો, પરિણામની ચિંતા ન કરો,

આ મહત્વનો ગીતાનો સંદેશ છે.

તે નિઃસ્વાર્થ કાર્યનો માર્ગ બતાવે છે,

ગીતા આપણને જીવનનો સાર સમજાવે છે.

ગીતાના શબ્દોમાં શક્તિ અને જ્ઞાન છે,

જીવનના દરેક પાસાને સમજવાનો માર્ગ છે,

કૃષ્ણના શબ્દોમાં પ્રેમ અને દયા છે,

ગીતા આપણને જીવનના સાચા માર્ગ પર ચાલવાનું સૂચન કરે છે.

માં ભગવદ્ગીતા અને તેના સંદેશનું આપણા જીવનમાં મહત્વ દર્શાવે છે. અને જો તમે તે જ સંદેશાઓ અપનાવીને તમારું જીવન જીવો છો, તો તમને આનંદ મળશે, જીવનમાં આવતી મુશ્કેલીઓ સામે લડવાની તાકાત મળશે,

શાંતિથી અને સમજદારીપૂર્વક તેમજ ધૈર્યથી જીવન કઇ રીતે જીવવું એ શીખવાનું મળશે!

મારા જીવનમાં સુધારો પણ આજે ગીતા પરિવાર સાથે જોડાઇ તેમજ ગીતાજીનું શ્લોક ઉચ્ચારણ શુદ્ધ અને વિવેચન લખવા માટે જે કાર્ય કરી રહ્યા છે તેમાં થયો. નાની-નાની વાર્તાઓથી પણ જીવનની મુશ્કેલી દૂર થઇ છે.

Gujarati #18 Ramesh Shejpal

Essence of Geeta

સર્વપ્રથમ લર્ન ગીતાના પ્રેરક પરમ પૂજ્ય ગોવિંદ દેવગિરિજી મહારાજના ચરણોમાં શત્ શત્ પ્રણામ સાથે હૃદય પૂર્વક આભાર કે લોકોને આટલી સરસ, ભવ્ય, દિવ્ય યાત્રા કરવાની તક પૂરી પાડી. હિન્દુ ધર્મના મહાનગ્રંથ શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતાનો ભારત માત્ર નહીં પરંતુ આખા વિશ્વના આબાલ – વૃદ્ધ સૌને પરિચય કરાવ્યો.

હું મારા સેવાકાળથી નિવૃત્ત થયા પછી યથા સમયે *ગીતા પરિવાર* સાથે જોડાયેલ અને તેના માટે ભગવાન શ્રીકૃષ્ણનો જ ખૂબ ખૂબ આભાર કે તેઓએ મને આ માટે પસંદ કર્યો. ભગવદ્ગીતાના પ્રવચનો સાંભળ્યા પછી હું જે ખાસ વસ્તુઓ શીખ્યો છું તે

1. પોતાનું કર્તવ્ય કર્મ સંપૂર્ણ શ્રેષ્ઠતા સાથે કરતા રહેવું, તેને કર્મ ફળ સાથે પ્રભુના ચરણોમાં અર્પણ કરતા રહેવું.
2. કોઈના પણ માટે મનમાં દ્વેષ, દ્વંદ્વ ભેદભાવ રાખવો નહીં. સમભાવ કેળવવો.
3. કોઈ પાસે કશી પણ અપેક્ષા રાખવી નહીં.
4. પ્રાપ્ય દરેક વસ્તુઓ માટે પરમાત્માના આભારી રહેવું.
5. ભૂતમાત્રમાં પરમાત્માનો વાસ છે. પરમાત્માને અન્ય કશે શોધવાની જરૂર નથી.
6. પરમાત્માની ઉપાસના સંપૂર્ણ શ્રદ્ધા સાથે કરીએ તો જ આત્મજ્ઞાન પ્રાપ્ત થાય.

Odia #19 Nirmal Kar

ମନର କୁରୁକ୍ଷେତ୍ର ଓ ଗୀତାର ଆଧୁନିକ ମାର୍ଗଦର୍ଶନ

ଭଗବଦ୍ଗୀତାର କୁରୁକ୍ଷେତ୍ର କେବଳ ଐତିହ୍ୟଗତ ଯୁଦ୍ଧଭୂମି ନୁହେଁ, ଏହା ମନୁଷ୍ୟର ମନ ପାଇଁ ଏକ ଶକ୍ତିଶାଳୀ *ଉପମା*। ଯେପରି ଅର୍ଜୁନ ଦୁଇ ସେନା ମଧ୍ୟରେ ଥିବା ସମୟରେ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ଓ ଭାବନା ମଧ୍ୟରେ ଯନ୍ତ୍ରଣା ଭୋଗ କରୁଥିଲେ, ଆମେ ମଧ୍ୟ ଆମର ମନରେ ବିରୋଧୀ ଚିନ୍ତା, ଆକାଙ୍କ୍ଷା ଓ ଦାୟିତ୍ୱର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେଉ। *ଠିକ୍ ଓ ଭୁଲ୍*, *ସାହସ ଓ ଭୟ*, *ଆସକ୍ତି ଓ ବିୟୋଗ* ଆଦିର ଯୁଦ୍ଧ ଦିନ ପ୍ରତିଦିନ ଆମ ମନରେ ନିରବଧି ଚାଲିଥାଏ। ଶ୍ରୀ କୃଷ୍ଣଙ୍କ ଅର୍ଜୁନ ପ୍ରତି ଦିଆଯାଇଥିବା ମାର୍ଗଦର୍ଶନ

ହେଉଛି *ଜ୍ଞାନ ଓ ସଚେତନତାର ଅନ୍ତର୍ନିହିତ ଶବ୍ଦ*, ଯାହା ଆମକୁ ଅନିଶ୍ଚିତତା ଠାରୁ ଉପରକୁ ଉଠି, ସଫଳତାର ସହିତ ଏବଂ ସ୍ପଷ୍ଟତା ସହିତ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାକୁ ପ୍ରେରିତ କରେ। ତେଣୁ ସତ୍ୟ କୁରୁକ୍ଷେତ୍ର ବାହାରେ ନୁହେଁ, ଏହା *ଆମ ମନ ଭିତରେ* ଅଛି, ଯେଉଁଠାରେ ଗୀତାର ଅମର ଶିକ୍ଷା ଦୈନନ୍ଦିନ ଆମକୁ ଜୀବନର ଯୁଦ୍ଧ ମଧ୍ୟରେ ଆମର ମାର୍ଗଦର୍ଶନ କରୁଛି।

ଗୀତା ପରିବାରଙ୍କ ଦୟାରୁ, ଆମେ ଏମିତି ଏକ ସମାଧାନ ପାଇଛୁଁ ଯାହା ଲକ୍ଷ-ଲକ୍ଷ ଲୋକଙ୍କୁ ସାହାଯ୍ୟ କରୁଛି। ସତ୍ୟଯୁଗରେ ଲୋକମାନେ ଦିବ୍ୟତା ସହିତ ଯୋଗଯୋଗ କରିବାକୁ ଗଭୀର ଧ୍ୟାନ କରୁଥିଲେ, କିନ୍ତୁ କଳିଯୁଗରେ ଆମେ ଏବେ ଆମ ଘରେ ବସି ମୋବାଇଲ୍ ଫୋନ୍ ମାଧ୍ୟମରେ ଭଗବାନଙ୍କୁ ଅନୁଭବ କରିପାରୁଛୁ। ଏହା କେତେ ଅଦ୍ଭୁତ ସତରେ !

Odia #20 Dilip Kumar Padhi

ପରିପ୍ରେକ୍ଷୀ :ଇତିହାସ ସବୁ ଘଟଣାର ସାକ୍ଷୀ ଯେମିତି କଳିଙ୍ଗ ଯୁଦ୍ଧ ଯୁଦ୍ଧର ଦୁଃନ୍ଦୁଭି କରାଳ ରୂପରେ ସମ୍ରାଟ ଅଶୋକଙ୍କ ସେନାକୁ କଳିଙ୍ଗ (ଓଡିଶା)ଆଡକୁ ନେଇ ଆସୁଥାଏ Iରାସ୍ତାରେ ଧଉଳି ପାହାଡ Iସ୍ୱଚ୍ଛ ଦୟା ନଦୀ କୁଳୁ କୁଳୁ ଛନ୍ଦରେ ବହି ଯାଉଥାଏ Iଆରପଟ ରେ କଳିଙ୍ଗ ରାଜଧାନୀ ଭୁବନେଶ୍ୱର(ଶିଶୁପାଳ ଗଡ) I ଅଶୋକଙ୍କୁ କଳିଙ୍ଗ ବିଜୟ କରିବାକୁ ହେବ I ପ୍ରଚାର ହେଲା କଳିଙ୍ଗ ରେ, ପରାଧୀନ ହୋଇଯିବୁ ଆମେ I ଯୁଦ୍ଧ ଅନୁଭବ ନଥିବା ସମସ୍ତ ଜନ ମାତୃଭୂମି ପ୍ରେମରେ ସାମାନ୍ୟ ରୁ ସାମାନ୍ୟ ପଦାର୍ଥ ଦା,କତୁରୀ,ଖୁରୁପି କୁ ଅସ୍ତ୍ର ଭାବରେ ଧରି ନଦୀ ଆରପଟରେ ହୁଙ୍କାର ଦେଇଥିଲେ I ଯୁଦ୍ଧ ର କରାଳତା ରେ ସ୍ୱଚ୍ଛ ଦୟାନଦୀ ର ପାଣି ଲାଲ ହୋଇ ବହି ଯାଇଥିଲା ସେତେବେଳେ I ସମ୍ରାଟ ଅଶୋକ ଯୁଦ୍ଧ ଜିତିଲେ, କିନ୍ତୁ କଳିଙ୍ଗବାସୀ ସ୍ୱାଭିମାନ ର ପ୍ରତୀକ ହୋଇ ରହିଗଲେ ଓ ଚଣ୍ଡାଶୋକ ରୁ ଧର୍ମାଶୋକ ହୋଇଗଲେ ଅଶୋକ I ଅସଂଖ୍ୟ ବଳିଦାନ ବୀରଙ୍କ ବୀର ଗାଥା ଏ I

ପ୍ରତିରୂପ : ଓଡିଶା ରେ ମୈତ୍ରୀ ମିଳନ ହେବ Iଏହାର ରୂପରେଖ କଣ ! କିପରି ସଂରଚନା ହେବ !କାରଣ ଓଡିଶା ରେ ଜର୍ନଗୀତା ର ସେମିତି ସାଧକ ଯୋଡି ହୋଇ ନଥିଲେ I କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ପରିଚାଳନା ସହ କେମିତି ବାର୍ତାଳାପ ହେବ !ନିର୍ଦେଶନାମା କଣ ହେବ !କିନ୍ତୁ ସବୁ ଧୀରେ ଧୀରେ ଉଜ୍ୱଳ ହୋଇ ଆସିଲା I ସ୍ୱଳ୍ପ ବ୍ୟକ୍ତି ରୁ ସହସ୍ର କର୍ମୀ ଏକାଠି ହେଲେ Iପ୍ରେକ୍ଷାଳୟ ଠୁ ଆରମ୍ଭକରି ସବୁ ଯୋଜନା ହୋଇଗଲା,କିନ୍ତୁ ସବୁଠୁ ବଡ ପ୍ରଶ୍ନ ଅର୍ଥ I ପରେ ସମସ୍ତଙ୍କୁ ଜଣାଇ ଦିଆଗଲା ସ୍ୱଳ୍ପ ଦାନରୁ ସମ୍ପୂର୍ଣ ରାଶି ଯୋଗାଡ଼ ହୋଇଗଲା :ଯେମିତି କଳିଙ୍ଗ ସେନା ତିଆରି ହୋଇଥିଲେ Iସ୍ୱଳ୍ପ ରୁ କେତେ ବଡ ପୁଞ୍ଜି ଓ ସଂସ୍ଥାନ ହୋଇ ପାରେ ତାର ଉଦାହରଣ ହୋଇଗଲା I ଏ ଯୋଜନା ପରିଚାଳନା ବେଳେ ପ. ପୁ .ଅIଶୁଭାଇ ଙ୍କ ସହଯୋଗ ଓ ଉପଦେଶ ସହଜ କରି ଦେଇ ଥିଲା ସମ୍ପୂର୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମକୁ I ମଞ୍ଚ ରେ ପୁ. ଅIଶୁଭାଇ ମୁଖ୍ୟ ଅତିଥି Iସୂଚୀ ଅନୁସାରେ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଚାଲିଲା I ଦୀକ୍ଷାନ୍ତ ବିବେଚନ ଖୁବ ମନଗ୍ରାହୀ ଥିଲା I ବିଷୟ ରଖିଲେ ୬; ନିଜେ ନିଜର ଚିତ୍ରଗୁପ୍ତ ହେବା ପାଇଁ Iବିଷୟ ଗୁଡିକ ଥିଲା – ଜ୍ଞIନ,ପରିବାର,ଅର୍ଥ, ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ,ଆଧାତ୍ମିକତା,ଅନ୍ୟାନ୍ୟ I ପ୍ରତେକ ବିଷୟ ବ୍ୟାଖା ଆଗ୍ରହ ବର୍ଦ୍ଧକ ଥିଲା Iଜ୍ଞIନ ଚର୍ଚାରେ ବେଦାନ୍ତ,ଅର୍ଥ ଚର୍ଚାରେ ଅର୍ଥଶାସ୍ତ୍ର,ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଚର୍ଚାରେ ଶରୀର ବିଜ୍ଞIନ,ପରିବାର -ସମାଜଶାସ୍ତ୍ର ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ରେ ସମସ୍ତ ବିଷୟ ଜ୍ଞIନ ପୁର୍ଣ ଥିଲା ଏହି ବିବେଚନ ରେ I

ଏହା ଏକ ବିଚିତ୍ର ଅନୁଭୂତି ; ମୈତ୍ରୀମିଳନ ଓ କଳିଙ୍ଗ ଯୁଦ୍ଧ । କହୁ ଥିଲା ସମସ୍ତେ ଯୁଦ୍ଧରତ ହେବା ଦରକାର,କର୍ମ ବିନା ଆସକ୍ତିରେ କରିବା ଦରକାର,ବିଜୟ ଯାହା ବି ହେଉ, ମାର୍ଗ ଦର୍ଶକ ଯୋଗେଶ ଶ୍ରୀ କୃଷ୍ଣ; ଜଗନ୍ନାଥ ଅଛନ୍ତି ।ଅସମ୍ଭାବ ଲାଗୁଥିବା ମୈତ୍ରୀମିଳନ ର ସୌହIଦ୍ର ସମ୍ପନ୍ନ ର ଅନୁଭବ ଏହା। ଜୟ ଜଗନ୍ନାଥ।

Odia #21 Pramod Kumar Mohanty

ଗୀତା ଯଜ୍ଞ –ଗୀତା ପରାୟଣ

"ଜର୍ନଗୀତା" ଏକ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ରୂପେ 2020 ମସିହା ଜୁନ ମାସ 23 ତାରିଖ ଦିନ "ଗୀତାପରିବାର" ରେ ଜନ୍ମ ଲାଭ କରିଥିଲା I ତାର ଏକ ବର୍ଷ ପରେ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ରେ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଆରମ୍ଭ କରIଯାଇଥିଲା I ଆମେ ଯେତେବେଳେ "ଜର୍ନଗୀତା" ର ପଞ୍ଚବର୍ଷ ପୁର୍ତ୍ତୀ ସମାରୋହ ପାଳନ କରୁଛେ ସେ ସମୟରେ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାର କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ 4 ବର୍ଷ ପୂରଣ କରି ବାଲ୍ୟ ଅବସ୍ଥା ରେ ରହିଅଛି I 2023 ମସିହା ରେ ଓଡିଶା ରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ପ୍ରଥମ ମୈତ୍ରୀ ମିଳନ ସମୟରେ ସୀମିତ ସଂଖ୍ୟକ ପ୍ରଶିକ୍ଷକ(ପ୍ରାୟ 15ଜଣ), ଟେକନିକ ସହାୟକ ଓ ସଂଯୋଜକ ମାନଙ୍କ ସହାୟତାରେ "ଅନଲାଇନ" କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ କରାଯାଉଥିଲା I ଅଧୁନା ପ୍ରାୟତଃ 70 ଜଣ ପ୍ରଶିକ୍ଷକ, 65ରୁ ଉର୍ଧ୍ୱ ଟେକନିକ ସହାୟକ, 20ରୁ ଉର୍ଧ୍ୱ ଦଳ ସଂଯୋଜକ ଓ 7ଜଣ ବ୍ୟାଚ ସଂଯୋଜକ ଙ୍କ ସହ ଆନୁସଙ୍ଗିକ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତା ଙ୍କୁ ନେଇ ପ୍ରାୟ 50 ସମୟ ସାରଣୀ ରେ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ କୁ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ଷମ କରାଯାଇ ପାରୁଅଛି I ଏହି ସ୍ୱଳ୍ପ ସମୟ ରେ "ଜର୍ନଗୀତା" ଜରିଆରେ ଅନଲାଇନ ଶ୍ରେଣୀ ମାଧ୍ୟମ ରେ ଗୀତା ର ପ୍ରଚାର ପ୍ରସାର ସଂଗେ ସଂଗେ "ଅଫଲାଇନ" କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ରେ ମଧ ଅଦ୍ଭୁତ ଉନ୍ନତି ଘଟିଛି I ଓଡ଼ିଶାର ବିଦ୍ୟାଳୟ ମାନଙ୍କରେ "ବାଳସଂସ୍କାର",ଗ୍ରାମ ତଥା ସହରାଞ୍ଚଳରେ "ଗୀତାଗ୍ରାମ" ଭଳି ନୂତନ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ କାର୍ଯ୍ୟକାରୀ କରିବା ସଂଗେ ସଂଗେ ଗୀତା ପରାୟଣ ମାଧ୍ୟମ ରେ ଶ୍ରୀମଦ ଭଗବଦ ଗୀତାର ପ୍ରଚାର ପ୍ରସାର ଏକ ସ୍ୱାଗତ ଯୋଗ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ହିସାବରେ ପରିଗଣିତ କରାଯାଉଛି I ହିନ୍ଦୁ ପରମ୍ପରା ରେ ଗୀତା ପାରାୟଣ ର ଭୂମିକା ପ୍ରଭୁ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ ଙ୍କ ନାମ ସଂକୀର୍ତନ ଓ ଭଜନ ର ଏକ ମୁଖ୍ୟ ଅଙ୍ଗ I ଶ୍ରୀଜଗନ୍ନାଥ ସଂସ୍କୃତି ର ମହାସମୁଦ୍ର ରେ କୋଟି କୋଟି ଭକ୍ତଙ୍କ ମାନସ ପଟ ରେ ଶ୍ରୀମଦ ଭଗବଦ ଗୀତା ର ପ୍ରଚାର ଗୀତା ପରିବାର ର କ୍ଷୁଦ୍ର ପ୍ରୟାସ ହେଲେ ମଧ ଏହା ନିଶ୍ଚିତ ଭାବେ ବୃହତ ଆକାର ଧାରଣ କରିବାକୁ ଯାଉଛି I ବିଗତ ଦିନ

ମାନଙ୍କରେ ଗୀତା ପାରାୟଣ ପ୍ରତି ବ୍ୟକ୍ତିବିଶେଷ ଙ୍କ ଅନୁରକ୍ତି ଓ ଭକ୍ତିଭାବ କୁ ପାଥେୟ କରି ଓଡିଶା ଗୀତା ପରିବାର ର ସହଯୋଗ ଏହାକୁ ଏକ ରୋଚକ ସ୍ୱରୂପ ଦେବାକୁ ଯାଉଛି I ଶତାଧିକ ସାଧାରଣ ଗୀତାପ୍ରେମୀ, ଗୀତାସେବକ ଓ ଗୀତା ସାଧକ ମାନଙ୍କ ଭକ୍ତି ଭାବ କୁ ନେଇ ଓଡିଶା ଗୀତା ପରିବାର ର ଏହି ଅଫଲାଇନ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ କ୍ରମବର୍ଦ୍ଧିଷ୍ଣୁ ବଟବୃକ୍ଷ ରେ ରୂପାନ୍ତରିତ ହେବ ଏହା ନିଃସନ୍ଦେହ I ଶ୍ରୀ ଜଗନ୍ନାଥ ମହାପ୍ରଭୁଙ୍କ କରୁଣା ଓ ପରମ ପୂଜ୍ୟ ଗୁରୁଜୀ ଶ୍ରୀ ଗୋବିନ୍ଦ ଦେବ ଗିରି ଜି ମହାରାଜ ଙ୍କ ଆଶୀର୍ବାଦ ଓଡିଶା ଗୀତା ପରିବାର କୁ ନୈତିକ ପ୍ରେରଣା ପ୍ରଦାନ କରିବ। ସଂଗେ ସଂଗେ ଏହାକୁ ପୂର୍ବ ଭାରତ ରେ ଗୀତା ପ୍ରଚାର ର ଆଲୋକ ବର୍ତିକା ରେ ପରିଣତ କରିବ I ବର୍ତମାନ କେତେକ ସହରାଂଚଳ ରେ ସମ୍ପୂର୍ଣ ଶ୍ରୀମଦ ଭଗବତ ଗୀତା ସମୂହ ପରାୟଣ ପରିଲକ୍ଷିତ ହେଉଛି I ଓଡିଶା ରେ କଟକ, ଭୁବନେଶ୍ୱର, ବାଲେଶ୍ୱର, ବ୍ରହ୍ମପୁର,କଳାହାଣ୍ଡି ଆଦି ସହରାଞ୍ଚଳ ରେ ଏହି କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଗୁରୁତ୍ୱ ବହନ କରିଅଛି I ଧାରାବାହିକ ଭାବେ ଏହି କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଓଡିଶା ର ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ସହରାଞ୍ଚଳ ଏବଂ ଗ୍ରାମାଞ୍ଚଳ କୁ ବ୍ୟାପିବ। ବିଶେଷ ସମୟ ସାପେକ୍ଷ ହେବନାହିଁ I ଏହି "ଅଫଲାଇନ" କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ମାଧ୍ୟମ ରେ ଗୀତାର ପ୍ରଚାର ପ୍ରସାର ଦାୟିତ୍ୱ ବହନ କରୁଥିବ। କର୍ମକର୍ତା ଧନ୍ୟବାଦ ର ପାତ୍ର I

Odia #22 Basistha Naik

କି ସୁନ୍ଦର ଗୀତାମୟ

କି ସୁନ୍ଦର ଆହା, କି ଆନନ୍ଦ ମୟ, ଏହି ବିଶାଳ ଗୀତା ପରିବାର...

ଧନ୍ୟ ମହାପ୍ରଭୁ, ମହିମା ତୁମର, ଅଟେ ଅନନ୍ତ ଅପାର...

ସୂର୍ଯ୍ୟ, ଚନ୍ଦ୍ର,ତାରା, ତୁମର ଆଜ୍ଞାରେ ବରଷନ୍ତି ଜ୍ଞାନର ରାଶି...

ତୁମରି ଗୀତାର ସ୍ୱର ଗୁଞ୍ଜାଇ ପ୍ରତି ପ୍ରଭାତରେ ହସଇ ମନ ଆନନ୍ଦେ ଭାସି...

ବିଶ୍ୱ ବାସୀ ଭାଇ, ଭଗିନୀର ହୃଦୟେ ଦେଇଛ ପ୍ରୀତି...

ତେଣୁ ମୁଁ ସଂସାରେ ରହିଛି ଆନନ୍ଦେ ସୁଖେ ଗୀତା ପଢ଼ି ନିତି...

ଦିଅ ଭକ୍ତି ପ୍ରଭୁ ହୃଦୟେ ମୋହର ବିରାଜ ନିତ୍ୟ ତହିଁରେ...

ସତ୍ୟ ପଥେ ରହି ତୁମର ଆଶ୍ରାରେ ଯାଉ ମୋ ଦିନ ମହୀରେ...

ଜଗତରେ ର୍ଲନଗୀତା ର କକ୍ଷା ଅଖଣ୍ଡ ଦୀପ ଭଳି ଜଳୁଛି ପ୍ରତିକ୍ଷଣେ...

ଯାହା ମୁଁ ପଢଇ ମାନସ ପଟରେ ତାହା ମୁଁ ଚିନ୍ତଇ ମନେ ମନେ...

ମୋ ପାଶେ ଅଛନ୍ତି ଦିବସ ରଜନୀ ଗୀତା ପ୍ରଭୁ ପରାତ୍ପର...

ଏକଥା ସୁମରି ହୃଦୟେ ତାହାଙ୍କୁ ପୂଜିବି ମୁଁ ନିରନ୍ତର...

ବଶିଷ୍ଠ ନାଏକ

କଳାହାଣ୍ଡି (ଡହଗାଁ କୋକସରା)

Odia #23 Pushpanjali Mishra

"ଗୀତା" – ଯନ୍ତ୍ରଣାର ଅନ୍ତ

ଆଜି ମୁଁ ଖୋଜୁଛି ଏକ ନିଆରା ପୃଥିବୀ

ଯେଉଁଠି ନଥିବ ମିଛ,

ଶୋକ, ଦୁଃଖ କି ଅଭାବ

ଥିବ ପ୍ରଭୁ ଦୟା, ସତ୍ୟ....

ପ୍ରେମର ଜାହ୍ନବୀ.....

ଆଜି ମୁଁ ଖୋଜୁଛି ଏକ

ନିଆରା ପୃଥିବୀ ....

ଜୀବନ ଦେଉଛି ଏଠି ଅନେକ ଯନ୍ତ୍ରଣା,

ସେ ଯନ୍ତ୍ରଣା କେବେ କା'କୁ

ଦେଖାଇ ହୁଏନା,

ଆଖି ଲୁହ ବୋହିଯାଏ ଓଠ ପାଖେ ଶୁଖି

ଆଜି ମୁଁ ଖୋଜୁଛି ଏକ ନିଆରା ପୃଥିବୀ..

କେବେ କେବେ ନିରବରେ,

କେବେ ଆସ ନିରୋଳାରେ,

କେବେ ଆସ ମୋ ସ୍ୱପ୍ନରେ,

କେବେ ମୋ ଆଖି ଲୁହରେ,

କୋହ ଭରା ଛାତି ତଳେ

ଉଙ୍କେ ତୁମ ଛବି,

ଆଜି ମୁଁ ଖୋଜୁଛି ଏକ ନିଆରା ପୃଥିବୀ..

ମୋହ ପରି ପାପୀ ଆଉ

ନାହିଁ ଏ ସଂସାରେ,

ଆଶା କରିଥିଲି ପାପ ଧୋଇଦେବ କାଳେ

ହୃଦୟ ପୁଷ୍ପାଞ୍ଜଳିରେ ପୟର ପୂଜିବି,

ଆଜି ମୁଁ ଖୋଜୁଛି ଏକ ନିଆରା ପୃଥିବୀ,

ତଥାପି ଆଶା ବାନ୍ଧିଛି

ମନ ମନ୍ଦିରରେ

ପାରି କରିଦେବ ନାଆ

ନାବ ସଳଖି ହେ,

ତୁମ 'ଗୀତା ' ଗାଇ ଗାଇ

ବାହୁଡି ମୁଁ ଯିବି,

ତୁମ ପଦ୍ମପାଦ ତଳେ ସ୍ଥାନ ମୁଁ ପାଇବି ll

ଆଜି ମୁଁ ଖୋଜୁଛି ଏକ ନିଆରା ପୃଥିବୀ

ଯେଉଁଠି ନଥିବ ମିଛ,

ଶୋକ, ଦୁଃଖ କି ଅଭାବ

ଥିବ ପ୍ରଭୁ ଦୟା,ସତ୍ୟ,

ପ୍ରେମର ଜାହ୍ନବୀ ...

Odia #24 Nalini Patnaik

ଗୁରୁକୃପା

ଜଗଦ୍ଗୁରୁ ଶ୍ରୀ କୃଷ୍ଣ ପରମାତ୍ମାଙ୍କ ଅପାର କୃପାରୁ ଆଜି ଆମେ ସଦଗୁରୁ ପରମପୂଜ୍ୟ ଶ୍ରୀ ଗୋବିନ୍ଦଦେବ ଗିରିଜୀ ମହାରାଜଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ଗୀତାପରିବାରର ସଦସ୍ୟ ଭାବେ ଯୋଗଦେଇ ଭଗବଦ୍ ଗୀତାର ଶୁଦ୍ଧ ଉଚ୍ଚାରଣ ସହିତ ଅର୍ଥ ବିବେଚନା, ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଗୀତା ପାରାୟଣ ଆଦି ଅଧିବେଶନରେ ଯୋଗଦେଇ ପରମ ଶାନ୍ତି ଲାଭକରୁଛୁ।

ଅନ୍ଲାଇନ୍ ଗୀତା ଶ୍ରେଣୀ, ଆଧ୍ୟାତ୍ମ୍ୟ ଓ ବିଜ୍ଞାନର ସମନ୍ୱୟରେ ଘରେ ଘରେ, ପଲ୍ଲୀରେ ପହଞ୍ଚିଛି। ଆବାଳବୃଦ୍ଧ ବନିତା ନିଜ ଚୟନୀତ ଭାଷା ଏବଂ ସମୟ ଅନୁଯାୟୀ ଏହାର ଅଂଶିଦାର ହୋଇପାରିଛନ୍ତି। ସମସ୍ତ ଗୀତାସେବୀ, ପ୍ରବଚକ, ପ୍ରଶିକ୍ଷକ ସେମାନଙ୍କ ସମୟ ସାଧ ଜୀବନକୁ ଗୀତାର ପ୍ରଚାର ପ୍ରସାର ନିମନ୍ତେ ଉତ୍ସର୍ଗ କରିଦେଇଛନ୍ତି।

ଚତୁର୍ଦ୍ଦଶ ଅଧ୍ୟାୟର ଶେଷ ଶ୍ଲୋକରେ ଭଗବାନ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ କହିଛନ୍ତି;

ବ୍ରହ୍ମଣୋ ହି ପ୍ରତିଷ୍ଠାହମମୃତ ସ୍ୟାବ୍ୟୟସ୍ୟ ଚ।
ଶାଶ୍ୱତସ୍ୟ ଚ ଧର୍ମସ୍ୟ ସୁଖସ୍ୈୟକାନ୍ତିକସ୍ୟ ଚ।।୨୭.୧୪।।

ଶ୍ଲୋକ ସୁନେଁ
୧୪.୨୭

ଏହାର ଆକ୍ଷରିକ ଅର୍ଥ ହେଉଛି – ମୁଁ ହିଁ ଅବିନାଶୀ ପରମବ୍ରହ୍ମ ତଥା ଶାଶ୍ୱତ ଧର୍ମର ଓ ଐକାନ୍ତିକ ସୁଖର ଆଶ୍ରୟ ଅଟେ। ଗୀତାଜ୍ଞାନର ଶକ୍ତି ଓ ଆଧାରରେ ଆମ ଭାରତ ବର୍ଷ ଯୁଗଯୁଗ ଧରି ବିଶ୍ୱଗୁରୁ ସାଜିଛି। ଆମ ସୈନିକ ମାନେ ଜଣେ ଜଣେ ଅର୍ଜୁନ ସମ ବୀରଯୋଦ୍ଧା, ଅଧର୍ମ ଓ ଅନ୍ୟାୟ ବିରୋଧରେ ଲଢ଼େଇକରି ପ୍ରମାଣିତ କରିଛନ୍ତି – ଧର୍ମ ଓ ନ୍ୟାୟର ଜୟ ହୁଏ ସଦାସର୍ବଦା।

ସର୍ବଧର୍ମାନ୍ପରିତ୍ୟଜ୍ୟ ମାମେକଂ ଶରଣଂ ବ୍ରଜ।
ଅହଂତ୍ୱା ସର୍ବପାପେଭ୍ୟୋ ମୋକ୍ଷୟିଷ୍ୟାମି ମା ଶୁଚଃ।।୬୬.୧୮।।

ଶ୍ଲୋକ ସୁନେଁ
୧୮.୬୬

ଅର୍ଥାତ୍ ପରମେଶ୍ୱରଙ୍କ ଶରଣାଗତ ହେଲେ ସମସ୍ତ ପାପରୁ ମୁକ୍ତି ମିଳେ। ଏହା ଆମ ଜୀବନରେ ଗ୍ରହଣୀୟ ହେଉ, ଏତିକି ପ୍ରାର୍ଥନା।

ଗୀତାସାଧିକା,

ନଳିନୀପ୍ରଭା ପଟ୍ଟନାୟକ

ଭୁବନେଶ୍ୱର

ପି.ଆର.ଏନ୍ – 849701

ମୋବାଇଲ ନମ୍ବର – 7325922123.

Odia #25 Raghunath Padhi

ଅନ୍ଧକାରରୁ ଆଲୋକକୁ : ଦିବ୍ୟ ଗୀତା ସହିତ ମୋର ଯାତ୍ରା

ମୋ ଜୀବନରେ ଏମିତି ଏକ ସମୟ ଥିଲା, ଯେଉଁଠାରେ ମୁଁ ଶାରୀରିକ, ଭାବନାତ୍ମକ ଏବଂ ଆତ୍ମିକ ଭାବେ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଭାବେ ଭାଙ୍ଗି ପଡ଼ିଥିଲି। ସବୁ କିଛି ଅର୍ଥହୀନ ଲାଗୁଥିଲା, ଏବଂ ମୁଁ ଆଗକୁ ବଢ଼ିବା ରାସ୍ତା ଦେଖିପାରୁନଥିଲି। ସେଇ ନିରାଶାର ଅନ୍ଧକାର ମୁହୂର୍ତ୍ତରେ ମୋ ପରିଚୟ ହେଲା ଦିବ୍ୟ ଗୀତା ସହିତ ଏବଂ ସେଇ ମୁହୂର୍ତ୍ତରୁ ହିଁ ମୋ ଜୀବନରେ ଗଭୀର ପରିବର୍ତ୍ତନର ଆରମ୍ଭ ହେଲା।

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବଦ୍ଗୀତା, ଯାହାକୁ ଜ୍ଞାନର ସାଗର ବୋଲି କୁହାଯାଏ, ମୋ ପାଇଁ ଏକ ଦିପ୍ତୀମାନ ପଥପ୍ରଦର୍ଶକ ହେଲା। ପ୍ରତ୍ୟେକ ଶ୍ଲୋକ ମନେ ହେଉଥିଲା ମୋ ଆତ୍ମା ସହିତ କଥାହେଉଛି, କେବଳ ଉତ୍ତର ନୁହେଁ ବରଂ ଜୀବନ ପାଇଁ ଏକ ନୂତନ ଦୃଷ୍ଟିକୋଣ ଦେଉଛି। ଯେଉଁଠି ମୁଁ ହାରି ଯାଇଥିଲି, ଭାଙ୍ଗି ପଡିଥିଲି, ସେହିଠାରୁ ହିଁ ମୁଁ ଦିଶା, ପ୍ରେରଣା ଏବଂ ଜୀବନର ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ ପାଇଲି — ବାହ୍ୟ ଜଗତରୁ ନୁହେଁ, ମୋର ଅନ୍ତଃକରଣରୁ।

ଆଜି ଯାଏଁ, ମୁଁ ଯେତିକି ଜାଣିଛି ତାହା ଏହି ଅପାର ଆଧାତ୍ମିକ ଜ୍ଞାନ ସାଗରରୁ ଗୋଟିଏ ବିନ୍ଦୁ କେବଳ ଅନୁଭବ କରିପାରିଛି, କିନ୍ତୁ ସେତିକି ବି ମୋତେ ଏପରି ଉପକୃତ କରିଛି, ଯାହାକୁ ମୁଁ କଦାଚିତ୍ ଭାବିପାରୁନଥିଲି। ଭଗବଦ୍ଗୀତା ମୋତେ କର୍ତ୍ତବ୍ୟର ମୂଲ୍ୟ, ଅନ୍ତଃଶାନ୍ତିର ଆବଶ୍ୟକତା ଓ ସମର୍ପଣର ଶକ୍ତି ବୁଝାଇଦେଲା।

ଆରମ୍ଭରେ, ମୋତେ ଗୀତା କିପରି ପଢିବି, କିପରି ଶ୍ଲୋକ ଉଚ୍ଚାରଣ କରିବି ବା ତାହାର ଅର୍ଥ କିପରି ବୁଝିବି — ଆଦି ସମ୍ପର୍କରେ କିଛି ଧାରଣା ନଥିଲା। କିନ୍ତୁ ମୁଁ ଏକା ଥିଲି ନୁହେଁ। ମୋତେ ଏମିତି ଜଣେ ଦୟାଳୁ ଗୀତା ପରିବାର ମିଳିଲେ, ଯେଉଁମାନେ ମୋ ହାତ ଧରି ଧୀରେ ଧୀରେ ଗୀତା ସହିତ ଯୋଡ଼ିଦେଲେ। ସେମାନଙ୍କର ସାହାଯ୍ୟ ଓ ମାର୍ଗଦର୍ଶନ, ମୋ ଓ ଏହି ପବିତ୍ର ଗ୍ରନ୍ଥ ମଧ୍ୟରେ ଏକ ସେତୁ ତିଆରି କରିଦେଲା।

ସେମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ, ମୋର ଆତ୍ମିକ ଭଗିନୀମାନେ ସବୁଠାରୁ ବଡ଼ ଆଶୀର୍ବାଦ ଥିଲେ। ସେମାନେ ମୋତେ କେବଳ ଶ୍ଲୋକ ଶିଖାଇ ନାହାନ୍ତି ବରଂ ଏହାକୁ ଜୀବନରେ କିପରି ଅନୁଷ୍ଠାନ କରିବା ଓ ବାସ୍ତବ ଅର୍ଥରେ ବଞ୍ଚିବା ଶିଖାଇଦେଲେ। ସେମାନଙ୍କର ପ୍ରେମ, କାରୁଣ୍ୟ ଓ ଅତୁଟ ଆସ୍ଥା ମୋ ଜୀବନର ଦୃଷ୍ଟିକୋଣକୁ ପରିବର୍ତ୍ତନ କରିଦେଲା — ବିଭ୍ରାନ୍ତିକୁ ସ୍ପଷ୍ଟତାରେ ଏବଂ⁴ ଦୁର୍ବଳତାକୁ ଶକ୍ତିରେ ପରିଣତ କଲା।

ଆଜି, ମୁଁ ଏମିତି ଏକ ପଥରେ ଚାଲୁଛି, ଯାହାକୁ ପୂର୍ବେ ଅସମ୍ଭବ ବୋଲି ଭାବିଥିଲି। ଯଦିଓ ଆଗକୁ ଯିବା ପାଇଁ ଆହୁରି ଅନେକ ଦୂର ବାକି ଅଛି, ମୁଁ ଦିବ୍ୟ ଗୀତା, ମୋର ଗୀତା ପରିବାର ଏବଂ ସେଇ ଆତ୍ମିକ ଭଗିନୀମାନଙ୍କ ପାଖରେ ଚିରକାଳ ଋଣୀ ଓ କୃତଜ୍ଞ।

Telugu # 26 Alluri Rama Raju,Hyderabad

పేరు: *అల్లూరి రామ రాజు*

ఊరు: *హైదరాబాదు*

వృత్తి: *ఉద్యోగి*

విద్యాభ్యాసము: *Ph. D.* (M. Sc. Roorkee, Ph.D. JNU New Delhi)

తెలిసిన భాషలు: *తెలుగు, హిందీ, ఆంగ్లము (చదవడము, రాయడము, మాట్లాడటము)*

గీతా పరివారముతో అనుబంధము:

సాధకునిగా: *అక్టోబరు 2021 నుంచి డిసెంబరు 2022 వరకు 4 స్థాయిల్లో మొత్తం 18 అధ్యాయములు పూర్తి అయినవి*

పరీక్షలలో ఉత్తీర్ణత: *గీతా జిజ్ఞాసు, గీతా పాఠక*

శిక్షకునిగా: *నవంబరు 2022 నుంచి శిక్షకునిగా సేవలందిస్తున్నాను. ప్రస్తుతము L4 లో శిక్షణ ఇస్తున్నాను*, *సృజనాత్మక రచనా విభాగములో వివేచన అనువాదము సేవను అందిస్తున్నాను*.

అనుభవము: (152 పదాలు)

భగవంతుని కృపాకటాక్షములతో ఈ ఆధ్యాత్మిక పథములో పయనించాలన్న సంకల్పము, సామాజిక మాధ్యమాలలో లభించిన గీతా పరివార్ వారి లెర్న గీతా అనే ఈ మహా యజ్ఞములో భాగము కావడానికి అంకురమైనది. పూజ్య గురువర్యులు అంకురిత దీక్షతో శుద్ధ ఉచ్చారణను నేర్పించడమే కాకుండా మరింత మందికి ఈ గీతామృతమును పంచడానికి ఇచ్చిన ప్రేరణ శిక్షకునిగా ముందుకు నడిపించడములో కీలకమైనది. పది మందికి శ్రీమద్భగవద్గీత పలకడము నేర్పించే క్రమములో స్వీయ ఉచ్చారణను మరింత మెరుగులు దిద్దుకోవడానికి శిక్షకుని పాత్ర చేసిన మేలు వెలకట్టలేనిది. ఉచ్చారణకు మెరుగులు దిద్దుకుంటూ ఈ అమృతభాండములో నిక్షిప్తమై ఉన్న అనేక నిగూఢ రహస్యములను అర్థము చేసుకోవాలన్న తపన మరియు పదిమందికి వాటిని తెలియచేయాలన్న కాంక్ష సృజనాత్మక రచనా విభాగములో వివేచన అనువాదము చేసే కార్యక్రమములో భాగస్వామిని చేసింది. లెర్న గీత కార్యక్రమమునకు దిశా నిర్దేశము చేస్తూ వివేచనలో సులభమైన ఉపమానముల ద్వారా ఈ జ్ఞానామృతమును పంచి పెడుతున్న మహానుభావులు ఆ భగవంతునికి ఎంతో ప్రియమైనవారనిపించింది. "మనసా వాచా కర్మణా" అన్న సూక్తిని అనుభవపూర్వకముగా తెలుసుకోవడానికి గీతా పరివార్ తో చేపట్టిన ఈ ప్రయాణము ఎంతో దోహదము చేసినది. గీతను చదవండి, చదివించండి, జీవితములో అన్వయించుకోండని పూజ్య గోవింద్ దేవ్ గిరీజీ మహారాజ్ గారిచ్చిన పిలుపు నన్ను ఎంతగానో ప్రభావితము చేసి ఈ ముక్తి మార్గములో కార్యోన్ముఖుడిని చేయడముతో పాటు సత్పురుషుల సాంగత్య భాగ్యము కలుగజేసింది. శ్రీమద్భగవద్గీత స్ఫూర్తిని మనసులో నిలుపుకొని సర్వమూ శ్రీ కృష్ణార్పణమస్తు.

Telugu # 27 Jyoti Ji

పరమాత్మ స్వరూపులందరికీ జై శ్రీ కృష్ణ అండి

గీతా పరివార్ తో నా అనుబంధం 20 23 జూలై బ్యాచ్ నుండి స్టార్ట్ అయింది మా అమ్మ గారి ఫ్రెండ్ కస్తూరి గారు వారి హస్బెండ్ పూర్ణయ్య గారు వారి ద్వారా నాకు ఈ గీతాపరి వారి గురించి తెలిసింది. వాళ్ల అమ్మాయి సుమతి తాను నేర్చుకుంటూ నాకు లింకు పంపారు.

అయితే ఆ లింక్ లో ఎలా జాయిన్ అవ్వాలో కూడా నాకు తెలియదు సమయానికి ఎవ్వరూ కూడా చెప్పడానికి అందుబాటులో లేరు. ఇంక చాన్స్ అయిపోయిందిలే నాకు జాయిన్ అవ్వటం కుదరదు అనుకున్నాను జాయిన్ అవ్వలేనందుకు బాధ పడ్డాను

అయితే ఒక రోజు సుమతి నాకు ఫోన్ చేసింది అప్పుడు నేను గీతాపరివాల్లో జాయిన్ అవ్వలేకపోయాను అన్నాను అప్పుడు తను అక్క రెండు రోజుల్లో కొత్త బ్యాచ్ స్టార్ట్ అవుతుంది దాంట్లో వెంటనే జాయిన్ అవ్వు అని లింక్ పెట్టింది అయితే ఇప్పుడు తెలుసున్న అబ్బాయి ఒకడు నాకు సహాయం చేసి నన్ను గీతాపరివాల్లో జాయిన్ చేశారు వాళ్లకి నా కృతజ్ఞతలు L1 పూర్తిచేసుకుని ఎల్ టు లో 16 వ అధ్యాయం అయిన వెంటనే కంఠస్థీకరణ చేసి జిజ్ఞాసు ఎగ్జామ్ రాసాను. ఎందుకంటే ట్రైనర్ అయి పోదామని. ఆడియోస్ పెట్టాను సెలెక్ట్ అయ్యాను కానీ ద్రోణానికి పిలిచారు కానీ ద్రావణాలో సెలెక్ట్ అవ్వలేదు ఎందుకంటే ద్రోణాలు ఎక్స్ప్లయిన్ చేయడానికి నాకు అస్సలు కుదరలేదు కంగారుగా అనిపించింది. ఇలా అయితే లాభం లేదని వెంటనే టి ఏ గా జాయిన్ అయ్యాను అప్పటినుంచి గీతా పరివార్ లో సేవ ఇవ్వటానికి కృష్ణయ్య అనుమతిని ఇచ్చాడు. సాధక్‌గా TAగా ఒక్కొక్క లెవెల్ పూర్తి చేసుకుంటూ ట్రైనర్ గా ట్రై చేసుకుంటూ ముందుకు వెళ్లాను కానీ నేను ఎల్ ఫోర్ లాస్ట్ లో ఉండగా నాకు ట్రైనర్ గా అవకాశం వచ్చింది. అంటే అప్పటికి నేను ఐదు సార్లు ట్రైనర్ గా సెలెక్ట్ కాలేక పోయాను కానీ పట్టువదలని విక్రమార్కుని లాగా ప్రయత్నిస్తూనే ఉన్నాను. నా ప్రయత్నానికి అన్ని రోజుల తర్వాత కృష్ణయ్య నాకు అవకాశం ఇచ్చాడు అదే మహా ప్రసాదంగా ఎంతో ఆనందంగా భక్తితో ఇష్టంగా ట్రైనర్‌సేవలోకి

అడుగు పెట్టాను నా ఈ ప్రయత్నానికి మా అమ్మ గారి సహాయం ఎంతగానో ఉంది తర్వాత ఎల్ టు ట్రైనర్గా, ఎల్ త్రీ ట్రైనర్ గా సేవలు అందించాను. అయితే ఏ ప్రయాణంలో ఎల్టు అయిపోయాక L3 అప్లికేషన్ పెట్టుకున్నాక మా అమ్మగారు స్వర్గస్తులైరి. ఆ బాధ తట్టుకోవటం నాకు చాలా కష్టంగా అనిపించింది అంత బాధలోనూ

ఎల్ త్రీ ట్రైనింగ్ తీసుకునిL3 త్రీ కి సెలెక్ట్ అయ్యాను. మా అమ్మగారు నన్ను కృష్ణయ్యకు అప్పచెప్పి తాను వెళ్ళిపోయారు. నేను ఆ బాధను మరిచిపోవటానికి క్లాసులు ఎక్కువగా తీసుకునే దాన్ని. ఇప్పుడు కూడాL3 ట్రైనర్ గానే ఉన్నాను. అయితే ఏమీ తెలియని నాకు అన్నీ గీతాపరివారవారే నేర్పించారు గీతా పరివార్లోకి వచ్చాక నేను చాలా చాలా నేర్చు కున్నాను. నాకు గీత నేర్పిన గురువులకు TA గా ట్రైనింగ్ ఇచ్చిన మెంటర్స్ కి

ద్రోణాలో ట్రైనింగ్ ఇచ్చిన మెంటర్స్ కి, నా ఈ ప్రయాణంలో ప్రోత్సహించి నన్ను ముందుకు తీసుకువెళ్లిన

ట్రైనర్స్ అందరికీ నా ధన్యవాదాలు

ఒక గురు స్థానంలో నిలబెట్టిన గీతాపరివారికి ఆ కృష్ణయ్యకు ఎప్పటికీ రుణపడి ఉంటాను. ప్రాణం ఉన్నంతవరకు గీతా పరివార్ లో సేవ ఇస్తూనే ఉంటాను ఇది నాకు చాలా చాలా ఆనందాన్ని కలిగిస్తుంది. ఇదే గీతా పరివార్ తో నా ప్రయాణం

జై శ్రీ కృష్ణ

Telugu #28 Shridhar ji

Lyrics of the poem presented in Anandotsav:

O! Maa Bhagavad Gita, Thou art the Sweetest Mother,

O! Maa Bhagavad Gita, Thou art the Divine Nectar,

May I drink Thee, day and night,

Merge in the Atma, the Divine Light.

O! Maa Bhagavad Gita, Thou art the Eternal Companion,

O! Maa Bhagavad Gita, Thou art Infinite Compassion,

May I sing Thee, day and night,

Merge in the Atma, the Divine Light.

O! Maa Bhagavad Gita, Thou art the Eternal Mother,

O! Maa Bhagavad Gita, Thou art all forgiving Mother,

May I serve Thee in Gita Pariwar,

Merge in the Lord, all Compassionate Giver.

किन शब्दों में व्यक्त करूँ मैं अपना आभार, हे गीता परिवार

परम श्रद्धेय गोविंद देव गिरी जी महाराज का गीतामृत समस्त जग में बरसाने का अनूठा अनुष्ठान

स्थान, काल, भाषाओं की बंधेज लांघ,

भक्ति ज्ञान की अविरल धारा का सर्वजन को करवाया

रसपान।

Telugu #29 Radhamma Guru

పరమాత్మ సన్నిధి

జై శ్రీ కృష్ణ

ప్రియమైన భక్త బాంధవులరా మానవ జన్మ సార్థకం చేసుకోవాలంటే మనం భగవంతుని మాటే మన బాటగా మార్చుకోవాలి ...

మరి భగవంతుని మాటంటే... అదే అవును, అదేనండి మన ప్రియమైన " భగవద్గీత " .

ఇది ఒక గ్రంధం కాదు, నీ జీవిత గ్రంథులను విడదీసి నీవెవరో తెలిపి తన కౌగిలిలో చేర్చుకునే గీతా మాత.

తల్లి పిల్లల శ్రేయస్సు కోరుకుతుంది .... భగవద్గీతా మాత నేరుగా భగవత్ సన్నిధిలో వుంచుతుంది కాని నీవు కర్మయోగి గా మారినప్పుడు మాత్రమే అంటే " కర్మణ్యేవాధికారస్తే మా ఫలేషు కదాచన।

మా కర్మఫలహేతుర్భూ:(ర్) మాతే సఙ్గో < స్త్వకర్మణి ॥
(2.47) పనిచేయటమే నీ వంతు... దాని పరిణామం ఏమిటి అని తలవకు... చేసే ప్రతి పని భగవంతుని పూజగా భావించు అంటే "నిష్కామకర్మ" చేయడం .

అగ్గిని తాకితే బొగ్గ ఎలా వస్తుందో అలాగే అచ్యుతుని తలిస్తే అంతా మంచే జరుగుతుంది.

శ్లోక సూచన ౨.౪౭

గీతను తాకాలన్నా, గీతను నేర్చుకోవాలన్నా ...మన " గీతా పరివార్ " తోనే సులభసాధ్యం.

ఈ యజ్ఞాన్ని తలపెట్టిన పరమ పూజ్య శ్రీ గురు గోవింద్ దేవ్ గిరి జి మహరాజ్ గారు పుణ్యాత్ములు

మరి వారి ఆశయాలను ఆకాశమంత ఎత్తుకు తీసుకువెళ్లిన

గీతా పరివార్ కు నా శతకోటి నమస్కారాలు..

ఇంకా ఎంతో చెప్పాలని మనసు తహ తహ లాడుతున్నది కాని

క్రమశిక్షణకు మారుపేరైన మన గీతా పరివార్ వారి పదనియమం, కాలనియమము అనుసరించి.. ఉంటామరి..

మళ్ళీ కలుద్దాం జై శ్రీ కృష్ణ

Telugu #30 Nagalakshmi koppuravuri 873800

విశ్వ వ్యాప్తంగా పంచ వర్షాలు పూర్తి చేసుకుని గురు గోవింద్ గురూజీ గారి ఆధ్వర్యంలో విజయవంతంగా ప్రతి ఇంట ధ్వనిస్తూ సాగిపోతున్న గీతాపరివారికి ఆ కృష్ణ పరమాత్మ ఆశీర్వాదాలు మరింత లభించి మరింత విజయపథంలో రాణించాలని మరెందరికో చేరువ కావాలని మనసారా కోరుకుంటూ సంస్థ విజయానికి అభినందనలు 2) అర్జునునికి రథసారధి అయిన ద్వారకాదీశ్వరుడైన ఆ కృష్ణ పరమాత్మ అర్జునునికి గీత సారం బోధించాడు గీతాపరివారికి గురు గోవింద్ గురూజీ భగవద్గీత రథానికి సారధిగా ప్రతి కరమున గీత ప్రతి ఇంట గీతను ధ్వనింప చేస్తున్నారు.3) మది మదిలో నిలవాల్సిన గీత ముద్దు ముద్దుగా మన చిన్నారి కృష్ణయ్య రాధమ్మలచే పలికించే ప్రేమ తత్వమే గీతా పరివార్ తత్వం అదే కృష్ణ పరమాత్మ ప్రేమ తత్వం. 4) సేవా దృక్పథంలో సహనం, సహకారం, ప్రేమ తత్వం, కాల పరిమితి, నాణ్యమైన శిక్షణతో, నాణ్యమైన నెట్వర్క్ సహాయంతో మనసు మనసును కలుపుతూ పరివార్ అన్న పేరుకి అర్థం తెలుపుతూ భయ్యా దీదీలుగా ఎన్నో బంధాలను అందించిన మన గీతా పరివార్ సంస్థకు కృతజ్ఞతాభినందనలు.5) వివేచనలతో గీతల్లోని భావార్థాలను వివరిస్తూ మనసులలోని మాలిన్యాలను తొలగించి శుద్ధమయ్యే విధంగా జీవితాలను తీర్చిదిద్దిన ప్రతిభగల గురువులందరికీ

మా పాదాభివందనాలు. 6) శుద్ధ ఉచ్చారణతో సులువైన పఠనా విధానంతో ఎందరి మదిలోనో కలగా నిలచిన గీత చదవాలని ఆకాంక్ష జీవిత వాంఛను అతి సులువుగా నేర్పించి మానసిక ఆనందాన్ని మానసిక ధైర్యాన్ని నింపి మనసులను గెలుచుకున్న గీతా పరివార్ గురువులందరికి నమస్కారాలతో మనసారా కృతజ్ఞతలు తెలియజేసుకుంటున్నాము

Telugu 31 Thota Prabhakar garu

జయహో గీతా పరివారం!

జయతు జయతు గీతా పరివారం!!

మానసిక వ్యైకల్యములొ కొట్టుమిట్టుడగ

వ్యైపరీత్యములు జీవితంలో వ ంటడగ !

సుకృతాల్ వ్యైత్రణిలో ఈదుచుండగ,

పరిష్కార వేదనలో సత్మత్మగుచుండగ!

చకరవకకపు నౌకలో చికూకొనగ,

చుకకానిలో దరికి చేరచు సకవంత్నగక

గీతా పరివకరము చ ంత్కు చేరగ!

సత్పురచషపల్ సకనిహిత్యము చేకూరగ !!

శుదధ ఉచారణల్తో ప్రేరణ ప ందగ!

మంతోత్మక పేభటవ మరమము త లియగ!!

మానసిక రచగమల్లు మట్ట మాయము చ ందగ!

సందేహాత్మక దేహము సంశుదధత్ ప ందగ!!

దినచరయల్ని దిదుబటట్టల్ ప ందగ!

దినదిన పేవృదుమాన వికకసము వ్ ంప ందగ!!

జయహో గీతా పరివారం!

జయతు జయతు గీతా పరివారం!!

మన ఈ జనమకు సకరథకము చేకూరగ!

అనునిత్యము ఆత్మ త్వము వ్ ంప ందగ !!

మృత్పయ త్తావాని సమూల్ంగక చేదించగ!

అమృత్తావని కడుపకరగ నిండుగ!!

అలౌకిక గీతా మకరందము గరరల్గ !

అనిరవచన్నయ ఆతామనందము ప ందగ!!

జయహో గీతా పరివారం!

జయతు జయతు గీతా పరివారం!!

విష్కదమల్ని విమల్త్వము ప ందగ!

సకంఖ్య కరమయోగముల్ సకవంత్న చేకూరుగ!!

జఞాన విజఞానముల్ వికకసము న ందగ !

ఆత్మ నిగరహముల్ అల్వడుచుండగ!

బేహమ సవరూపము సకక్షాత్కారమున ందగ !!

భగవద్ రహసయముల్ భవయముల్ై చేరగ!

భగవదురశనము మదిలో కదల్డగ!

భకివ పకరవశ్యముతో యుకివని ప ందగ!!

త్రిగుణముల్ తీరచత నుల్ త లియగ!

ద ైవీయ ల్షణముల్ రక్షణగక చేరగ!!

శ్రదాధసకువల్తో శ్రణాగత్రని వేడగ!

మోక్ష సకధనమున మారగము వ త్కగ!!

జయహో గీతా పరివారం!

జయతు జయతు గీతా పరివారం!!

సకధకుడిగక అమందానందము ప ందగ,

శిక్షకుడిగక హృదయారవిందము విల్లిల్లగ!

వివేచనానువకదముతో వివేకము వృదిధన ందగ,

గురచవుల్ కృపక కట్టక్షముల్ మ ండుగ చేరగ !

భగవదనుగరహముతో భవసకగరము దాట్ట

చరితారథముల్ై మన జనమల్ ధనయము ప ందగ !

జయహో గీతా పరివారం!

జయతు జయతు గీతా పరివారం!!

తోట పరభాకర్

గీతా సేవీ

Telugu #32 Sudhira

జై శ్రీ కృష్ణ. మొదటగా గీతా యజ్ఞం చేస్తున్న స్వామి గోవింద దేవ్ గిరి జీ గారికి, గీతా పరివార్ యాజమాన్యానికి పాదాభివందనములు. తరువాత గీతా పరివార్ ను నాకు పరిచయం చేసిన భార్గవి గారికి నా కృతజ్ఞతలు.

నా పైన ప్రభావం చూపించిన అధ్యాయం “దైవాసురసంపద్విభాగ యోగము ” . దానిలో దైవీ లక్షణాలు వివరిస్తూ ఖాళీగా ఉన్నప్పుడు మనం సమయం ఉన్నప్పుడు వృధాగా చేయకుండా ఏదో ఒక సేవ చేయవలెనని చెప్పడం జరిగింది. అప్పటి నుండి నేను సేవలోకి అడుగుపెట్టాను. నేను ఒక్కొక్క లెవల్ పైకి వస్తున్నప్పుడు, సేవ చేయుడం వలన నన్ను నేను బాగా మెరుగుపరచుకుంటున్నాను అని గ్రహించాను.

భగవద్గీత పారాయణం చేస్తూ అర్థ వివేచన చదవడం వలన మన జీవితం ఎలా గడపాలి అనే విషయం అర్థమవుతుంది. చిన్న చిన్న అడుగులు వేసుకుంటూ గీతామృత పానం సేవిస్తూ 3వ వసంతం జరుపుకుంటున్నాను. గీతా రసామృత ఝరిలో నేను తడుస్తూ ఆ అనుభూతులు కొత్త వారు కూడా రుచి చూడడానికి సహకరించడానికి ట్రైనరుగా సేవలందిస్తూ నా ఎదుగుదల సోపానాలు వేసుకుంటున్నాను. ఇంకా చేయవలసిన ప్రయాణం చాలా ఉంది. మొదటి మజిలీ ప్రయాణం కలిగిస్తున్న ఆనందానుభూతిని అనుభవిస్తూ ఇంకా ముందు మజిలీలో దివ్యానందాన్ని ఊహిస్తూ ఈ ప్రయాణాన్ని కొనసాగిస్తాను ఇలాంటి దివ్యావకాశాన్ని ఇచ్చిన స్వామి గోవింద దేవ్ గిరి జి గారికి, గీతా పరివార్ యాజమాన్యానికి, నా గురువులందరికి నా తోటి సేవకులకు వందనాలు.

సుధీర

Hindi 33*स्मृतिकुंज में विहार* Minal Dani

“गीता पर हाथ रखकर...” बालपन से चलचित्रों में देखा पर कभी विचार नहीं किया कि जिस ग्रंथ पर हाथ रखकर दुष्ट की कही बात भी सत्य मानी जाती है वह पवित्र ग्रंथ हाथ में लेकर पढ़ना चाहिए! “पढ़लिखकर कुछ बन जाओ” सबने कहा पर “सत्य का प्रमाण ‘गीता’ पढ़ो” किसीने कहना आवश्यक नहीं समझा। कदाचित वे भी पढ़ना चूक गए थें। बस सब अंधी दौड़ में थे।

जनवरी 21 में कोविड ने सबको बलात घर की चार दीवारों में सीमित कर दिया! मुझे भी कुछ करने को था नहीं, समय ही समय! किसीने कहा, जैसे आपकी 9वी कक्षा में पढ़ रही बिटिया झूम पर पढ़ रही है आप भी गीता सीख सकते हो। अद्भुत! पर ऑनलाइन फ्रॉड हुआ तो? इस कारण लेंड लाइन भरकर पंजीकरण किया, वह बैच छूट गया क्योंकि सूचनाएं वॉट्स एप पर आने वाली थीं। पुनः किसीने लिंक भेजी, इस बार साहस कर अपना वॉट्स एप नंबर दिया पर क्लास में 5वे दिन से जुड़ी, 12.11 श्लोक से आरंभ किया, पर एक नया रसप्रद विश्व मिला था। ‘गुंजन’ हेतु वीडियो रिकॉर्ड कर भेजा जिसे सुन आज भी हँसी आती है कि कितनी त्रुटि से भरा था!

परम श्रद्धेय स्वामीजी कहते हैं न कि जीवन संतुलित होना चाहिए, हम गीता साधकों के लिए सेवा आवश्यक है साथ में स्वाध्ययन भी अनिवार्य है। इसलिए अप्रैल 21 से आरंभ हुई मेरी दो समांतर यात्राएं, सेवा एवम् स्वाध्ययन! सेवा फॉर्म भरने के पश्चात् एक कॉल आया कि एडमिशन टीम का बैक एंड टास्क है। हां कह दिया पर जो कार्य कुछ मिनटों में हो सकता था उसे करने में कुछ घंटे लगा दिए। पर संयोजकजी ने बहुत ही धैर्य से सिखाया। कक्षा में सीखते समय तथा सेवा में ग्रहण होने लगी दैवी सम्पदा "धृति"! आगे मिला एडिंग टास्क, जिसमें बहुत आनंद आया! फिर तो क्या था! आगे एडिंग के लिए तो मानो फास्टेस्ट फिंगर फर्स्ट की होड लगी रहती, कब सूचना आए, कब करें! ! सेवा की "तत्परता" बढ़ने लगी फिर तो "जहां कम वहां हम" सूत्र अपना नवंबर तक टेक, ट्रेनर, जीसी, अनुवाद आदि अन्य सेवाएं भी आरम्भ कर दी। पर सेवा का केन्द्र "एडमिशन टीम" ही रहा! सेवाएं बढ़ती रही साथ ही चौदहवें अध्याय में वर्णित "सात्विक गुण" तथा सोलहवें अध्याय में वर्णनानुसार "दैवी सम्पदाओं" की वृद्धि होने लगीं। सेवा के दरमियान अनगिनत कर्मनिष्ठ गुणीजनो के साथ कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिससे आज के आधुनिक दृष्टी से उपयुक्त स्किल्स का वर्धन होता गया। ऑनलाइन में चल रहा यह लर्नगीता उपक्रम मेरे लिए तो मानो किसी मल्टीनेशनल कॉरपोरेट सा exposure देता रहा है।

दूसरी ओर स्वाध्ययन में गीताजी कंठस्थ कर सर्व परीक्षाएं देने का क्रम आरम्भ हुआ। एक के पश्चात् एक परीक्षा देते देते बारहवें अध्याय में वर्णित "कर्मयोग" की महत्ता साथ "भगवद्भक्ति" में श्रद्धा और दृढ होती रही है। श्लोकार्थ संथा रूप अमृत प्राप्त कर अब वास्तव में जीवन धन्य लगता है।

पञ्चवर्षपूर्ति के उपलक्ष में जब कुछ लिखना आरम्भ किया तो अचंभित रह गई कि कितनी अनुकम्पाप्राप्त हूं मैं! आज जब स्मृतिकुंज में झांक रही हूं तब विश्वास नहीं होता है कि मेरा संपूर्ण जीवन कितना बदल गया है! एक ओर लर्नगीता में श्रीमद्भगवद्गीता मेरे शेष जीवन का आधार बन गया, दूसरी ओर अयोध्या जी की पावन भूमि में आयोजित "तेजस कार्यकर्ता शिविर" तथा संगमनेर में आयोजित "राष्ट्रीय कार्यकर्ता शिविर" ने परम श्रद्धेय स्वामीजी के पंचसूत्री जीवन मूल्यों से परिचय करवाया जिन्हें हम सब गीता परिवार के सदस्यों को ऑफलाइन शिविरों, वर्गों के माध्यम से बालकों तक पहुंचाकर बालकों को संस्कारित करना है।

वास्तव में यह बात निश्चित है कि गीताजी के यह दो श्लोक हम सब गीतसेवियों पर बहुत सुंदरता से लागू होते हैं!

"न हि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति॥" 6.40
"अथवा योगिनमेव कुले भवति धीमताम्।
एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदि दृशम्॥" 6.42

श्लोक सुनें
६.४०, ६.४२

मिनल दाणी, बंगलुरु

Kannada #34 ಜೀವನ ಮೌಲ್ಯಗಳನ್ನು ಕಲಿಸಿದ ಪರಿವಾರ

ಮಂಜುನಾಥ ಡಿ. ಎಸ್. (125309)

ಶ್ರೀಮದ್ಭಗವದ್ಗೀತೆಯ ಪಠಣವನ್ನು ನಮಗೆ ಅನುಕೂಲಕರ ಸಮಯದಲ್ಲಿ, ನಮ್ಮ ಆಯ್ಕೆಯ ಭಾಷೆಯಲ್ಲಿ, ನಾವು ಇರುವೆಡೆಯಲ್ಲೇ ಕಲಿಸುತ್ತಿರುವ ಗೀತಾ ಪರಿವಾರವನ್ನು ಪರಿಚಯಿಸುವ ಲೇಖನ ಕನ್ನಡ ದಿನಪತ್ರಿಕೆಯೊಂದರಲ್ಲಿ ಪ್ರಕಟವಾಗಿತ್ತು. ಕೂಡಲೇ, ಏಪ್ರಿಲ್ 2021ರಲ್ಲಿ ಆರಂಭವಾಗುತ್ತಿದ್ದ ಮೊದಲ ಸ್ತರದ ತರಗತಿಗೆ ನೋಂದಾಯಿಸಿಕೊಂಡೆ. ಸುಮಾರು ಒಂದೂವರೆ ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ಗೀತಾ ಪರಿವಾರ ಗೀತೆಯ ಶುದ್ಧ ಉಚ್ಚಾರಣೆ ಮಾತ್ರವಲ್ಲದೆ ಸಮಯ ಪಾಲನೆ, ಸಹಯೋಗ, ಸಹಕಾರ, ಸಂಯಮ, ಸೇವೆ, ಸೌಜನ್ಯ ಹೀಗೆ ಹಲವಾರು ಉತ್ಕೃಷ್ಟ ಜೀವನ ಮೌಲ್ಯಗಳನ್ನೂ ಕಲಿಸಿತು. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ನಿಸ್ವಾರ್ಥ ಸೇವೆ ಅತ್ಯಂತ ಪ್ರಮುಖವಾದುದು ಎಂದು ನಾನು ಭಾವಿಸುವೆ. learngeeta.com ಅಶ್ವತ್ಥ ವೃಕ್ಷದಂತೆ ವಿಶಾಲವಾಗಿ ಬೆಳೆದು ವಿಶ್ವದಾದ್ಯಂತ ಪಸರಿಸಲು ಸ್ವಯಂಸೇವಕರ ನಿಸ್ವಾರ್ಥ ಸೇವೆಯೇ ಕಾರಣ ಎನ್ನುವುದು ಸರ್ವವೇದ್ಯ.

ಗೀತೆಯನ್ನು ಕಲಿಯಿರಿ, ಕಲಿಸಿರಿ, ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಅಳವಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಿರಿ ಎಂಬ ಧ್ಯೇಯವಾಕ್ಯ ಪಾಲನೆಗೆ ಶ್ರದ್ಧೆ ಹಾಗು ನಿರಂತರ ಅಭ್ಯಾಸ ಅತ್ಯಗತ್ಯ. ಗೀತಾ ಪರಿವಾರ ಇವಕ್ಕೆ ಪೂರಕವಾಗುವಂತೆ

ಕಾರ್ಯಕ್ರಮಗಳನ್ನು ರೂಪಿಸಿದೆ; ಇವುಗಳನ್ನು ರೂಢಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಪೂರಕವಾದ ಪರಿಸರವನ್ನು ಒದಗಿಸುತ್ತಿದೆ.

ಅರಸಿಕೊಂಡು ಬಂದಿರುವ ಈ ಸುವರ್ಣಾವಕಾಶವನ್ನು ಬಳಸಿಕೊಳ್ಳಿ. ಗೀತಾ ಪರಿವಾರ ಸೇರಿಕೊಳ್ಳಿ. ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಶ್ರೇಯಸ್ಸನ್ನು ಪಡೆದುಕೊಳ್ಳಿ.

learngeeta.com ಐದು ವರ್ಷಗಳ ಸಾರ್ಥಕ ಸೇವೆಯನ್ನು ಪೂರೈಸುತ್ತಿರುವ ಈ ಸುಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಗೀತಾ ಪರಿವಾರವನ್ನು ಮನಸಾರೆ ಅಭಿನಂದಿಸುವೆ. ಪರಿವಾರದ ಸರ್ವರಿಗೂ ಶಿರಬಾಗಿ ಕರಮುಗಿದು ನಮಿಸುವೆ.

English 35 When Time Stood Still by Ria Desai

In the quiet moment on Kurukshetra's plain,
where chariot wheels stood still in frozen time,
Arjuna's plea, a whisper through his pain: "Show
me Your form, in all its truth sublime."

The lotus-eyed One smiled with gentle grace,
"Behold what mortal eyes have never seen."
A thousand suns blazed forth from Krishna's
face, as worlds upon worlds unfurled like
living dreams.

Celestial beings trembled at the sight— The
Adityas, Vasus, Rudras stood in awe, while
Maruts and the Ashwins bathed in light That
stretched beyond the bounds of cosmic law.

Moving and unmoving, all contained Within that
vast, unfathomable form, where past and future
effortlessly reigned, and every birth and death
was there reborn.

Terrifying beauty, endless hands, A million eyes
that gazed through time and space, Mouths
devouring worlds like shifting sands, while
granting mercy with unbounded grace.

"O Gudakesha," spoke the Bhagavan Divine, "All
that exists rests here within My frame, The
starlit heavens and the ocean's brine, All
creatures bearing form, all without name."

Arjuna trembled, bowed his humbled head, His
mortal heart near breaking at the view, "Forgive
me, Bhagavan," with folded hands he pled, "For
knowing not the vastness that is You."

So too may we, in quiet moments find That
glimpse of glory hidden in plain sight, the cosmic
dance that leaves the soul refined, when inner
vision opens to the light.

For in each heart, that same vast wonder waits,
beyond all form, yet holding every form, where
time dissolves before eternal gates, And love
remains, unchanging through the storm.

-Ria Desai

English 36 KRISHNA by Dr Sarita Rao

The peacock feather dancing on your head,

Curly hair fluttering in the wind,

Your luminous eyes brimming with love,

A beautiful smile playing on your lips,

Oh! What joy to behold You, Krishna!!

My friend, My Saviour!

My Guide, My Mentor!

YOU called, I was drawn,

Just lifted off to a divine world

of Gita Mata,

It was enchanting, it was Supreme!

It was Bliss! All-encompassing!

Your presence in my life,

Has brought immense joy,

Sent me into raptures!

As I close my eyes,

And whisper YOUR name,

Eternal peace floods my being!

YOU, my KRISHNA,

The beginning, the End,

The Soul, the Breath,

The Infinite Bliss!

All my Salutations to You!

May this journey never end!!

English #37 KRISHNA: MY ETERNAL GUIDE by Rajeshwari Shetty

O Krishna, O Madhava,
Each stage of your life
Reveals a lesson,

beyond my mind's comprehension

Born in prison, carried to safety
Through the fiercest storm,
Teaching that tempests pass

when the mind is calm.

Putana's maya you unmasked,
Urging us to awaken Viveka Buddhi.

You lifted Govardhana with ease,
Proving that even a little faith can
move mountains.

Your lila's with the Gopi's
showed true love is beyond possession.

On the battlefield,
You handed us the pearls of liberation
By making Arjuna the nimittam.

And with your final breath,
Unveiled, all is transient.

Hindi # 38 जनम जनम की प्रार्थना by – प्रशांत शरद शेंबेकर

धरती-पुत्री का हाथ सम्भाले, जिस भूजि पर रिा चले।

लक्ष्य िन िं भरत भूजि का, सदा ियियकार करे॥

हो हनिुान-सा भाव हिारा, गीता-पथ पर चलने वाला।

करे जनरंतर यत्न सिजपित, हृदय शुद्ध िन रि बसे॥

भरत सि हो प्रि भावना, जबना रि ना कोई किाना।

भरत-भूजि के भारतवासी, गौरव का अहसास करे॥

हि अयोध्या भारतवासी, प्रभु चरणों के हैं अजभलाषी।

िनि िनि की दया प्राथिना, िाँ सीता स्वीकार करे॥

##########################

Marathi #39 विजय भाटे – मनोगत

पूर्वी मी एका मोठ्या कंपनीत वीस-पंचवीस वर्ष मोठ्या हुद्द्यांवर काम केलेले आहे. कामाव्यतिरिक्त मला माझ्या सहकाऱ्यांशी किंवा वरिष्ठांशी किंवा कनिष्ठांशी जास्त संभाषण करायची वेळ येतच नव्हती. घरामध्येही मी केवळ झोपण्यापुरताच असायचो असं म्हटलं तर ती अतिशयोक्ती होणार नाही कारण बहुतांश वेळ कामाच्या ठिकाणीच जात असे. त्यावेळी माझा मराठी आणि संस्कृत भाषांशी काहीही संबंध नव्हता आणि भारतीय तत्त्वज्ञानाशी तर अजिबातच संबंध नव्हता.

पुढे कामाच्या आत्यंतिक तणावापोटी मी व्यसनाधीन होत गेलो तेव्हा व्यसनातून बाहेर पडण्यासाठी आधी मी नोकरी सोडली आणि व्यसनमुक्ती केंद्रात काही काळ राहिलो. व्यसनमुक्ती केंद्रातच मला योगाची आवड लागली. व्यसनमुक्ती केंद्र आणि योगसाधना यामुळे मी गेली अठरा वर्षे व्यसनापासून दूर आहे.

योगाच्या निमित्ताने मला गीता वाचण्याचीही आवश्यकता वाटू लागली. यानिमित्ताने मी संस्कृत शिकू लागलो तरी मला माझा अभ्यास कमी पडतोय असे वाटू लागले.

अडीच वर्षांपूर्वी गीता परिवाराच्या गीता शिका, शिकवा आणि आचरणात आणा या कार्यक्रमाबद्दल मला माहिती मिळाली आणि मी त्या कार्यक्रमात सहभागी झालो. माझे चारही स्तर पूर्ण झालेले आहेत, तथापि पाठांतर करण्याची माझी प्रवृत्ती नसल्याने मी मनापासून पाठांतर करत नाही. गीता गीतासेवी होण्यासाठी मी विवेचन सारांश लेखन समुहामध्ये सहभागी झालो. या कामात मला अत्यंत रुची आली आहे. हे काम करायला प्रारंभ केल्यानंतर माझी मराठी आणि संस्कृत या भाषांमध्ये प्रगती झाली. माझ्या जीवनात योगामुळे जो सकारात्मक बदल होऊ लागला होता त्याला गती आली. माझी लोकांमध्ये मिळून मिसळून संघभावनेने काम करावयाची वृत्तीही वाढीस लागली.

तसेच वारंवार विवेचन ऐकून व सारांश लिहिताना अनायासे त्याचे चिंतन होऊ लागल्यामुळे आता मला गीतेतील तत्त्वज्ञान अधिकाधिक उमजू लागले. विशेषकरून त्रिगुणांच्या विवेचनांमुळे मला माझ्या व्यक्तीमत्वातील उणीवांची प्रकर्षाने जाणीव झाली, व्यसनाधीनतेचे मूळ कारण लक्षात आले व गीतेची अशीच सेवा करत राहूनच मी या मूळ कारणावर उपचार करू शकतो असा मला विश्वास आला आहे.

##########################

Marathi #40यज्ञ by मंदार बर्वे

लहान थोर जमले येथे

करण्या ज्ञानार्जन

गीतापरिवाराने दिधले

उत्तम त्यां साधन

गोविंद देव गिरी जी

महाराजांचे प्रेरणेतून

सिद्ध जाहले असंख्य सेवी

करण्या सेवार्पण

'हर कर गीता, हर घर गीता'

एकच ध्येयातून

हरी संदेशाचे चालते

इथे ज्ञानदान

बोट धरून चालण्या शिकविती

सर्वांना शिक्षक

तंत्रज्ञाने समान संधी

देती सहायक

ऱ्हस्व दीर्घ आघातांसह होते

लक्षपूर्व पठण

शंका निवारणास नसते

भाषेची अडचण

अर्थ सुलभ करून सांगती

गीता विशारद

जिज्ञासू अन् पाठक करती

श्लोक मुखोद्गत

श्लोक पुस्तिका, ध्वनिमुद्रीका

येती सहाय्यास

असंख्य हातांतून घडतो

सुलभ हा प्रवास

ज्ञानयज्ञ हा अविरत चालो

हाचि संतसंग

सर्वांभूती कल्याणातून

भेटो श्रीरंग

– प्रकाशदूत

Marathi #42लाभला प्रसाद गीताभक्तीचा

By **ज्योत्स्ना सदानंद रानडे.**

गेली चार वर्षे, डिसेंबर २०२० पासून मी गीता परिवाराशी जोडली गेले. संथा वर्गात शिकता शिकता शिकवत गेले. इतरही अनेक सेवा देण्याच्या संधी प्राप्त झाल्या. दर आठवड्यातील भगवद्गीतेवरील श्लोकांचे विवेचन आणि त्यावरील चिंतनाने स्वत:तील दुर्गुण कळो आले. प्रयत्नपूर्वक ते कमी करण्याचा प्रयत्न झाला आणि मनाला शांती प्राप्त होऊ लागली. भगवद्गीतेवर श्रद्धा दृढ होऊ लागली. आणि एक दिवस तिने हा सृजनरूपी काव्यप्रसाद मला दिला. तोच सर्व साधकांमध्ये वाटण्याच्या इच्छेने येथे प्रस्तुत करत आहे.

आरती भगवद्गीतेची

जय जय भगवद्गीते, नमन तुला शतकोटि.....

मंत्रमयी तू, सप्तशती तू, दीपस्तंभ तू, तत्त्वज्ञान तू

तूच गुरूमाऊली, नमन तुला शतकोटि.....

नित्य पठण तव आत्मानंदी, कंठी धरिता लाभे शक्ती

मनन चिंतन स्फूर्तीदायी, नमन तुला शतकोटि.....

अर्जुनासम विषाद होता, ज्ञानामृत हे हृदयी भरता

कठीण काळ हो निश्चित सरता, नमन तुला शतकोट.....

प्रेम भावे चरण आकळिता, द्वेषभाव तो अदृश्य होता

शांती वसतसे सदनी आमुच्या, नमन तुला शतकोटि.....

सुखदुःखांचे रंग क्षणिक ते, शीतोष्णापरि सहन करावे

आनंदाला जवळ करावे, नमन तुला शतकोटि.....

भयाचे न मग कारण उरते, मीरेचे हो बळही लाभते

कृष्णरूप व्हावेसे गमते, नमन तुला शतकोटि.....

अध्यात्माच्या वाटेवरले, इंद्रधनु हे नवभक्तीचे

प्रसन्न दर्शन ते स्वरूपाचे, नमन तुला शतकोटि.....

भावरंगी त्या कमानीतुनी, दृष्टी पडता क्षितिजावरती

पोचूया मुक्तीच्या महाद्वार, नमन तुला शतकोटि.....

Marathi #43 ही गीता अशी ... भगवंताची साद जशी by दीपा लीलावती विजयसिंग

ही गीता अशी ... भगवंताची साद जशी

देई बळ उमेदीचे ... जगायला

भगवंताचे ते सुर ... रमले श्लोकांत

जणू आले बासरीतून ... अन रुजले मनात

पान, फूल अन पक्षी... वाटती सारेच पावन

मन होते तल्लीन ... जेव्हा ऐकावे विवेचन

येई आनंद दाटून ... मन उधाण पाखरू

अन खुणावते मला ... दुःखापलीकडे

मिळते नित्य नवे ज्ञान ... जीवनाचे पारायण

जणू झाडतसे धूळ ... अज्ञानाची

वाटे कवेतहे घ्यावे ... सारे आभाळ साजिरे

नाते जपावे गोजिरे ... मनामनाचे

मी अडखळता, सावरे ... गीतेची साद ती निनावी

देते पंखांना उभारी ... प्रेम उधळोनी

##########################

Hindi # 44 मार्गशीर्ष माह, श्रीकृष्ण स्वयं श्रीमद्भगवद्गीता जी में उच्चारित करते हैं-

"मासानां मार्गशीर्षोऽहं नक्षत्राणां तथाभिजित्"

अर्थात मैं महीनों में मार्गशीर्ष और नक्षत्रों में अभिजित् हूँ।

इसी मार्गशीर्ष माह की मोक्षदा एकादशी अर्थात् आज के दिन, वर्तमान से लगभग 5161 वर्ष पूर्व श्रीभगवान ने अर्जुन को महाभारत के रण क्षेत्र में श्रीमद्भगवद्गीता जी का ज्ञान प्रदान किया था। यही वह दिन है जिस दिन अर्जुन ने श्रीभगवान द्वारा प्रदत्त दिव्य चक्षुओं के माध्यम से परमात्मा के विश्वरूप के भी दर्शन किए। चूँकि अन्यानेक ग्रन्थ जो महान वैदिक ऋषियों द्वारा, या तो नदियों के मुहाने या वनों में वृक्षों के नीचे अथवा आश्रमों में रचे गए परन्तु श्रीमद्भगवद्गीता जी एक मात्र ऐसा ग्रन्थ है जिसकी उत्पत्ति युद्ध क्षेत्र में हुई है अत: श्रीभगवान के श्रीमुखारबिन्द से उच्चारित यह विजय का शास्त्र भी है जिसके प्रादुर्भाव ने अर्जुन का विषाद हरण कर लिया तथा वे पुनः धर्म की स्थापना हेतु महाभारत के युद्ध में प्रवृत्त हुए। सम्पूर्ण विश्व का एक मात्र ऐसा ग्रन्थ जिसकी जयन्ती मनाई जाती है।

श्रीभगवान के मुखारबिन्द से ज्ञान की रसमयी शाश्वत धारा सम्पूर्ण विश्व के कल्याण हेतु प्रवाहित हुई। श्रीमद्भगवद्गीता जी मनुष्य को स्वयं का वास्तविक परिचय कराती हैं साथ ही श्रीभगवान से उसके शाश्वत एवं प्रेममय संबंध को उजागर करती हैं अत: उन्हें अम्बा अर्थात् माता की भी संज्ञा दी गई है।

श्रीमद्भगवद्गीता जी में अट्ठारह अध्याय एवं सात सौ श्लोक हैं, अविरल, प्रेममय श्रीभगवान द्वारा गाए गए सम्पूर्ण गीत को उसमें उपस्थित श्लोकों के गुणधर्मानुसार महर्षि वेदव्यास जी ने अध्यायबद्ध किया।

आदि शंकराचार्य जी भी श्रीमद्भगवद्गीता जी को एक महान ग्रंथ के रूप में स्थापित करते हैं। यह सम्पूर्ण मानवता का शास्त्र है।

"सर्व उपनिषदो गावो दोग्धा गोपाल नन्दनः।

पार्थःवत्स सुधीःभोक्ता दुग्धं गीता अम्रं महत्।।"

भावार्थ— सभी उपनिषद् गाय हैं और उनको दुहने वाला गोपाल नंदन श्री कृष्ण है।पार्थ अर्थात अर्जुन उस दूध रूपी सुधीर को भोगने वाला या पीने वाला है जो कि गीता का महान अमृत। जय श्रीकृष्ण।।

द्वारा-

"रुचि भटनागर"

,Hindi #45" गीता परिवार जुड़ने से जीवन में परिवर्तन"

मेरे मनोगत सोनाली गौड़

15 Dec 2020

मेरी बुआजी कि बेटी जो नागपुर में एक महाविद्यालय व्याख्याता है में उन्होंने मुझे लिंक भेजा। जैसे की विदित है कोविड COVID का समय चल रहा था सभी घर पर थें। चारों ओर नकारात्मक ऊर्जा फैली हुई थी। सभी ने अपनों को खोया था। मैंने भी मेरे देवर, भाभी, सहेलियों, और कुछ रिश्तेदारों को खोया। मन बड़ा ही उदास था समझ नहीं आ रहा था इस समय क्या करें, क्या नहीं करें, मन विचलित था। और उसे समय मुझे यह लिंक प्राप्त हुआ कुछ पता नहीं था क्या है? क्या होगा? कैसे होगा इसके द्वारा में गीता परिवार से जुड़ी। शुरुआत की दो-तीन दिन तो कुछ समझ नहीं आ रहा था। ट्रेनर दीदी से कहा दीदी मैं नहीं कर पाऊँगी क्योंकि कक्षा आठवीं के बाद कभी संस्कृत पढ़ी ही नहीं थी सही उच्चारण आते ही नहीं थे। ट्रेनर दीदी बार-बार उत्साहवर्धन करती कहती "बहुत अच्छा प्रयास है दीदी बस थोड़े से सुधार की आवश्यकता है आप ऑडियो सुनिए अभ्यास करें हो जाएगा" ऐसे करते-करते पूरे लेवल 4 तक गीता जी के श्लोक उच्चारण करना सीख ही लिया फिर आई परीक्षा देने की बारी गीता गुञ्जन, गीता पाठक की परीक्षा पास कर ली। तब पता ही नहीं था इतना

की सेवा कैसे दे सकते हैं। फार्म कैसे भरें।Lock Down भी समाप्त हो गया था सब अपने-अपने कार्य में व्यस्त हो गए थे।तब एक साधक के रूप में विष्णु सहस्त्रनाम,गोपी गीत, की कक्षा गीता चिन्तिका की कक्षा से जुड़ी रही एक दो बार आशु भैया से विवेचन सत्र में सुना कि आप फॉर्म भरे आपकी आवश्यकता होगी या कान्हा जी की कृपा होगी तो आपको सेवा का अवसर मिलेगा। इस प्रकार हिंदी रचनात्मक विभाग से जुड़ी, हिंदी लेखन बिल्कुल भी नहीं आता था सभी भैया, दीदीयों,(हिंदी रचनात्मक विभाग)ने अथक परिश्रम से मुझे बहुत अच्छी तरह से प्रशिक्षण दिया। सिखाया और आज में इतने आत्म विश्वास से लिख पाती हूँ। लगभग 10 माह से विवेचन लेखन की सेवा दे रही हूँ, तथा L1 में TA और GC की सेवा दे रही हूँ।

गीता परिवार में जुड़ने के बाद मेरे मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य में बहुत ही अच्छा परिवर्तन आया पहले मेरी यह स्थिति थी कि मैं हर महीने अस्पताल में एडमिट होती थी अल्सर की प्रॉब्लम थी। जब से गीता परिवार ज्वाइन किया है मुझे एक बार भी एडमिट नहीं होना पड़ा है।

आत्म विश्वास मैं वृद्धि हुई है। छोटी-छोटी बातों पर व्यथित, दुखी नहीं होती हूँ बुरा भी नहीं लगता है। क्रोध आना कम हुआ है। भक्ति में मन लगने लगा है। ध्यान करने का प्रयास कर रही हूँ। मौन रहना का प्रयास कर रही हूँ। मेरे कुछ पसन्दीदा श्लोक जिन्हें मुझे जीवन में बहुत कुछ सीखने का मिला है और जिन्हें मैंने जीवन में लाया है। उनके परिणाम भी मिले हैं।

क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।।2.63।।
अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्।।15.14।।
ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।
मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति।।15.7।।

श्लोक सुनें
२.६३, १५.७, १५.१४

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः

यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे

पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः।

शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।।2.7।।
मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः।
भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते।।17.16।।
उपरोक्त पांच श्लोकों को अपने जीवन में लाने से सकारात्मक परिणाम आए हैं।

श्लोक सुनें
२.७, १७.१६

गीता परिवार का ध्येय वाक्य “गीता पढ़े, पढ़ाये, जीवन में लायें”

##########################

Hindi #46 गीता -श्रीमती शरद शर्मा

अपने प्रण को राखिये कर मुरली गहि हाथ

मम सम दीन कहाँ कोऊ तुम सम दीना नाथ

पढ़ने गीता आये हम गोविन्द तुम्हरे द्वार

श्रीगुरु चरण कमल की वन्दना जोड़े दोनों हाथ

'गीता परिवार' के गठन से सिद्ध संकल्प महाराज

मनन चिन्तन पठन-पाठन गीता का गुणगान

पढ़ने गीता आये हम गोविन्द तुम्हरे द्वार

गीता पढ़ना हुआ है सम्भव जागृत धन्य भाग

सीखें और सिखायें गीता ज्ञान मूल आधार

हर घर गीता हर कर गीता जन-जन का उद्धार

पढ़ने गीता आये हम गोविन्द तुम्हरे द्वार

घर बैठे ही पढ़ना सम्भव अद्भुत उत्कृष्ट अपार

दुनिया भर से जुड़ गए, अवधि चालीस मिनट पर्याप्त

स्वाध्याय की यात्रा में है धैर्य शांति सर्वांगीण विकास

पढ़ने गीता आये हम गोविन्द तुम्हरे द्वार

आशीर्वाद है स्वामी जी का गोविन्द देव महाराज

संत ज्ञानेश्वर महाराज की कृपा है अपरम्पार

पढ़ने गीता आये हम गोविन्द तुम्हरे द्वार

#####₹#₹############

Hindi #47 गीता परिवार के प्रति अपार स्नेह और श्रद्धा व्यक्त करते हुए कुछ पंक्तियाँ समर्पित करती हूँ

सविता बत्रा

किन शब्दों में व्यक्त करूँ मैं अपना आभार, हे गीता परिवार

परम श्रद्धेय गोविंद देव गिरी जी महाराज का गीतामृत समस्त जग में बरसाने का अनूठा अनुष्ठान

स्थान, काल, भाषाओं की बंधेज लांघ,

भक्ति ज्ञान की अविरल धारा का सर्वजन को करवाया

रसपान।

किन शब्दों में व्यक्त करूँ मैं अपना आभार, हे गीता परिवार

ईश्वर की सच्ची वाणी, ईश्वर का ही परम ज्ञान,

मानव जन के उत्थान का एकल मार्ग, इस दुर्लभ ब्रह्मशास्त्र को कितनी सरलता से दिया सुलभ करवा।

किन शब्दों में व्यक्त करूँ मैं अपना आभार, हे गीता परिवार||

मुझसे कुछ लिया ही नहीं, पर मुझे कर दिया धनवान, ईश्वरीय प्रसाद का देकर वरदान

मैं कौन हूँ, मैं क्या हूँ, मैं क्यों हूँ – कई जन्मों की तपस्या के उपरांत भी, रहा जो बोध अनजान,

इस महायज्ञ में सम्मिलित हो, कितनों ने पा लिया ब्रह्म गीता की युक्ति से निर्वाण।

किन शब्दों में व्यक्त करूँ मैं अपना आभार, हे गीता परिवार

निस्वार्थ, निष्काम, सेवाभाव से परिचित करवाया,

लाखो सेवी जुड़ गये, कैसी पुण्य श्रृंखला को सजाया,

एक अनुपम सुंदर संसार रचाया।

किन शब्दों में व्यक्त करूँ मैं अपना आभार, हे गीता परिवार।

Hindi #48श्रीमद्भगवद्गीता by कल्पना श्रीवास्तव

श्रीमद्भगवद्गीता है

उपनिषदों का सार

तभी तो सकल संसार में

महिमा इसकी अपार ||

न उम्र की सीमा है

न शिक्षा है आधार

जो भी इसको पढ़ता है,

होता बेड़ा पार ||

जीवन के इस कुरुक्षेत्र में

हर कोई तो अर्जुन है

गीतामृतपान सबके लिए

औषधि समान गुण है ||

क्या करना है क्या न करना

यह याद हमें दिलाती है

कैसे पूजा? कैसे जप-तप?
विधियाँ हमें बताती है ||
यही एकमात्र ग्रन्थ है जिसकी
जयन्ती हम मनाते हैं
प्रतिदिन, प्रतिपल, हम सब मिलकर
गुणगान इसी का गाते हैं ||
धर्मयुद्ध में न कोई अपना
हर आसक्ति से दूर जाना है
स्वार्थ सिद्धि से ऊपर उठकर
राष्ट्र धर्म निभाना है ||
दोग्धा गोपाल नन्दन हैं तो
हम सब भी तो ग्वाले हैं

इसीलिए तो प्रभुजी हमको
इसका रसपान कराते हैं ||
पूरा हो सङ्कल्प स्वामीजी का
यह दायित्व हमें निभाना है
श्रीमद्भगवद्गीता को हर घर
हर कर तक पहुँचाना है ||
परमतत्त्व पर न कोई शङ्का
सबको यही समझाना है
श्रीमद्भगवद्गीता के चरणों में
श्रद्धा से शीश झुकाना है ||
##

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/bhaav-ek-bhaassaa-anek/bhaav-ek-bhaassaa-anek/

08

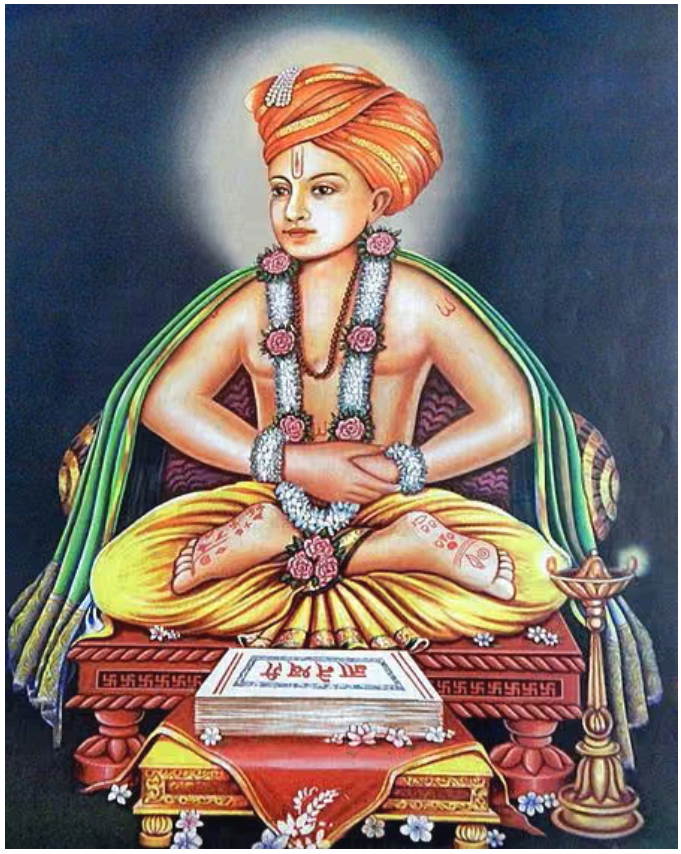
संतश्रेष्ठ ज्ञानेश्वर

संतश्रेष्ठ ज्ञानेश्वर महाराज पृष्ठ १३९

संतश्रेष्ठ ज्ञानेश्वर महाराज

इस वर्ष उनका 750 वां जन्म महोत्सव मनाया जा रहा है। इसी उपलक्ष्य में पसायदान का भावार्थ और महाराज के अलौकिक जीवन पट में झांकने का प्रयास करते हैं।

९ मिनट पठन · १ चित्र



संत ज्ञानेश्वर महाराज का चित्र — प्रभामंडल सहित आसन पर विराजमान, सम्मुख खुला ग्रंथ और दीपस्तंभ।

॥ माऊली ॥

७५० वा जन्मोत्सव

विश्व कल्याण का राजमार्ग : पसायदान

महाराष्ट्र के अहिल्यानगर जिले के नेवासा तालुका में सात सौ वर्ष पूर्व अद्‌भुत घटना घटी, वहाँ के अमृतवाहिनी भगवती प्रवरा नदी के तट पर भगवान मोहिनी राजा के श्रीक्षेत्र में, विशाल अतिसुन्दर महादेव मंदिर के प्रांगण में अपने सद्गुरु श्री निवृत्तिनाथ के कृपा प्रसाद से, श्रीज्ञानेश्वर महाराज के मुखारविन्द से गीता के भावार्थरुपी भाष्य स्वरूप, 9000 ओवियों की (मराठी काव्य शैली) ज्ञानेश्वरी प्रस्फुटित हुई। गीता का सन्देश केवल संस्कृत पण्डितो तक सीमित न रहे, वह सामान्य जनों के हृदय तक संक्रमित हो इस उद्देश्य से महाराज ने गीता गंगा को सरल, हृदयस्पर्शी प्राकृत भाषा में प्रवाहित किया।

सारे उपनिषदों का सार भगवदगीता में है। इस भगवद्गीता का अर्थ सहित विस्तार करते हुए मधुरता के साथ रचा गया दिव्य रसायन ही ज्ञानेश्वरी है। जिसके समापन मे उन्होंने

विश्वकल्याण हेतु, विश्वात्मक परमात्मा के चरणों में जिस मंगल प्रसाद की याचना की, वह सम्पूर्ण विश्व मे अद्वितीयप्रार्थना है – जिसे पसायदान के रूप में जाना जाता है।

पसाय का अर्थ है प्रसाद। प्रभु से यह प्रसाददान का वरदान पाकर सन्तुष्ट होकर महाराज ने 21 वर्ष की छोटीआयु में ही कार्तिक कृष्ण पक्ष त्रयोदशी, शके 1296 को पुणे के समीप इन्द्रायणी नदी के सान्निध्य में, आळंदी में संजीवन समाधि ली।

सात सौ पचास वर्ष पूर्व का समय, जब सम्पूर्ण भारतवर्ष विदेशी आक्रमणकारियों के चपेट में था, धर्मान्धता चरम सीमा पर थी। सामान्य जनमानस भारतीय सनातन संस्कृति के चरम सिद्धान्तों को आत्मसात करने में असमर्थ था। ऐसे विपरीत परिस्थिति से में पैठण के नजदीक आपेगाव में जन्मा एक तेजस्वी, तपपूर्ण, विरागी युवक तीर्थयात्रा के लिए माता पिता की आज्ञा से घर से चल पड़ा | जिसका नाम था विठ्ठलपंत कुलकर्णी, यात्रा करते हुए विठ्ठलपंत आळंदी पहुंचे ! वहाँ उनका निवास सिद्धोपंत कुलकर्णी के घर पर था।

एक रात स्वप्न में दोनों को भगवान शिवजी का दर्शन हुआ। सिद्धोपन्त की तपस्विनी उपवर कन्या रुक्मिणी का विवाह विठ्ठलपंत से करने की शिवजी ने आज्ञा दी। वैराग्य की प्रतिमूर्ति विठ्ठलपंत ने शिवजी की आज्ञा को सर आँखो रख कर विवाह तो किया किन्तु उनका मन ईश्वर के प्रति आकृष्ट था। संसार में मन न लगने के कारण उन्होंने सन्यास धर्म स्वीकार ने हेतु गृहस्थाश्रम का त्याग किया। काशी नगरी में माँ गंगा के

तट पर अलौकिक सद्गुरु से उन्होंने सन्यास दीक्षा ग्रहण की। सन्यास के पश्चात उनका नाम चैतन्य स्वामी हुआ।

पति के बार-बार सन्यास धर्म स्वीकारने की प्रार्थना के कारण, अनावधान से रुक्मिणी देवी ने अनुज्ञा तो दे दी, लेकिन उन्होंने पति के पुनरागमन के लिए तीव्र व्रत, अनुष्ठान और तपाचरण आरंभ किया। इसके परिणाम स्वरूप एक विलक्षण घटना घटी। श्री विठ्ठल पंत को सन्यास दीक्षा देने वाले सद्गुरू स्वामि श्री रामेश्वर के दर्शन के लिए निकले और चलते हुए आळंदी आ पहुँचे। रुक्मिणी ने जैसे ही इस तेजस्वी महापुरुष की चरणवन्दना की, उनके मुख से “पुत्रवती भव” यह आशीर्वचन निकले। रुक्मिणी देवी भावविभोर हो गई, आँखों से अश्रुप्रात होने लगा।

सारा वृत्तान्त पूछने पर स्वामिजी के ध्यान मे आया कि उनका शिष्य चैतन्य ही रुक्मिणी देवी के पति हैं। वे तुरंत काशी लौटे और विठ्ठलपंत से कहा, “मेरे मुख से प्रभु के आशीर्वचन निकले हैं वे सत्य ही होंगे, त्वरीत गृहस्थाश्रम स्वीकार करो।” गुरु आज्ञा लेकर विठ्ठलपंत लौटे, रुक्मणि का पत्नी रूप में स्वीकार किया। तात्कालिक समाज के धर्म मार्तण्डों को यह मान्य नहीं हुआ। उन्हें समाज से बहिष्कृत किया गया विठ्ठलपंत – रुक्मणि के दिव्य तपःपूत गृहस्थाश्रम के आचरण के फल स्वरूप उनकी कोख से निवृत्ति, ज्ञानदेव, सोपान और मुक्ताई इन चार अलौकिक दिव्य बालकों ने जन्म लिया।

निवृत्तिनाथ शिवजी के, ज्ञानदेव भगवान विष्णु के, सोपानदेव ब्रह्माजी के और मुक्ताई आदिमाया की अवतार थे। ज्ञानेश्वर महाराज का जन्म तो जन्माष्टमी के दिन कृष्ण जन्म के समय मध्यरात्रि में ही हुआ है।

सन्न्यासी के पुत्र इस रूप मे संबोधित करते हुए समाज की घोर अवहेलना, अपमान, अत्याचार, उपहास का सामना इन दिव्य बालकों को करना पड़ा। पुत्रों के उपनयन संस्कार के लिए विठ्ठलपंत ने धर्ममार्तंडों का अनुनय किया। उन्हे देहान्त प्रायश्चित्त की सजा सुनाई गई। पुत्रों के कल्याण हेतु माता-पिता ने अत्यंत व्यथित अंतःकरण से प्रयाग में अपने देह का गंगार्पण किया। उस समय बड़े पुत्र निवृत्ति की अवस्था केवल दस वर्ष की थी।

माता-पिता के अचानक निर्वाण के कारण ज्ञानदेव, सोपान और मुक्ताई के हृदय विदीर्ण हो गए। लेकिन निवृत्तिनाथ जिन्हे 8 वर्ष की आयु में सद्गुरु गहिनीनाथ से त्र्यबकेश्वर में नाथ सम्प्रदाय की दीक्षा प्राप्त हुई थी। उन्होंने अपने भाईयों को सम्हाला। ज्ञानदेव को प्रथम अनुग्रहित किया। ज्येष्ठ भ्राता ही सद्गुरु प्राप्त हुए। उनके कृपा प्रसाद से ज्ञानदेव आत्मानन्द की दिव्य अनुभूति प्राप्त हुई। इसी आन्मानन्द के अमृत वर्षा उन्होंने ज्ञानेश्वरी के माध्यम से अपने श्रोताओं पर बरसाई। वे कहते हैं –

आर्ताचेनि वोरसे, गीतार्थन ग्रन्थन मिसे | वरिषला झान्तरसे, तो हा ग्रन्थु | |

ज्ञानेश्वरी के पदों से शान्त रस प्रवाहित होता है। उसके पठण से मन की चञ्चलता नष्ट होकर एकाग्रता बढ़ती है। उसकी विलक्षणता ये है कि सामाज के किये अत्याचारों की एक भी नकारात्मक प्रतिक्रिया ज्ञानेश्वरी में नहीं है।

समाज ने विष रूप हलाहल दिया, इस नीलकण्ठ ने वह केवल पचाया ही नहीं उसे ज्ञानामृत मे परिणित कर श्रोताओं के मन को प्रशान्ती की अनुभूति दी और समापन में विश्व कल्याण हेतु, विश्वात्मक परमात्मा के चरणों मे विश्व मांगल्य के लिए अद्वितीय अलौकिक प्रसाद दान की याचना की – पसायदान या प्रसाद दान के रूप में

आता विश्वात्मके देवे, येणे वाग्यज्ञे तोषावे। तोषोनि मज द्यावे पसायदान हे।।

पसायदान

आतां विश्वात्मके देवें, येणे वाग्यज्ञे तोषावें,

तोषोनि मज द्यावे, पसायदान हे ||1||

हे विश्वात्मक परमेश्वर आप ही के प्रेरणा से, कृपा से, संपन्न हुए मेरे इस वाग्यज्ञ से संतुष्ट होकर आप मुझे यह प्रसाद रुपी दान दीजिए।

जे खळांचि व्यंकटी सांडो, तया सत्कर्मी रती वाढो,

भूतां परस्परे पडो, मैत्र जीवांचे ||2||

सबसे पहले दुष्टों पर कृपा कर दो उनकी दुष्टता नष्ट हो, ऐसी प्रेरणा मिले कि वो सत्कर्म करने लग जाये

संसार के सारे लोगों का एक दुसरों के साथ परस्पर खूब प्रेम हो,मैत्र बढो।

दुरितांचे तिमिर जावो, विश्व स्वधर्म सूर्ये पाहो,

जो जे वांछील तो तें लाहो, प्राणिजात ||3||

पाप का अंधकार समाप्त हो जाये, स्वधर्म का सूर्योदय हो कर के लोगों की दृष्टि साफ हो जाये, उन्हे हमें क्या करना चाहिए वो साफ दिखे, सबको वो वस्तू मिले जिसे वो चाहे।

वर्षत सकळ मंडळी, ईश्वरनिष्ठांची मांदियाळी,

अनवरत भूमंडळी, भेटतु भूता ||4||

जिनके आचार, उच्चार व विचार से सभी प्रकार की मंगलता बरसती है ऐसे ईश्वरनिष्ठ श्रेष्ठ श्रद्धावान,भूमंडल पर सभी जीवों से निरंतर मिलते रहे। संसार के लोगों को सत्संग प्राप्त हो जाये।जीवन का कल्याण संत के संग हो जाए।

चला कल्पतरूंचे आरव,चेतना चिंतामणींचे गांव,

बोलती जे अर्णव, पीयूषांचे ||5||

ऐसे संत अत्यंत बडी संख्या मे संसार को प्राप्त हो, जो कल्पतरू के उद्यान के समान हो।

(अर्थात कल्पवृक्ष यह हर एक इच्छा को पूरा करने वाला वृक्ष माना जाता है)

ये चेतना चिंतामणि के गाव हो, मानव जिस वस्तूका चिंतन करता है उसे देने वाले रत्न को चिंतामणी कहते है। मानव द्वारा चिंतन की गई उचित वस्तूओं को ही प्रदान करते है।

बोलने लगे तो मानो ऐसा बोल दे की भक्ति रूपी अमृत के सागर अपने आप प्रकट हो।

चन्द्रमें जे अलांछन, मार्तण्ड जे तापहीन,

ते सर्वाही सदा सज्जन, सोयरे होतु ||6||

ऐसे संत मिले जो चंद्रमा समान शितल हो पर चंद्रमा जैसे कलंक नाही हो,सूर्य जैसे तेजस्वी हो पर सूर्य मे जैसे ताप है वैसे ताप न हो। ये किसी का दाह न करे,

किंबहुना सर्व सुखी, पूर्ण होवोनि तिहीं लोकी,

भजिजो आदिपुरुषीं, अखण्डित ||7||

संत संगतीसे हर जीवमात्र को तीनो लोक के सारे सुख प्राप्त हो। उनके संस्कार से आपका भजन करने की प्रवृत्ती निर्माण हो सभी के भीतर आपकी भक्ति सुदृढ हो जाये, वो अखंड रहे।

आणि ग्रंथोपजिवीये, विशेषीं लोकीं इयें,

दृष्टादृष्ट विजये, हो आवें जी ||8||

जिन लोगो ने इस ग्रंथ को अपना जीवन धन बताया उन लोगो को इस संसार मे और इसके पश्चात परलोक मे भी दिव्य गती, सद्गती, शांती प्राप्त होवो विजय हो करके व इस संसार से चले और सीधे परमात्मा के पास जाकर के जीवन की कृतार्थता का अनुभव दे

येथ म्हणे श्री विश्वेश्वरावो, हा होईल दान पसावो,

येणे वरें ज्ञानदेवो, सुखिया झाला ||9||

समस्त देवी देवता ओके पक्षात स्वरूप निवृत्तीनाथ महाराज सद्गुरु के रूप में बैठे बैठे इन सारी बातों को सुन रहे थे

जैसे ही महाराज की प्रार्थना पुरी हुई और हात जोड के उन्होंने निवृत्तीनाथ महाराज की ओर देखा,तो गुरुवर्य निवृत्तीनाथ जीने हात उठा कर के कहा तथास्तु ऐसा ही होगा

यह सुनकर संत श्रेष्ठ श्री ज्ञानेश्वर जी महाराज परम आनंदित हो गये

पसायदान(हिन्दी अनुवाद)

विश्वात्मक परमात्मा, अब इस वाग्यज्ञ से राजी हो

प्रसन्न हो कर मुझे प्रभो बस यह वरदान प्रसादी दो।।१।।

दुष्टों की वक्रता छूटवे, सत्कर्मो मे निरत रहे

जीव मात्र मे सबसे सबकी अटूट मैत्री हो जाये।।२।।

अंधकार पापों का मिटकर स्वधर्म रवी हो जाये उनित

प्राणी मात्र को मिले वही जो उन्हे रहा हो चिर वांछित।।३।।

वर्षा समविध मंगलता की करने वाले संतजन

भू मंडल पर सदैव उनका सबसे मंगल हो मिलन।।४।।

सचल कल्पतरू के उपवन जो बोल रहे अमृतसागर

सजीव चिंतामणी समूह के मानो बस गये नगर।।५।।

लांछन रहित चंद्रमा मानो ताप रहित रवी अथवा जो

ऐसे सज्जन मिले सभी को बन समधी सम आप्त हो।।६।।

तीन्ही लोकों के वासी हो सकल सुखों के पूर्ण सदा

आधी देव को भजे निरंतर प्रेम भाव से सदा।।७।।

और विशेष रूप से जिनको जीवनधन यह ग्रंथ रहे

इस परलोक कही भी उनके विजय सर्वदा साथ रहे।।८।।

यह सुनकर विश्वेश्वर बोले यही मिलेगा प्रसाद दान

पाकर यह वर ज्ञानेश्वर भी हुए पूर्ण आनंद मगन।।९।।

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2025-06/sntshresstth-jnyaaneshvr/sntshresstth-jnyaaneshvr-mhaaraaj/

09

रचनात्मक पेज

रामायण प्रश्नावली पृष्ठ १४५

भगवद्गीता प्रश्नावली: पृष्ठ १४६

Drag the words into boxes – 1 पृष्ठ १४७

Drag the words into boxes – 2 पृष्ठ १४८

Find in Image – 1 पृष्ठ १४९

Identify Exams conducted by LearnGeeta पृष्ठ १५०

Search Words – 1 पृष्ठ १५१

Search Words – 2 पृष्ठ १५२

०९ रचनात्मक पेज

रामायण प्रश्नावली

यह एक इंटरैक्टिव गतिविधि है — रामायण प्रश्नावली। इसे खेलने के लिए नीचे का बटन दबाएँ।

१ मिनट पठन

गतिविधि खोलें ↗

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/rcnaatmk-pej/raamaaynn-prshnaavlii/

०९ रचनात्मक पेज

भगवद्गीता प्रश्नावली:

यह एक इंटरैक्टिव गतिविधि है — भगवद्गीता प्रश्नावली:। इसे खेलने के लिए नीचे का बटन दबाएँ।

१ मिनट पठन

गतिविधि खोलें ↗

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2025-06/rcnaatmk-pej/bhgvdgiitaa-prshnaavlii/

०९ रचनात्मक पेज

Drag the words into boxes – 1

यह एक इंटरैक्टिव गतिविधि है — Drag the words into boxes – 1। इसे खेलने के लिए नीचे का बटन दबाएँ।

१ मिनट पठन

गतिविधि खोलें ↗

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/rcnaatmk-pej/drag-the-words-into-boxes-1/

०९ रचनात्मक पेज

Drag the words into boxes – 2

यह एक इंटरैक्टिव गतिविधि है — Drag the words into boxes – 2। इसे खेलने के लिए नीचे का बटन दबाएँ।

१ मिनट पठन

गतिविधि खोलें ↗

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2025-06/rcnaatmk-pej/drag-the-words-into-boxes-2/

०९ रचनात्मक पेज

Find in Image – 1

यह एक इंटरैक्टिव गतिविधि है — Find in Image – 1। इसे खेलने के लिए नीचे का बटन दबाएँ।

१ मिनट पठन

गतिविधि खोलें ↗

यह रचना वेब पर पढ़ें

वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ

geeta-maitree.pages.dev/2025-06/rcnaatmk-pej/find-in-image-1/

०९ रचनात्मक पेज

Identify Exams conducted by LearnGeeta

यह एक इंटरैक्टिव गतिविधि है — Identify Exams conducted by LearnGeeta। इसे खेलने के लिए नीचे का बटन दबाएँ।

१ मिनट पठन

गतिविधि खोलें ↗

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/rcnaatmk-pej/identify-exams-conducted-by-learngeeta/

०९ रचनात्मक पेज

Search Words – 1

यह एक इंटरैक्टिव गतिविधि है — Search Words – 1। इसे खेलने के लिए नीचे का बटन दबाएँ।

१ मिनट पठन

गतिविधि खोलें ↗

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/rcnaatmk-pej/search-words-1/

०९ रचनात्मक पेज

Search Words – 2

यह एक इंटरैक्टिव गतिविधि है — Search Words – 2। इसे खेलने के लिए नीचे का बटन दबाएँ।

१ मिनट पठन

गतिविधि खोलें ↗

यह रचना वेब पर पढ़ें
वीडियो, सभी चित्र और अंक की अन्य रचनाएँ
geeta-maitree.pages.dev/2025-06/rcnaatmk-pej/search-words-2/